ओ३म्

जम्मू कश्मीर राज्य में

आर्य समाज

का

इतिहास

लेखक:- श्री हरिश्चन्द्र विद्यार्थी
B. A. (Hons), B. T.

प्रकाशक:- आर्य प्रतिनिधि सभा
जम्मू व कश्मीर राज्य

दयानन्दाब्द; 153, सम्वत 2035
सृष्टि सम्बत 1974929079 सन् 1978

प्रस्तावना

आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू काश्मीर व लद्दाख के तत्वाधवान में स. 1947 ई. के अन्त में आर्य समाज शताब्दी महासम्मेलन समारोह पूर्वक मनाने के लिये आर्य समाज मन्दिर दयानन्द मार्ग में जब एक विशाल बैठक बुलाई गई तो उस समय आर्य विद्वानों ने यह वचन दिया था, कि सम्मेलन के शीघ्र बाद इस प्रदेश में किये गये आर्य समाज के कार्य का इतिहास लिखकर आर्य जनता को भेट किया जायेगा। तत् पश्चात प्रान्त के आर्य समाजयों का सम्मेलन लूथरा एवेन्यू में बिचार सम्मेलन के नाम पर किया गया। इस में एक ही प्रस्ताव पास किया गया कि जम्मू कश्मीर राज्य में आर्य समाज का इतिहास तयार करके उसे प्रकाशित किया जाये। वह सम्मेलन तो प्रभु-कृपा से उत्साही आर्य भाई बहनों के सहयोग से बहुत ही सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। परन्तु इतने थोड़े समय में इतिहास लिखने का कार्य न हो सका।

इस शुभ कार्य को पूर्ण करने के लिये इतिहास के विद्वान श्री पण्डित हरीश्चन्द्र जी विद्यार्थी वैदिक मिश्नरी बी, ए. बी. टी. की सेवाये सम्मेलन से पूर्वक ही प्राप्त की जाचुकी थी श्री विद्यार्थी जी ने इतने विस्तृत क्षेत्र में फैले हुए नगरों उपनगरों व ग्रामों में घूम-२ कर एतद्विषयक सामग्री को इकट्ठा किया। उन्हों ने पजाब आर्य प्रतिनिधि गुरुदत्त भवन सभा प्रादेशक सभा कार्यालय दिल्ली दयानन्द सालवेशन मिशन हश्यार पुर व मेघउद्धार शुद्धि सभा का पञ्जाब के वतमान कार्यालय गुरुदत्त भवन जालन्धर में जा कर सभा का रिकार्ड पढ़ कर यह इतिहास लिखा।

आर्य समाजों के कार्य का इतिहास पढ़ा इसे लिखने के बाद आर्य विद्वानों व आर्य समाजों को पुनः पढ़ने के लिये भेजा गया। परन्तु प्रकाशन में ढील ही रही। यह मन्दगति एवं शिथिलता मुझे खटकती रही। उस वर्ष सभा प्रधान के नाते मुझे व सभा मन्त्री के नाते सर्व श्री पण्डित विद्यामानु जी आर्य जनता को दिये गये वचन निभाने का सौभाग्य न मिला।

३ प्रभु की अपार दया से श्री चन्द्रप्रकाश जी गुप्ता भूतपूर्व मन्त्री व कोषाध्यक्ष आर्य प्रतिनिधि सभा (असिस्टेण्ट डवेलपमैंट कमिश्नर) पोस्ट से वृत हो कर जम्मू में वापस आए तो इस कार्य को पूर्ण करने के लिये उनसे पुन: निवेदन किया गया। उनके सतत प्रयास से यह पुस्तक तैयार हो सकी है। इस सफलता के लिये श्री विद्यार्थी जी का व इनका आभारी हूं। वास्तव में इतिहास किसी राष्ट्र व जाति की बहुमूल्य सम्पत्ति है जो दीन हीन जातियों में संजीवनी का काम करती है।

४ साथ ही मैं प्रात: स्मरणीय शहीद १. महाशय रामचन्द्र जी २ पुंछ के शहीद मास्टर जगत राम जी, ३. कठुआ के शहीद श्री विष्णु दत्त जी मन्त्री आर्य समाज कठुआ, ४. लद्दाख में हुए शहीद आर्य समाज के मिशनरी श्री रमन एतो वदन व अन्य कर्मवीरों की आत्माओं को प्रणाम करता हूं जो अछूत-उद्धार व वैदिक धर्म-प्रचार करते हुए रूढ़िवादियों व मजहबी मुसलिमों के हाथों शहीद हुए और आर्य जाती के इतिहास में ज्योति स्तम्भ का काम करते रहेंगे। छपवाई में हुई भूलों के लिए क्षमा याचक हूं। इस समस्त पुस्तक के लिखने के लिए विद्यार्थी जी उत्तरदायी हैं। इस पुस्तक के प्रकाशनार्थ दान दाताओं का परिचय व धन्यवाद।

1 श्री बैज नाथ जी गुप्ता आजमपुरा जालन्धर	1000/00 रुपये।
2 श्री चतुर्भुज जी मित्तल जालन्धर	1000/00 रुपये।
3 श्री साहन लाल जी आजमपुरा जालन्धर	00/00 रुपये।

आप का विनीत सेवक
(सत्यानन्द स्वामी)

दो शब्द

जम्मू कशमीर राज्य में आर्य समाज का इतिहास नामक ओजपूर्ण ग्रन्थ को मैं ने आद्योपान्त पढ़ लिया है इस ग्रन्थ में आर्य समाज तथा जम्मू कशमीर के पुराने इतिहास की चर्चा करके माननीय हरिशचन्द्र जी विद्यार्थी ने आने वाली पीढ़ी के लिये बहुत उपयोगी काम किया है। यह छोटा सा ग्रन्थ केवल आर्य समाज का ही इतिहास नही है। अपितु महाराजा गुलाब सिंह ने अंग्रेजी राज्य काल में जिस प्रकार इस रयासत को लिया और जिस वीरता से लद्दाख तक के क्षेत्र पर कब्जा करके चीन को हराया, ऐतिहासिक तथ्य से परिपूर्ण है।

श्री विद्यार्थी जी का यह तथ्य बड़ा मुल्यवान है कि लद्दाख जो पहले तिब्बत का हिस्सा था महाराजा गुलाब सिंह ने अपने बाहुबल से जीत कर जम्मू कशमीर का हिस्सा बनाया।

इस ग्रन्थ में आर्य समाज के कार्यकर्ताओं के अनुपम बलिदान, छूत छात के निवारण करने के बड़े से बड़े कष्टों को सहन करने की गाथा एवं महाराजा रणवीर सिंह द्वारा युगपर्वर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती को कशमीर में बुलाए जाने का विचार और पौराणिक पंडितों द्वारा विरोध तथा रणवीर प्रायशिचत पद्धति का निर्माण जैसी अनेक महत्वपूर्ण घटनाओं का उल्लेख करके इस ग्रन्थ के महत्व को बहुत बढ़ा दिया है। यदि इस समय के पौराणिक पंडितो ने महर्षि दयानन्द के काशमीर में पदार्पण के महाराज रणवीर सिंह जी के प्रस्ताव का विरोध ना किया होता तो निशच्य ही आज इस राज्य में हिन्दू जनता की यह दुर्दशा न होती जो कि होती जा रही है। नव मुस्लिम राजपूत उस समय लाखो की संख्या में शुद्ध होने को तयार थे और महाराजा रणवीर सिंह इस काम के किये बहुत उत्सक थे। किन्तु पंडितो के विद्रोह ने महर्षि दयानन्द के आगमन को रोक कर राष्ट्र के साथ विश्वास-घात किया जिसका परिणाम आज रयासत के हिन्दू भोग रहे हैं।

अमेरिका के प्रसिद्ध पादरी जान्सन की कश्मीर राज्य के पुरोहितों को शास्त्रार्थ की चनौती और महाराजा प्रताप सिंह द्वारा आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान पं० गणपति शर्मा को जानसन से शास्त्रार्थ करने का आह्वान और स्वयं उस शास्त्रार्थ में महाराजा प्रताप सिंह और और राजा अमर सिंह की उपस्थिति और ईसाई पादरी की जबरदस्त हार की चर्चा करके पंडित हरिशचन्द्र जी ने आर्य समाज के उज्जवल इतिहास को जन सामान्य के सामने लाने का बडा ही उपयोगी प्रयास किया है।

इसके साथ ही सन १९४७ के पाकिस्तानी आक्रमण अखनूर, राजौरी आदि सीमावर्ती क्षेत्रो पर पाकिस्तानी दरिन्दो द्वारा किये गए अत्याचारों और आर्य वीरो वीरांगणओं की बलिदान गाथा को लिखकर विद्यार्थी जी ने आर्य समाज की बड़ी सेवा की है।

यह लघु ग्रन्थ केवल जम्मू कश्मीर में आर्य समाज का इतिहास ही नही अपितु अंग्रेजी शासन के पूर्व जिन हिन्दू राजाओ ने उन भिन्न पहाडो क्षेत्रों पर राज्य किया था उनकी भी चर्चा से परिपूर्ण हो कर लेखक के अनुपम अनुसंधानकर्ता होने का परिचय देता है

मुझे पूर्ण विश्वास है कि जम्मू कश्मीर के हर घर में यह पुस्तक पहुचेगी जिस जिस से कि आर्य समाज को ही नहीं अपितु राष्ट्रीय विचार धारा को भी बल मिलेगा।

मैं विद्यार्थी जी के इस खोजपूर्ण ग्रन्थ पर उनके परिश्रम के लिये उन्हें धन्यवाद देता हूं। और ग्रन्थ की सफलता की कामना करता हूं

राम गोपाल शालवाले
प्रधान
सार्व देशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली
(भूत पूर्व संसद - सदस्य)

दिनांक २८.७.७८

ओ३म्

महर्षि दयानन्द सरस्वती के कार्य क्षेत्र में अवतीरण होने से पूर्व भारतीय समाज एव राष्ट्र राजनैतिक तथा धार्मिक दृष्टियो से विभिन्न समूहों में विभक्त था। जहां तहां ऋषि राज जा पाए वहां वहाँ जनता एकता क सूत्र में पिरोई जा सकी काश्मीर और दक्षिण भारत के कुछ स्थानों पर ऋषि वर नहीं जा सके। इन्ही भूभागो को भारत का अङ्ग बनाए रखना स्वयं में एक समस्या बन कर सदा सामने आती है। ऋषी दयानन्द ने लेखनी एव वानी द्वारा राष्ट्र को सुसंगठित करने का अविस्मरणीय कार्य किया है।

आर्य जनों ने सन १८९१ ई० में आर्य समाज दयानन्द मार्ग जम्मू की स्थापना से लेकर आज तक इस क्षेत्र में वैदिक धर्म का प्रचार करने में स्तुतिर्ण प्रयत्न किया है। श्री हरिशचन्द्र जी विद्यार्थी समूचे आर्य जगत की बधाई एवं धन्यवाद के अधिकारी हैं कि इन्होंने इस वृद्धावस्था में भी स्थान स्थान घूमकर जम्मू कश्मीर राज्य में आर्य समाज के इतिहास के लिए सामग्री एकत्रित करके एक भारी कमी की पूर्ति की है। आर्य समाज के कार्यकर्ताओं के जीवन से हमें प्रेरणा मिलेगी। साथ ही उनके स्मरण से हम कृतघ्नता के पाप से बचेंगे आर्य समाज को प्रचार का इतिहास जन सधारण के अथक प्रयत्नों का इतिहास है।

गांव गांव में ओ३म् पताका राजा महाराजाओ के धन दौलत से नहीं अपितु दयानन्द के सामान्य सेवको ने लहराई है। अतः इस प्रकार के इतिहास के लिए सामग्री खोजना बहुत ही कठिन कार्य है। यदि यह कार्य इन दिनो में सम्पन्न न हो पाता तो धीरे धीरे यह प्राप्य सामग्री भी नष्ट हो जाती अतः श्री हरिश्चन्द्र जी विद्यार्थी के प्रती आने वाली पिढ़ियां इस कृति के लि ऋणी रहेगी।

प्रस्तुत प्रस्तुत आठ अध्यायो पर आधारित है। लेखनी सशक्त है। भाषा

सरल तथा प्रवाह पूर्ण है। मुझे आशा है आप जगत में इस ग्रन्थ का पूरा स्वागत होगा।

राम प्रकाश
एम. एस. सी (आनर्स)
केमिस्ट्री विभाग
पंजाब विश्व विद्यालय चंडीगढ़

ऋषिनिर्वाणोत्सव
मार्च १९७८ ई०

कश्यप-मेर

कश्मीर शब्द कश्यप - मेर से बना है। जिसका अर्थ है कश्यप ऋषी का स्थान वस्तुत: तिब्बत से ले कर कश्मीर तक की पवित्र भूमि आर्यो की जन्मभूमि रही है। यही से आर्य लोग ईरान आदि स्थानो पर गए। महाभारत में लिखा है :-

हिमालयभिधानो ऽयं ख्यातो लोकेषु पावन:
अर्धयोजन विस्तार: पंचयोजनमायत:।
परिमण्ढलयोर्मध्यं मेकरुतत्तम पर्वत: ।
तत: सर्वा समुत्पन्ना वृतयो दिव्रसत्तम ।।
एरावती वितस्ता च विशाला देविका कुह ।
प्रसूतिर्यत्र विप्राणाम श्रयते भरतर्षम ।।

हिमालय की जिन नदियों के नाम यहां गिनाए गए हैं वे नदियां प्राय: इस इलाके में बहती हैं वितस्ता झेलम तो आज भी श्रीनगर के बीच में वह रही है। हिमालय के इन स्थानो पर विप्रों की उत्पती बतलाई गयी है। काश्मीर की पवित्र भूमि भी आर्यों की जन्मभूमी रही है। यहां पर गोपालन की समता, फलों की अधीकता सस्कृत के शब्दों की आज भी काश्मीरी भाषा में बहुल्यता इसी तथ्य को सिद्ध करते हैं। काश्मीरी प्राचीन काल में बेदाध्ययन को सर्वाधिक महत्व देते थे। आज भी काश्मीरी पंडित उपनयन संस्कार को बड़े ही समारोह पूर्वक करते हैं।

कुछ समय यहां वैदिक शिवागमो का भी प्रभाव रहा। बाद में साम्प्रदायिक शैवागमो ने नवीन शैव धर्म को जन्म दिया। यही काश्मीर शैव दर्शन है जिसे आजकल प्रत्यमिज्ञा दर्शन कहा जाता है। इसी से शक्ति सम्प्रदाय भी उत्पन्न हो गया। समय के चक्र के अनुसार यहाँ इस्लाम का भी प्रवेश हुआ। काश्मीर कुछ समय तक मुगल शासकों की विलासता की भूमी बनी रही। तदानंतर यहां के हिन्दू राजा पौराणीक धर्म से अधिक प्रभावित रहे। इस प्रांत में आर्य समाज का प्रवेश भी ऐतिहासिक घटना है। यहां के महाराजा धर्म भीरु तथा पौराणीक

पंडितों के चक्र में पड़ रहे। नहीं तो यह कैसी विडम्बना है कि महाराज के बुलाने पर महर्षि दयानन्द यहां आ रहे थे और पंडितों के विरोध करने पर यहां के महाराज चुप हो गए। परन्तु सचाई को कैसे रोका जाता। आर्य समाज का प्रवेश यहां हुआ और यहां के अंतिम महाराजा हरिसिंह ने आर्य समाज पर ही अपना विश्वास प्रकट किया तथा डी० ए० वी० संस्था के नाम बहुत ही सम्पत्ती लिख दी।

इस प्रान्त में लाहौर केन्द्र से वैदिक धर्म का प्रचार पहाड़ों की ऊंची नीची चोटियों तक होता रहा। परन्तु पाकिस्तान बनने के बाद इस प्रान्त पर भी प्रभाव पड़ा। आज तो यहां आर्य प्रतिनिधि सभा सक्रिय कार्य कर रही है सभा ने यह भी निश्चय किया था कि इस प्रान्त में आर्य समाज का इतिहास लिखा जाना चाहिये। इस कार्य के लिये अनुभवी और ज्यो वृद्ध इतिहास बेटा श्री हरिशचन्द्र विद्यार्थी जी को चुना गया। उन्होंने बड़े ही परिश्रम से तथा योग्यता से इस इतिहास को लिखा है। मैं श्री हरिशचन्द्र जी विद्यार्थी को इस कार्य के लिए बधाई देता हूं। तथा आर्य प्रतिनिधि सभा की तरफ से हार्दिक आभार और कृतज्ञता प्रकट करता हूं। मुझे प्रसन्नता है कि विद्यार्थी जी का यह भागीरथ प्रयत्न सफल हुआ है। सभी अधिक से अधिक इस इतिहास को पढ़ कर आर्य समाज के गौरव का ज्ञान प्राप्त करेंगे ऐसी पूर्ण आशा है।

योगेन्द्र कुमार शास्त्री
प्रधान
आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू व कश्मीर
9. 8. 1978.

चीन
जम्मू व काश्मीर
गिलगित
चिलास
स्कर्दू
खपलू
टोटी
चोबत
किगिल
सिंधुनदी
लेह
लद्दाख
सिन्धुनदी
श्रीनगर
बडगाम
पहलगाम
अनन्तनाग
कुलगाम
पुंछ
मंडी
कोटली
राजौरी
रियासी
मीरपुर
नौशहरा
आखनूर
जम्मू
रामनगर
डोडा
किश्तवार
चीनी
उधमपुर
भद्रवाह
चीर
सुल्क
हिमाचल प्रदेश
पाकिस्तान

रज्य की भौगोलिक स्थिति

जम्मू - काश्मीर राज्य भारत के उत्तर - पश्चिम कोण में स्थित है । यह भारत के प्रदेशों में से एक प्रदेश है । इसका क्षेत्रफल लगभग ८४ सहस्र वर्गमील है । यह राज्य तीन भागों में बंटा है :- १ जम्मू, २ काश्मीर और ३ लद्दाख ।

जम्मू का दक्षिणी भाग, जो पंजाब के स्यालकोट ज़िला से मिलता है, मैदानी है। शेष सारा भाग पर्वतमालाओं से घिरा है । ये पर्वत हिमालय की शिवालिक शाखाओं के भाग हैं ।

काश्मीर की घाटी हिमालय पर्वत की दो शाखाओं के मध्य का मैदान है । अति प्राचीनकाल में यह एक बहुत बड़ा जलाशय था । इसका नाम सतीसर था । यह जल जेहलम नदी द्वारा बह गया और एक विशाल मैदान बन गया । यह संसार के सुन्दरतम भागों में एक गिना जाता है ।

लद्दाख प्रायः पर्वतीय है । पर्वतों की ओट में होने तथा समुद्रतल से काफ़ी ऊंचा होने के कारण यहां वर्षा कम होती है ।

राजनैतिक इकाई का रूप

इन तीन भागों को एक राजनैतिक इकाई का रूप इस राज्य के संस्थापक महाराजा गुलाबसिंह ने दिया था । वही रूप अब तक क़ायम है । जम्मू प्रांत कई छोटे - छोटे राज्यों में बंटा था । इन सबको महाराजा गुलाबसिंह ने एकत्रित कर जम्मू राज्य की स्थापना की ।

काश्मीर की घाटी प्राचीनतम काल से लेकर १३२४ ई० तक हिन्दूराज्य द्वारा शासित रही । १३२४ से १८१९ ई० तक यह मुसलमानों के अधीन रही । इस समय मुगलों तथा पठानों का राज्य रहा । पठान-राज्य का अन्त महाराजा रणजीत सिंह ने १८१९ में किया और सिक्ख - राज्य

की समाप्ति पर सन् १८४६ में यह भाग भी महाराजा गुलाबसिंह के अधीन हो गया ।

लद्दाख तिब्बत का भाग था । इसे महाराजा गुलाबसिंह के एक वीर जरनैल ज़ोरावरसिंह ने जीता और इसी विजय में अपने प्राणों की बलि दी ।

गत शताब्दी में यहां डोगरा राज्य रहा । इनमें महाराजा गुलाबसिंह, महाराजा रणबीरसिंह, महाराजा प्रतापसिंह और महाराजा हरिसिंह राजा हुए । भारत के अंग्रेज़ों से मुक्त होने पर यह राज्य भी भारत में सम्मिलित हो गया और व्यक्तिगत शासन के स्थान पर यहां प्रजातन्त्र राज्य की स्थापना हुई ।

इस राज्य से आर्यसमाज का सम्बन्ध गत शताब्दी में महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के जीवनकाल में ही स्थापित हुवा । उस समय यहां महाराजा रणवीरसिंह का राज्य था । इस राज्य में आर्यसमाजों की स्थापना का आरम्भ गत शताब्दी के अन्तिम दशक में महाराजा प्रतापसिंह के समय में हुवा ।

भारत में आर्यसमाज का उदयकाल

भारत में आर्यसमाज की स्थापना सन् १८७५, चैत्रमास के प्रथम नवरात्र के दिन बम्बई नगर में हुई । इसके प्रवर्तक और संस्थापक थे महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती इनका जीवनकाल सन् १८२४ से १८८३ ई० तक अर्थात् लगभग सारी १९ शताब्दी थी ।

महर्षि दयानन्द का संक्षिप्त जीवन वृत्तान्त

महर्षि दयानन्द जी का जन्म सन् १८२४ (सम्वत् १८८१) में मोरवी राज्य कच्छ काठियावाड़ के टंकारा ग्राम में हुआ । उनके पिता का नाम कर्षण जी और माता का नाम यशोदाबाई था । इनका जन्म-नाम मूल जी दयाराम था इनका एक भाई और दो बहिनें थीं । जीवन का प्रथम भाग २०-२१ वर्ष का था । इस काल में उनका शिवमन्दिर में शिवरात्रि का व्रत, उनकी छोटी बहन और चाचा की मृत्यु के दृश्य, उनके आगामी पठन पर रुकावट, उनकी ज्ञान पिपासा और मृत्यु पर विजय

प्राप्त करने के लिए योगाभ्यास की उत्कट इच्छा आदि सम्मिलित हैं ।

२२ वर्ष की आयु में आपने अपने घर को त्याग दिया और दो वर्ष पश्चात् संन्यास ग्रहण कर 'दयानन्द सरस्वती' बन गए । आगामी ११ - १२ वर्ष आपने योगाभ्यास के शिक्षण के प्रयत्न में व्यतीत किए । इस काल में आपने भारत के बहुत से भागों का भ्रमण किया । हिमालय की गुफाओं, जंगलों, चोटियों तथा तीर्थस्थानों की यात्रा की । यह समय सन् १८५७ में समाप्त होता है ।

यह समय भारत के प्रथम स्वतन्त्रता आन्दोलन, उसके फैलाव, अंग्रेजों से युद्ध और अन्त में भारतीय वीरों के कष्ट और यातनाओं के सहन का है । महर्षि दयानंद का सम्पर्क इस आन्दोलन के सभी कर्णधारों से था । अतः १८५७ से १८६१ तक के चार वर्ष उनके अज्ञातवास के हैं। ये वर्ष महर्षि ने विन्ध्याचल के घने जंगलों, नर्मदा, ताप्ती के स्रोतस्थलों आदि में व्यतीत किए । सन् १८६१ से १८६७ तक का काल अपने-आप में बहुत महत्त्वपूर्ण है । इस काल में आपने ब्रह्मर्षि विरजानन्द जी से वेदविद्या और आर्षग्रन्थों का अध्ययन किया और उनकी इच्छानुसार अपना शेष जीवन वेदप्रचार और हिन्दू जाति के उत्थान और प्राचीन सभ्यता के प्रसार के लिए अर्पित कर दिया । १८८६ में आप हरिद्वार के कुम्भमेला में प्रचारार्थ पधारे और तत्पश्चात् शेष जीवन इसी प्रचार में लगा दिया । इस कार्य में आगामी ७ - ८ वर्ष लगाए । एकाकी, बिना धेला-पैसा, केवल अपने तपोबल और विद्याबलके सहारे कलकत्ता से बम्बई और पूना से रावलपिण्डी तक प्रचार कार्य किया ।

आर्यसमाज की स्थापना

सन् १८७४ में आपने आर्यसमाज की स्थापना की कि प्रचार का कार्य आपके पश्चात् जारी रखा जा सके । सर्वप्रथम आपने आर्यसमाज की स्थापना का प्रयत्न अहमदाबाद में किया । मगर वहां के प्रार्थनासमाजियों ने अपने समाज को आर्य-समाज न बनाया । यहां से महर्षि राजकोट गए और वहां के प्रार्थनासमाज के कार्य-कर्त्ताओं ने अपने समाज को आर्यसमाज में बदल दिया । मगर संस्था के रूप में नियमोपनियमों के साथ आर्यसमाज की स्थापना सन् १८७५ में चैत्र मास के प्रथम

नवरात्र के दिन बम्बई नगर में की गई। इन नियमों में थोड़ा बहुत परिवर्तन लाहौर में, समाज की स्थापना के समय, किया गया। यही नियम अब तक समाज के आधार हैं। सन् १८७४ से १८८३ तक के ८ वर्ष महर्षि ने आर्यसमाजों की स्थापना, वेदप्रचार, पाठशालाओं की स्थापना वेदभाष्य तथा व्याख्यानों और शास्त्रार्थों में व्यतीत किए।

सन् १८८३ में दीपावली के दिन आपका देहान्त अजमेर में हुआ। वेदप्रचार और आर्यसमाज केन्द्रों की स्थापना तथा संगठन का कार्य महर्षि के प्रशसकों और उस समय के आयनेताओं के कंधों पर आ पड़ा।

आर्यसमाज–स्थापना शताब्दी

आगामी वर्ष १९७५ आर्यसम ज की स्थापना का सौवां वर्ष है इस एक शती में आर्यसमाज ने क्या काम किया है, क्या करना है और उसे कैसे करना है? इसी के लिए समस्त आर्यजगत् में शताब्दी सम्मेलन किए जा रहे हैं। जम्मू-काश्मीर में भी आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू काश्मीर के तत्त्वावधान में इसकी एक कड़ी के रूप में 'प्रांतीय आर्यमहासम्मेलन' का आयोजन २९-३० नवम्बर व १ दिसम्बर १९७४ को जम्मू नगर मे किया उसी कार्य को लक्ष्य करके जम्मू काश्मीर में आर्यसमाजों की स्थापना, कार्य आदि का सक्षिप्त इतिहास तैयार करने का भी निश्चय किया गया।

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती का कार्य

महर्षि को आर्यसमाज की स्थापना के बाद कार्य के लिए केवल ८ वर्ष मिले। इस समय में एक विशेष संगठन के साथ-साथ साहित्य-लेखन व प्रकाशन, वेदभाष्य, भ्रमण करके स्थान-स्थान पर प्रचार का आयोजन तथा शास्त्रार्थ किए गए। यदि आर्यसमाज की स्थापना से पूव का समय भी साथ मिला लिया जाए तो हम १८६७ तक पहुंच जाते हैं जब महर्षि ने हरद्वार के कुम्भ पर अपने प्रचारकार्य को उग्ररूप दिया और दृढ़ निश्चय से इस कार्य में डट गए।

आर्यसमाजों की स्थापना

महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवनकाल में निम्नलिखित आर्यसमाजों की

स्थापना हो चुकी थी :-

बम्बई, पूना, लाहौर, अमृतसर, गुरदासपुर, फिरोज़पुर, रावलपिंडी, जेहलम, वज़ीराबाद गुजरांवाला, मुलतान, रुड़की, मेरठ, देहरादून, मुरादाबाद, बदायूं, शाहजहानपुर, कानपुर, दानापुर, काशी, लखनऊ, फर्रुखाबाद, मैनपुरी, आगरा, जयपुर, अजमेर, मसूदा ।

प्रांतानुसार बम्बई में २, पंजाब में ९, उत्तरप्रदेश में १३ और राजस्थान में ३ । इससे प्रकट है कि पंजाब की ९ आर्यसमाजों में से मुलतान को छोड़कर शेष ८ आर्यसमाजों की स्थिति जम्मू-काश्मीर के पास है । लाहौर और अमृतसर के तो रियासत के साथ व्यापारिक तथा सामाजिक सम्बन्ध अत्यन्त निकट थे । राजनैतिक सम्बन्ध भी इन नगरों का विशेष था । महाराजा गुलाबसिंह और उनके वंश के जीवन का बहुत बड़ा भाग इन नगरों में व्यतीत हुआ । इन नगरों के निवासियों के भी जम्मू तथा रियासत के अन्य नगरों से विशेष तथा विस्तृत सम्बन्ध थे ।

शेष समाजों में से रावलपिंडी, जेहलम, वज़ीराबाद, गुजरांवाला, गुरदासपुर तो रियासत की सीमा के साथ ही हैं । जम्मू से श्रीनगर आने-जाने के लिए भी वज़ीराबाद, गुजरात, जेहलम, रावलपिंडी के मार्ग ही अपनाए जाते थे । प्राय. रियासत के सभी नगरों से इन नगरों के निवासियों का सम्बन्ध था इसलिए रियासत का सम्पर्क आर्यसमाज के साथ आरम्भ से ही हो जाना स्वाभाविक था ।

साहित्यिक कार्य

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने जीवनकाल में विस्तृत साहित्य की रचना की । उनके निम्नलिखित ग्रन्थ हैं :-

(१) अनुभ्रमोच्छेदन, (२) अष्टाध्यायीभाष्य, (३) आत्मचरित, (४) आर्याभिविनय (५) आर्योद्देश्य रत्नमाला, (६) कुरान [हिन्दी], (७) गोकरुणा-निधि, (८) गौतम-अहिल्या की कथा, (९) जालन्धर की बहस, (१०) पञ्च-महायज्ञविधि [सन्ध्याभाष्य प्रथम संस्करण] (११) पंचमहायज्ञविधि [दूसरा संस्करण], (१२) पोपलीला, (१३) प्रतिमा-पूजन विचार, (१४) प्रश्नोत्तर हलधर, (१५) प्रश्नोत्तर [जगन्नाथकृत] का उत्तर, (१६) प्रश्नोत्तर [उदयपुर], (१७) भ्रमोच्छेदन, (१८) मेलाचांदापुर, (१९) ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, (२०)

ऋग्वेदभाष्य, (२१) यजुर्वेदभाष्य, (२२) वेदविरुद्धमतखण्डन, (२३) वेदान्तिध्वान्तनिवारण, (२४) व्यवहारभानु (२५) शिक्षापत्रीध्वान्तनिवारण, (२६) संस्कारविधि (२७) संस्कृतवाक्यप्रबोध, (२८) सत्यार्थप्रकाश (२९) सत्यासत्यविवेक, (३०) वर्णोच्चारण शिक्षा (३१) सन्धिविषय, (३२) नामिक, (३३) आख्यातिक, (३४) पारिभाषिक, (३५) सौवर, (३६) उणादिकोष, (३७) निघण्टु (३८) अव्ययार्थ, (३९ पाणिनि के ग्रन्थ [अष्टाध्यायी, धातुपाठगण उणादि शिक्षा, प्रातिपदिकगण, (४० आलंकारिक कथा ।

इनमें २० ग्रन्थ व्याकरण सम्बन्धी हैं । १८ खण्डनमण्डन के हैं । ३ वेदभाष्य सम्बन्धी और शेष विविध प्रचार सम्बन्धी । इनमें सत्यार्थप्रकाश, संस्कारविधि, ऋग्वेदादिभाष्य-भूमिका को विशेष ख्याति उपलब्ध हुई है ।

महर्षि के शास्त्रार्थ

महर्षि दयानन्द सरस्वती सत्यार्थ के प्रचारक थे । अतः कपोल कल्पित मत मतान्तरों के साथ उनका संघर्ष स्वाभाविक था । तदर्थ व्याख्यानों और शास्त्रार्थों का क्रम उनके सारे कार्यकाल में जारी रहा । उनके प्रसिद्ध शास्त्रार्थों की संख्या ३८ है । ये संवाद पुष्करराज, अजमेर, कर्णवास, फरुखाबाद, सोरों, ककोड़ा, कन्नौज, प्रयाग, काशी, डुमरांव, आरा, हुगली, छपरा, लखनऊ, राजकोट, भरूच, मिर्जापुर, पटना बम्बई, बड़ौदा मुरादाबाद, सहारनपुर, चांदापुर, गुरदासपुर, रावलपिण्डी, गुजरात, गुजरांवाला, बदायूं, बरेली, मसूदा में हुए । कई स्थानों पर २-३ बार भी हुए ।

इनमें से २३ मूर्त्तिपूजा पर, २ भागवतपुराण पर ३ ईश्वर जीव, वेद पर और शेष अवतारवाद सृष्ट्युत्पत्ति, आवागमन पर, ३ ईसा के परमात्मा का पुत्र होने मर कर वापिस आने, पाप क्षमा करने आदि पर थे न्याय, व्याकरण आदि शास्त्रीय विषयों पर भी संवाद हुआ ।

जिन विद्वानों के साथ ये शास्त्रार्थ हुए उनमें विशेष व्यक्ति थे :-

श्री व्यंकट शास्त्री, पं० अम्बादत्त, पं० हीरावल्लभ, श्री गोपाल, श्री हलधर ओझा, स्वामी कृष्णानन्द, पं० अंगदराम पं० उमादत्त, पं० हरिशंकर, पं० शिवसहाय, पं० दुर्गादत्त, पं० रुद्रदत्त, पं० ताराचरण, पं० जगन्नाथ, पं० गंगाधर, पं माधवराव, पं महीधर, पं जयश्री, पं. शिवशंकर, पं. यज्ञेश्वर, पं. अप्पा शास्त्री, पं कमलनयनाचार्य, पं. रामलाल, पं बलदेव व्यास,

साधु दीवानदास, पं. दौलतराम, पं. होशनाकराय, पं. नन्दलाल, पं. रामप्रसाद, पं. वृन्दावन ।

ईसाई पादरियों में :—पादरी टी. जो. स्कॉट, लुईकर, ग्रे साहब, स्कॉट, राबिन्सन, शूलब्रेड ने स्वामी जी का सामना किया । मुसलमानों में मौ. मुहम्मद कासिम और जैनी पं० सिद्धकरण से शास्त्रार्थ हुआ । हमारे विषय के साथ पं. दौलतराम, होशनाक राय, नन्द लाल तथा पादरी लुईकर के साथ शास्त्रार्थों का सम्बन्ध अधिक है । ये संवाद गुरदासपुर, रावलपिंडी, गुजरांवाला, गुजरात में हुए । ये पंडित भी इस राज्य में परिचित व्यक्ति थे । अतः रियासत में आर्यसमाज के सम्पर्क की एक यह भी कड़ी है ।

स्वामी जी की निर्भीकता

यह न समझना चाहिए कि इस सारे संघर्ष में स्वामी जी पर कोई आपत्ति न आई होगी । पथराव, निन्दा, हुल्लड़बाजी, गुण्डापन आदि के अतिरिक्त उनको जान से मार देने और विष देने की कई बार चेष्टाएं की गईं और अन्त को इनमें से एक चेष्टा सफल भी हो गई । स्वामी जी के प्राणहरण की चेष्टाएं मेरठ, दानापुर, कर्णवास, सोरों, फर्रुखाबाद, कानपुर, प्रयाग, रामनगर काशी, मिर्जापुर और बम्बई में की गई पर उनका बलिष्ठ शरीर, भव्यमूर्ति और ब्रह्मचर्य-तेज व ओज सदा प्रहारकों को भगा देने में सफल हुआ । अनूपशहर, प्रयाग, काशी और जोधपुर में उन्हें विष भी दिया गया । अन्तिम बार यही विष घातक सिद्ध हुआ ।

महर्षि के सिद्धान्त

स्वामी जी क्या मानते थे और क्या नहीं मानते थे, इसका पूर्ण परिचय उन्होंने सत्यार्थ-प्रकाश के अन्त में और स्वतन्त्ररूप से भी प्रकाशित किया है । आर्यसमाज का संगठन करते हुए स्वामी जी ने समाज के उद्देश्य-रूप दस नियम प्रकाशित किए थे । यही आर्यसमाज के कार्यकलाप का मूल-स्रोत और आधार माने जाते हैं ।

आर्यसमाज के नियम व उद्देश्य

इसके नियम ये हैं :—

(१) सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सब का आदिमूल परमेश्वर है ।

(२) ईश्वर, सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्त्ता है, उसी को उपासना करनी योग्य है ।

(३) वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है, वेद का पढ़ना पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परमधर्म है ।

(४) सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए ।

(५) सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार कर करने चाहिए ।

(६) संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना ।

(७) सबसे प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार, यथायोग्य वर्त्तना चाहिए ।

(८) अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए ।

(९) प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में सन्तुष्ट न रहना चाहिए किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए ।

(१०) सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालन में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें ।

दूसरा अध्याय

जम्मू-काश्मीर राज्य के साथ आरम्भिक सम्पर्क

महर्षि दयानन्द सरस्वती के समय में रियासत से सम्पर्क

अपने काल के सुधारकों में महर्षि दयानन्द पूर्णतया विलक्षण थे। उनकी विचारधारा मौलिक थी। सर्वश्री राममोहन राय, केशवचन्द्र सेन, महादेव गोविन्द रानाडे, पंजाब में बाबा रामसिंह (नामधारी), ईश्वरचन्द्र विद्यासागर तथा आरम्भिक कांग्रेसी नेता सभी अपने-आप को सुधारक मानते थे, परन्तु महर्षि दयानन्द की दिव्य-दृष्टि ने जिस प्रकार हिन्दू जाति के रोग को पहचाना वह और कोई न कर सका। महर्षि दयानन्द प्राचीन आर्य-संस्कृति के पुनरुद्धारक थे। हिन्दू जाति में आई बुराइयों को दूर करके वे उसका अपने प्राचीन आदर्शों के अनुसार निर्माण करना चाहते थे।

प्रचलित धार्मिक विचारों और प्रथाओं का स्रोत पुराण थे। महर्षि दयानन्द ने वेदों और केवल वेदों को ही प्रमाण मान कर पुराणों की प्रामाणिकता की जड़ काट दी और परम्पराओं को अग्राह्य ठहराया। हिन्दू जाति की बनावट में वर्ण और आश्रम मौलिक बातें थीं वर्णों को सारी जाति पर एक समान व्यापक बनाकर और उनकी जन्म-मूलक जड़ काट कर उन्हें गुण, कर्म और स्वभाव के अनुसार घोषित कर दिया। आश्रम-जीवन का हर एक व्यक्ति को अधिकार देकर निहित स्वार्थों का मूलोच्छेद कर दिया। जिन लोगों का जन्म-मूलक वर्णाश्रम व्यवस्था से लाभ था और जिनका निजी स्वार्थ इसमें निहित था, वे स्वभावतया ही उनके विरोधी थे मूर्ति-पूजा, पौराणिक आदर्श, प्रचलित अवैदिक प्रथाओं का खण्डन करना एक प्रकार से सामाजिक-संघर्ष का आरम्भ था यह संघर्ष १८७६ में वेग से आरम्भ हो गया था १६ वर्ष के निरन्तर प्रयत्न - व्याख्यानों, शास्त्रार्थों, साहित्य प्रकाशन आदि से भारतवर्ष में हलचल मच गई और महर्षि दयानन्द क्रान्तिकारी सुधारक के रूप में प्रसिद्ध हो गए।

सन् १८७७ में लार्ड लिटन ने महारानी विक्टोरिया को भारत की साम्राज्ञी घोषित करने के लिए देहली में दरबार का आयोजन किया। इस में भारत के सब राजा-महाराजाओं तथा जन-नेताओं के एकत्रित होने की आशा थी महर्षि दयानन्द इस अवसर से लाभ उठाना चाहते थे आपने

भी अपना झंडा वहां गाड़ दिया । सत्यासत्य विवेकपूर्वक देश में सत्य सनातन वैदिक-धर्म के सिद्धान्त सबके सामने रखने के लिए वहां प्रतिष्ठित व्यक्तियों की सेना बुलाई । राजा-महाराजाओं से सम्पर्क स्थापित करके इन से शासित हिन्दू केन्द्रों में वैदिक-सिद्धान्तों के प्रचार तथा हिन्दू जाति में सुधार की लहर को वेगवान बनाने के लिए उनका सहयोग प्राप्त करने की चेष्टा की । जम्मू-काश्मीर के महाराजा रणबीरसिंह भी वहां उपस्थित थे । उनका ध्यान उधर गया । उनकी इच्छा थी कि महर्षि दयानन्द उन की रियासत में पधारें परन्तु इस बात में उस समय के ब्राह्मणों, पंडितों, पुजारियों तथा अन्य पदाधिकारियों का स्वार्थ आड़े आया और यह भेंट न हो सकी।

इसी वर्ष महर्षि दयानन्द अमृतसर, लाहौर, गुजरांवाला, गुजरात, जेहलम, तथा रावलपिंडी गए इन स्थानों पर आर्य-समाजें स्थापित हो गईं । सनातनी पण्डितों - प. दौलतराम, प. नन्दलाल आदि से शास्त्रार्थ भी हुए । इनके समाचार जम्मू-काश्मीर राज्य में भी पहुँचे । जन-मानस की उत्सुकता बढ़ी ।

महाराजा रणबीरसिंह रियासत में मुस्लिम राजपूतों की शुद्धि में रुचि रखते थे इसके लिए उन्होंने प्रयत्न किया था । राज्य के सनातनी पण्डितों तथा काशी के विद्वान पंडितों से तत्सम्बन्धी व्यवस्था भी ली थी और राज्य (शासन की ओर से 'रणबीर प्रायश्चित-प्रकाश पुस्तिका का प्रकाशन भी हुआ उनकी इच्छा थी कि महर्षि दयानन्द को रियासत में बुलाकर इस विषय में उनके ज्ञान से लाभ उठाया जाए इसके लिए सन्तराम को उनके पास भेजा भी गया परन्तु उनके दरबारी रूढ़िवादी पंडितों और सरदारों को इसमें अपनी हानि दिखाई देती थी अत यह बात भी सिरे न चढ़ सकी

रियासत की सीमा के साथ-साथ रावलपिंडी, जेहलम, गुजरात गुरदास-पुर लाहौर तथा अमृतसर में आर्यसमाजों का स्थापना और वैदिक धर्म के प्रचार का प्रभाव रियासत पर भी पड़ा और यहां भी विचारों का मथन आरम्भ हो गया । महाराजा के दरबार में जालन्धर के भागमल नाम के एक मन्त्री थे । उनके प्रभाव से जालन्धर से—जो उस समय आर्यसमाज का केन्द्ररूप धारण कर रहा था—कई लोग इन विचारों को अपने साथ रियासत में लाए । महाराजा रणबीरसिंह सदा प्रयत्नशील रहे कि अमतसर आदि

व्यापार केन्द्रों से व्यापारी अपने व्यापार केन्द्र काश्मीर में स्थापित करें। तदनुसार श्रीनगर में रणबीरगंज नामी व्यापारी मंडी की स्थापना होने पर कुछ ऐसे व्यापारी वहां आ गए जो आर्यसमाज के रंग में रंगे थे। इनमें लाला दूनीचन्द दलाल का नाम विशेष उल्लेखनीय है। इन लोगों द्वारा भी वैदिक विचारों का प्रसार हुआ।

प्रचार-युग का प्रभाव

महर्षि दयानन्द का स्वर्गवास सन् १८८३ में हो गया था। उनके पश्चात् पंजाब में कुछ ऐसे व्यक्ति उभरे जिन्होंने वैदिक धर्म के प्रचार को अपना जीवन-आदर्श बनाया। इनमें लाला साईंदास, महात्मा मुन्शीराम (स्वामी श्रद्धानन्द), प. गुरुदत्त विद्यार्थी, पं. लेखराम, म० हंसराज, लाला लाजपत राय, ला० रलाराम, ला० ठाकुर दत्त धवन आदि अग्रगण्य थे। यह आर्य-समाज का प्रचार-युग था। आने वाले १५ वर्षों में इन लोगों ने पंजाब की काया पलट दी।

महर्षि दयानन्द की मृत्यु-सम्बन्धी शोकसभा में ही उनकी स्मृति में डी. ए. वी. स्कूल की स्थापना का प्रस्ताव पारित हुआ। सन् १८८६ में पंजाब में आर्य प्रतिनिधि सभा का संगठन हो गया। कुछ ही वर्षों में पंजाब में आर्यसमाजों का जाल बिछ गया। सामाजिक बुराइयों पर प्रहार होने लगा। ईसाइयत, इस्लाम और पौराणिकों के साथ चौमुखी संघर्ष आरम्भ हो गया। आर्यगज़ट, आर्य-पत्रिका, सद्धर्म-प्रचारक, वैदिक मैगज़ीन आदि पत्रों ने वैदिक धर्म प्रचार का क्षेत्र बढ़ाया। स्वतन्त्रता-प्रेम, स्वदेशी, शुद्धि, दलितोद्धार की भावनाएं उभरीं और इन क्षेत्रों में कार्य और आर्यों के उत्साह ने आर्यसमाज को पंजाब का नेतृत्व प्रदान किया।

अन्य प्रान्तों में भी प्रचार-कार्य वेग से बढ़ा। रियासत जम्मू-काश्मीर भी पंजाब आर्य-प्रतिनिधि सभा के क्षेत्र में थी, अतः इसके इतिहास का सम्बन्ध अधिकतर पंजाब से ही रहा।

पंजाब से वैदिक विचारों का प्रवाह रियासत में बहने लगा। इससे जम्मू और श्रीनगर में भी आर्यसमाजों की स्थापना हो गई।

सामाजिक रूप से रियासती हिन्दू समाज पिछड़ा हुआ समाज था बाल व

वद्ध विवाह जैसी कुप्रथाओं की जकड़, स्त्री-शिक्षा का अभाव, पौराणिकवाद का प्रभाव छूत-छात, जन्म-मूलक वर्णव्यवस्था, जात-पात की कठोरता, ईसाइयत और इस्लाम की तुलना में हीन-भावना और सकुचित प्रान्तीयता ने हिन्दू समाज को सर्वथा पंगु बना रखा था । राजा - प्रजा दोनों ही इसमें ग्रस्त थे ।

इस प्रकार की परिस्थितियों में आर्यसमाज का पनप सकना बड़ा कठिन था शासन-तन्त्र भी इसकी स्थापना में बाधक था । रियासती हिन्दू-समाज तो इसके लिए पूर्ण उदासीन ही नहीं अपितु विरोधी भी था । अतः वैदिक विचारों का प्रभाव पंजाबी समाज तक ही सीमित था । उसमें भी कुछ ही व्यक्ति इसके प्रचार-प्रसार में विशेष रुचि रखते थे । इन स्थितियों पर विजय पाना सुगम न था । फिर भी वैदिक धर्म के प्रचार का यज्ञरूप कार्य निश्चित मार्ग पर शनैः शनैः बढ़ने लगा । कुछ घटनाओं ने इसमें विशेष सहायता दी ।

श्री स्वामी नित्यानन्द जी का आगमन

स्वामी नित्यानन्द जी का प्रभाव राजा-महाराजाओं में विशेष था । राजपूताना के कई राजे उनके शिष्य थे महाराजा बड़ौदा और मैसूर तो उनके अनन्य भक्त थे महाराजा मैसूर ने अपने गृह-अधिकारी (मन्त्री) को आज्ञा दे रखी थी कि स्वामी जी जो चाहें इनको दिया जाए पर उन (स्वामी जी) की रुचि तो महाराजा तथा अन्य दरबारी सरदारों को वैदिक धर्म के प्रचारक, सेवक, बनाने की थी महाराजा को आर्यसमाज का क्रियात्मक रूप दिखाने के लिए स्वामी जी ने उनको पजाब में लाने का कार्यक्रम बनाया । रियासत जम्मू काश्मीर में उनके आगमन तथा भ्रमण की योजना बनी, पर योजना कार्यान्वित होने से पूर्व ही महाराजा का देहान्त हो गया ।

स्वामी जी दो बार काश्मीर पधारे । श्रीनगर में उनके सस्कृत और हिन्दी भाषा में व्याख्यान हुए । इनका राजदरबार पर गहरा प्रभाव पड़ा । दूसरी बार आप सन् १८९१ में काश्मीर आए । अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'पुरुषार्थ–प्रकाश' की रचना यहां ही की थी ।

पण्डित गणपति शर्मा का आगमन

पडित गणपति शर्मा गंभीर विद्वान् ब्राह्मण थे । राजस्थान निवासी निर्धन घर में जन्म ग्रहण करने पर भी उन्होंने अतीव कुशाग्र बुद्धि पाई

थी। विद्या और विशेषकर तर्कशास्त्र में अपनी उपमा आप ही थे। धनोपार्जन और सेवावृत्ति में उन्हें अरुचि थी, धर्म-प्रचार की लगन जन्म-जात थी। सन् १८९६ में आप श्रीनगर पधारे। उन्हीं दिनों एक ईसाई पादरी जानसन यहां आया। वह अपने आप को संस्कृत का विद्वान् कहता था। हजूरी बाग में उसने कई व्याख्यान दिए। महाराजा प्रतापसिंह के द्वारा उसने काश्मीर के पंडितों को चुनौती दी कि उसके साथ शास्त्रार्थ करें। आर्य-शास्त्रों में परस्पर विरोध पर उसके भाषण में महाराजा प्रतापसिंह और राजा अमरसिंह भी उपस्थित थे। हिन्दू शास्त्रों पर पादरी द्वारा आक्षेपों और सनातनी पंडित-मंडली की परास्तवादी भावना से राजा अमरसिंह को रोष आ गया। दैवयोग से उनको किसी ने पंडित गणपति शर्मा को बुलाने का सुझाव दिया। तत्काल पंडित जी को गाड़ी देकर बुलाया गया।

पण्डित गणपति शर्मा ने अपने अलौकिक तर्क, अपने गूढ़ अथाह शास्त्र ज्ञान और ईसाई धर्म के परिचय से पादरी की बोलती बन्द कर दी। उन्होंने न केवल उसके आक्षेपों का युक्ति-युक्त का उत्तर ही दिया अपितु उसकी धारणाओं को निर्मूल भी सिद्ध कर दिया। साथ ही भरी सभा में यह भी प्रमाणित कर दिया कि उसका संस्कृत-ज्ञान का अभिमान भी केवल विडम्बना-मात्र है और जब ईसाई धर्म की पोल खोली गई तब तो पादरी महोदय भागने का रास्ता खोजने लगे।

महाराजा प्रतापसिंह ने दूसरे दिन पुनः शास्त्रार्थ का समय नियत कर पादरी को अपने प्रमाणों सहित सभा-मंडप में आने की आज्ञा दी।

पादरी रात को ही रावलपिंडी के रास्ते श्रीनगर से पलायन कर गया। पंडित गणपति का सामना करने का उसे साहस ही न हुआ।

महाराजा प्रतापसिंह और राजा अमरसिंह हिन्दू-धर्म की इस विजय पर अति प्रसन्न हुए। पंडित गणपति शर्मा का उन्होंने आभार माना। उनकी विद्या-बुद्धि तर्क-शक्ति की भूरि भूरि प्रशंसा की और उनको १०० रुपए की भेंट के साथ एक शाल सम्मानार्थ प्रदान किया।

इस घटना के प्रभावस्वरूप आर्यसमाजों की स्थापना में बाधा दूर हो गई। राजकीय कर्मचारियों पर से समाज का कार्य करने की रोक हट गई।

मास्टर लक्ष्मण आर्योपदेशक और ठाकुर प्रवीण सिंह का आगमन

सन् १९०२ की बात है कि मास्टर लक्ष्मण जी आर्य और ठाकुर प्रवीणसिंह जी श्रीनगर पधारे। उनके एक व्याख्यान में महाराजा प्रतापसिंह भी उपस्थित थे। ठाकुर प्रवीणसिंह के भजनों, सुरीले और मधुर (स्वर) और उत्साहवर्धक उपदेशों से इतने प्रभावित हुए कि ठाकुर जी को अपने हाथ से दक्षिणा और शाल प्रदान किया। इससे रियासत में आर्य समाज के प्रचार का मार्ग प्रशस्त हो गया।

महात्मा हंसराज जी की प्रचार यात्रा

कॉलिज में ग्रीष्मावकाश के समय महात्मा हंसराज जी और उन का दल—लाला साईंदास जी, ला० देवीचन्द जी, बख्शी रामरत्न जी, प्रोफेसर दीवानचन्द जी आदि काश्मीर पधारे। रणवीर गज में आर्यसमाज की स्थापना हुई। महात्मा जी तथा उनके साथियों के भाषण हुए। महाविद्यालय (कालेज) के लिए ८००० का दान प्राप्त हुआ।

महाराजा प्रतापसिंह जी ने उनसे विशेष भेंट की। उनकी भूरि-भूरि प्रशसा कर उन्हें सम्मानित किया तथा उनके धर्म-प्रचार को सराहा। उस दल के लिए रावलपिंडी तक राजकोष से वाहन व्यवस्था तथा आतिथ्य का पूरा-पूरा प्रबन्ध किया गया, परन्तु महात्मा जी ने लौटते हुए पद-यात्रा करना ही उचित समझा।

महात्मा मुन्शीराम जी

महात्मा मुन्शीराम जी जम्मू में धर्म-प्रचारार्थ पधारे रणवीरसिंह पुरा में विशाल आयोजन हुआ। श्री धर्मभिक्षु जी भी उनके साथ थे पर उनके भाषण न हो सकें. इसके लिए मुसलमान मुल्ला मौलवियों ने बड़ा प्रयत्न किया पर वे असफल रहे। मुसलमान भारी सख्या में उनके व्याख्यान में आए। झगड़े के भय से पोलीस का भी आवश्यक प्रबन्ध किया गया। शास्त्रार्थमहारथी धर्मभिक्षु जी ने कुरान की आयतों को इतनी सरलता और स्पष्टता से पढ़ा और अपने व्याख्यान में कुरान के प्रमाणों को इस प्रकार से जनता के सामने रखा कि मौलवी

भी दंग रह गए। जो झगड़ा करने आए थे, वे प्रशंसा करके लौटे। महात्मा मुन्शीराम जी के प्रभावशाली व्यक्तित्व का स्थायी प्रभाव हुआ।

इस प्रकार जम्मू और श्रीनगर दोनों राजधानी केन्द्र नगरों में आर्यसमाज की जड़ जम गई।

तीसरा अध्याय

जम्मू-काश्मीर राज्य में आर्यसमाजों की स्थापना और जम्मू प्रांत में आर्यसमाज

प्रस्तावना : रियासत जम्मू काश्मीर में आर्यसमाजों की स्थापना का विवरण क्रमवार और तिथिवार यदि दिया जा सकता तो ऐतिहासिक तथा अधिक अच्छा होता, परन्तु इस प्रकार की सामग्री उपलब्ध नहीं है। संस्थापकों में से प्रायः व्यक्ति दिवंगत हो चुके हैं। स्थापना की परिस्थितियों को क्रमवार दिया जाना सम्भवतः पुस्तक का कलेवर भी बढ़ा दें, क्योंकि परिस्थितियां प्रायः देश-व्यापी, जातिव्यापी या प्रदेशव्यापी होती हैं। इस प्रकार उनकी पुनरुक्ति करना भी अच्छा नहीं। उनके समझने के लिए उनका वर्णन अलग अध्याय में करना अधिक सुलभ जानकर ही समाजों की स्थापना के क्रम का ध्यान न रख कर उनको प्रदेशानुसार दे दिया गया है। पाठकों को यह अध्याय पढ़ते समय इस बात का ध्यान कर लेना चाहिए।

सभी संस्थापकों तथा उस समय के कार्यकर्त्ताओं का परिचय प्राप्त करने का भरसक प्रयत्न किया गया है। पर सम्भव है फिर भी कुछ छूट जाए। ऐसी अवस्था में उन महानुभावों से क्षमायाचना की जाती है।

अधिकतर आर्यसमाजों की स्थापना का श्रेय पंजाब की संगठन आर्य प्रतिनिधि सभा लाहौर (पंजाब) और आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा पंजाब, सिंध, बलोचिस्तान, लाहौर को है देश विभाजन से उसके सभी इतिवृत्त (रिकार्ड) पाकिस्तान में रह गए या नष्ट हो गए। दीमक खा गई। इसलिए उनके उपदेशकों, प्रचारकों आदि द्वारा इस विषय में जो प्रयत्न हुआ वह भी उपलब्ध नहीं हो सका।

पंजाब में आर्यसमाज के सगठन, विभाजन और परस्पर संघर्ष का परिणाम इस राज्य की स्थापना या सचालन पर अधिक नहीं पड़ा। यहां प्रचार का क्षेत्र बढ़ा ही है कम नहीं हुआ।

हां, समाजों का ऊपरी सगठन विभाजित हो गया, कई समाजों का सम्बन्ध एक से और कइयों का दूसरी सभा से स्थापित हो गया। कई समाज दोनों पार्टियों से अलग रहीं और उन्होंने अपनी स्वतन्त्र सत्ता बनाए रखी। वे दोनों के उपदेशकों और प्रचारकों से लाभ उठाती रहीं।

आर्यसमाज दयानन्द मार्ग जम्मू

आरम्भ से ही यह समाज इस राज्य को प्रमुख आर्यसमाज रही है। अब भी यह प्रमुख ही है। वि० सं० १९४८ में (ई० १८९१) रियासत में सर्वप्रथम स्थापित होने वाला यही आर्य समाज है। इसकी स्थापना का श्रेय पंजाब निवासी सरकारी कर्मचारियों और कुछ व्यापारियों को है। ला० मेलाराम जी भाटिया राज्यसरकार के कर्मचारी थे लाला मक्खनलाल जो नहर विभाग के प्रमुख अभियन्ता थे। लाला गोबिन्द सहाय (फर्म गोबिन्द सहाय केदार नाथ) उनके सहयोगी थे इन लोगों के उत्साह से और उस समय के कई अन्य व्यक्तियों के सत्संग से इस समाज की स्थापना हुई।

आरम्भिक सत्संग प्रति रविवार को लाला मेलाराम भाटिया के मकान पर लगता था। फिर वि० सं० १९६३ में रघुनाथ बाज़ार में चार रुपया मासिक किराए पर लिए मकान पर सत्सग लगता रहा। डा० जगन्नाथ और प्रो० गणेशराम शास्त्री उनके सहयोगी थे। म० लालप्रसाद नहर विभाग में मुख्य लेखक थे। उनके प्रयत्न से समाज के लिए धन जमा हुआ और हस्पताल के सामने भूमि खरीदी गई। समाज मदिर का शिलान्यास २५ वैसाख संवत् १९६८ को लाला रोशन लाल जी बैरिस्टर लाहौर ने किया। इसके बाद दो कनाल भूमि ३१०० में उत्सव आदि करने के लिए खरीद की गई। यहां पर आर्यसमाज-भवन बनाने का विचार था।

इस समाज का सौभाग्य था कि इसे पं० पूर्णचन्द जी, प० गजानन्द जी शास्त्री और प० जगदीशचन्द्र जी, प० लब्ध राम जी जैसे विद्वान् पुरोहित मिलते रहे। उनके प्रयत्नों से समाज ने विशेष उन्नति की।

शुद्धिचक्रसंचालन में इस समाज का विशेष योगदान रहा। आकिलपुर,

चक लालदीन, जम्मू छावनी में विशेष शुद्धि समारोह हुए। महाशय रामचन्द्र के बलिदान के पश्चात् ७०० मेघों, बरवालों को आर्य समाज के उत्सव पर शुद्ध किया गया ऊधमपुर, भद्रवाह, किश्तवाड़, रणवीरसिंहपुरा, पौणी इन नगरों में भी सहस्रों की सख्या में शुद्धियाँ हुई। हुतात्मा वीर रामचन्द्र जी का स्मारक वगैरह बनाया गया जिस का प्रबन्ध इसी समाज द्वारा होता है। इस के साथ एक कन्या पाठशाला भी स्थापित की गई। इस का वर्णन अलग अध्याय में किया जाएगा।

समाज के निर्माण में जिन विशेष व्यक्तियों ने भाग लिया है उन में से श्री अरूढ़चन्द जी ठेकेदार, ल० मानकचन्द जी गुजराल, मास्टर हुक्मचन्द जी, मास्टर रामदत्त जी, भामा गुरांदित्ता मल जी, प्रो० माणिकचन्द जी, प्रो० दौलत राम जी, ला० ईश्वर दास जी, ला० तुलसीराम जी, ला० प्रेमनाथ जी आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

आर्यसमाज पुरानी मंडी, जम्मू

इस समाज की स्थापना 'नगर समाज' के नाम से जम्मू नगर के पक्का डंगा बाज़ार में हुई थी। आरम्भ में एक किराया पर चौबारा लिया गया। इस में साप्ताहिक सत्सग लगने लगे।

इस की स्थापना ला० दीवानचन्द वकील, ला० दीनानाथ अरोड़ा वकील, ला० अनन्तराम जी वकील, ला० बरकतराम सुपरिटैंडैंट दफ्तर चीफ जज़ और महाशय कर्तार चन्द जी दर्ज़ी आदि सज्जनों ने की। इन तीनों के निवास जम्मू नगर के 'ऊपरले' भाग में थे। यही स्थान उनके लिए निकट था।

पुरानी मंडी के पास पटेल बाजार में एक फर्निचर की दुकान हुआ करती थी। इसी दुकान को आरम्भ में ला० दयाल चन्द जी, रियासत के डिप्टी ऐकाउटैंट जनरल थे, ने किराये पर लिया। नगर समाज यहीं लगाया जाने लगा सम्वत् १८९५ में इस समाज के प्रथम वार्षिकोत्सव पर महात्मा हंसराज, ला० खुशहाल चन्द जी आदि प्रमुख प्रचारक आए। जलसा बड़ा प्रभावशाली था। समाज के लिए महात्मा हंसराज जी की अपील पर ७००० रुपया एकत्रित हुआ। अतः दुकान ही ६००० में खरीद कर ली गई और समाज के सत्संग अपने स्थान पर लगाए जाने लगे। कुछ वर्ष पश्चात्

साथ मिलते एक लकड़ी के टाल के स्थान को ला० थालचन्द ने २००० रुपये में खरीद लिया। इस पर समाज का अपना विशाल भवन निर्माण हुआ। इस के निर्माण में ला० काशीराम जी सोनी और ला० नरसिंह दास जी आदि ने परिश्रम किया। अब इस समाज का नाम आर्यसमाज पुरानी मंडी जम्मू हो गया। इसका विधिवत् सम्बन्ध प्रादेशिक सभा पंजाब से कर दिया गया।

इस समाज के कार्यकर्त्ताओं में ला० दयानचन्द प्रमुख थे। उन के साथ कार्य करने वालों में ला० दीनानाथ महाजन वकील, दीवान अनन्तराम, ला० नरसिंह दास, ला० दीनानाथ अरोड़ा वकील, श्री हरिश्चन्द्र विद्यार्थी और म० विष्णुगुप्त, ला० मोहनलाल मोत्याल, ला० गिरधारी लाल प्रिंसिपल प्रिंस आफ वैल्स कालेज जम्मू थे।

इस समाज द्वारा आर्य कन्या विद्यालय, डी. ए. वी. हाई स्कूल, रिहाड़ी कन्या पाठशाला, वेदमंदिर अनाथालय और दलितों के शिक्षण के लिए नारायणा, छम्ब बरनाई, अखनूर आदि स्थानों में पाठशालाएं खोली गई हैं।

नौ मुस्लिम राजपूतों को शुद्ध करके राजपूत बिरादरी में सम्मिलित करने के लिए विशेष प्रयत्न किया गया। महाराजा हरिसिंह इस कार्य में विशेष रुचि रखते थे और समाज को इस कार्य के लिए विशेष आर्थिक सहायता भी प्रदान करते थे।

ला० थालचन्द जीवन भर इस समाज को पुष्ट करते रहे। पं० सत्य देव जी (मौलाना), दयानन्द साल्वेशन मिशन की ओर से प्रचारक भी इस समाज के अधीन कार्य करते रहे।

आर्य समाज कोटली कालोनी, जम्मू

देशविभाजन तथा पाकिस्तान के द्वारा इस राज्य पर आक्रमण के फलस्वरूप मीरपुर, कोटली, राजौरी, पुञ्छ, भिम्बर आदि स्थानों से बहुत से हिन्दू और आर्यपरिवार जम्मू में आकर बस गए। उनके पुनर्वास के लिए केन्द्रीय सरकार द्वारा बख्शीनगर कालोनी तथा गाँधी नगर बस्तियों की स्थापना की गई। कोटली कालोनी निवासी आर्यपरिवारों ने अपनी कालोनी में इस आर्यसमाज की स्थापना की। भूमि सरकार की ओर से प्रदान की गई। आर्यसमाज कोटली का लगभग ६०००/- रु० ला० मोतीराम खन्ना के नाम डाकखाना में जमा थे यह राशि इस समाज को मिल गई। श्री रामलाल फेणियों वाले, डा० गुरदित्ता मल आदि से दान और श्रीमती रामकली जी द्वारा एक कमरा, श्री वानप्रस्थी हरिराम जी ५००/- तथा श्री ओमप्रकाश जी ट्रांस्पोर्टर द्वारा दुकानें आदि के रूप में प्राप्त हुआ। सेठ चूनीलाल जी, ईश्वरदेवी जी मैनी, श्रीमती विद्यावती जी घेई, श्री रवेलदेवी जी ५००/-, श्री परमेश्वरी देवी जी ५००/-, श्री हसराज जी फोटोग्राफर एक कमरा, मास्टर देवीदयाल जी द्वारा स्नानागार, आर्यसमाज का भवन, अतिथिशाला के लिए कमरे, यज्ञशाला, वानप्रस्थियों के निवासार्थ कमरे तथा कुछ दुकानें निर्मित हुईं। 'सेठ वानप्रस्थ कमेटी' द्वारा बरामदा व फलश टट्टियां बनवा दी गईं। चौधरी मोतीराम जी ने भी धन संग्रह किया।

इस आर्यसमाज ने वैदिक यज्ञों, कथाओं, व्याख्यानों आदि द्वारा वैदिक-धर्म प्रचार का विशेष प्रयत्न किया है। पर्व उत्सवों को उत्साहपूर्वक मनाने में भी यह समाज विशेषता रखता है। १९६५ की पाकिस्तानी जंग में विस्थापितों का शिविर यहीं बनाया गया। गोरक्षा आन्दोलन में इस समाज की ओर से सत्याग्रही जत्था भेजा गया विस्थापितों को अन्न, बिस्तरे आदि दिए गए। अतिथिशाला में भी चारपाईयों तथा कुछ बिस्तरों का प्रबन्ध कर दिया गया है। बच्चों के लिए धर्म-शिक्षा श्रेणी चालू की गई है आर्यकुमार सभा भी सगठित की गई थी। दैनिक साप्ताहिक सत्सग, वाचनालय, पुस्तकालय आदि भी नियमपूर्वक कार्यरत हैं।

इस प्रकार यह समाज प्रचारकार्य में विशेष सक्रिय रहता है।

आर्यसमाज गांधी नगर, जम्मू

गाँधीनगर, जम्मू की ही बस्ती है । इसमें प्रायः धनी-मानी, सरकारी पदाधिकारी, बड़े व्यापारी आदि लोग आबाद हैं । यह एक आदर्श उपनगर है । विशाल सड़कें, पार्क, लड़के-लड़कियों के कालिज, केन्द्रीय स्कूल, सस्कृत प्रमंडलीय कालिज और कई अन्य सरकारी और गैर सरकारी संस्थान यहां हैं ।

सन् १९६१ में श्रीमती बहिन लक्ष्मीदेवी (खड़ावां वाली) को समाज-सचालन करने का विचार आया । एक विधवा स्त्री को कुमारी कन्या के विवाह प्रबन्ध करने की आवश्यकता थी । कई सज्जनों के दान से और श्री लक्ष्मीदेवी तथा महता श्रीनिवास के प्रयत्न से विवाह का आयोजन किया गया ।

इस प्रकार के कामों के सम्पादनार्थ आर्यसमाज के साप्ताहिक सत्संग लगाए जाने लगे । इसे स्थायी रूप देने के लिए एक पाठशाला आर्य-शिक्षा-केन्द्र के नाम से ६० रु० मासिक किराए के मकान में आरम्भ की गई। आर्यसमाज के सत्संग भी यहां लगने लगे । स्कूल का प्रबन्ध तो कुछ काल पश्चात् आर्यसमाज पुरानी मण्डी को सौंप दिया गया । यह शिक्षा-केन्द्र अब मिडल तक है ।

इसी में आर्यसमाज के सत्संग भी लगते हैं । बहिन लक्ष्मीदेवी, श्रीमती गोमतीदेवी, श्रीमती लज्जावन्ती, ला० कृष्णलाल जी, म० शिवानन्द जी म० मोहनलाल जी, म० कर्मचन्द जी आदि उत्साही अधिकारी हैं स्वर्गवासी डा० अमर चन्द जी भी स्कूल के प्रबन्धक रूप में कार्यरत रहे हैं । प्रयत्न किया जा रहा है कि अन्य धर्म-स्थानों के समान समाज के लिए भी सरकार से भूमि मिल जाय तो आर्यसमाज मन्दिर बन सके ।

आर्यसमाज बख्शी नगर, जम्मू

मीरपुर तथा आस-पास के विस्थापितों की आबादकारी के लिए केन्द्रीय सरकार की आर्थिक सहायता से जम्मू-काश्मीर राज्य ने जम्मू के निकट नहर की पहाड़ी पर १९६० में एक बस्ती आबाद की रियासत के मुख्य

मन्त्री बख्शी गुलाम मुहम्मद के नाम पर इस बस्ती का नाम बख्शीनगर रखा गया। श्री म० मगाराम, श्री सोमनाथ जी, डा० सीताराम जी तथा कई अन्य परिवार यहां आकर बस गए। इन आर्य परिवारों ने एक खुले स्थान पर आर्यसत्संग लगाना आरम्भ कर दिया। सरकार ने जब अन्य धर्मस्थानों के लिए भूमि प्रदान की तो आर्य समाज के लिए भी भूमि मिल गई इस के साथ C. P W. D. का शैड था। यह नीलाम हुआ तो समाज के लिए ५१० रुपये में खरीद कर लिया।

यहां ही ला० दीनानाथ जी महाजन मन्त्री द्वारा (जम्मू-काश्मीर राज्य) समाज मंदिर का उद्घाटन हुआ और समाज मंदिर के निर्माण का प्रयत्न किया जाने लगा।

समाजनिर्माण कार्य में श्री स्वामी सत्यानन्द जी महाराज, जो इस समय जम्मू-काश्मीर आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान हैं और जिन का जन्म स्थान मीरपुर ही था, का बड़ा हाथ है। आप के निवासार्थ किन्हीं श्रद्धालु सज्जनों ने १००००/- रुपये की राशि दी। ला० काशीराम जी का ३०००/- का दान एक कमरे के लिए प्राप्त हुआ है। म० देवीदास जी, लाजपत नगर देहली, ला० मगाशाह, श्री मोहनलाल जी मोत्याल, श्री मोहनलाल जी संदालया, कविराज विष्णुगुप्त, डा० सोमनाथ, मा० तीर्थराम, ला० क्षेमचन्द, मास्टर रोशनलाल जी सम्पादक 'सच' आदि के सहयोग और प्रयत्न से आर्यसमाज का भव्य भवन तैयार हो चुका है। इस पर लगभग ६५०००/- रुपया व्यय हुआ है। इमारत का विस्तार अभी जारी है। ला० कर्मचन्द के धर्मवीर परिवार से ४०००/- रुपया मिला।

श्री बहिन रामप्यारी जी, श्री रामेश्वरी देवी जी, दोनों श्री विद्यावती जी, बहन कौशल्या देवी जी (फीजी) व अन्य देवियों ने पर्याप्त राशियां दीं, उनका सहयोग इस समाज को सदा प्राप्त रहा है।

इस समय दैनिक सत्संग, साप्ताहिक सत्संग तथा पर्व उत्सव आदि बाकायदा मनाये जाते हैं। इस उपनगर में आर्यसमाज के केन्द्र के स्थापित हो जाने से आर्यविचार वाले परिवारों का संगठन बन गया है।

श्री विश्वमित्र जी मन्त्री, श्री क्षेमचन्द जी प्रधान और उन के अन्य साथी समाज की उन्नति में कार्यरत हैं। वानप्रस्थी सत्यभिक्षु (पूर्व प्यारे लाल) जी

भी अपना समय और सहयोग समाज को प्रदान करते हैं। स्वामी सवितानन्द जी महाराज ने कई वर्ष तक इस समाज में स्थायी आवास रख कर इसके निर्माण में बहुत सहयोग दिया है।

आर्यसमाज रणवीरसिंहपुरा (नवां शहर)

जम्मू काश्मीर राज्य के उपजाऊ मैदानी भूमि-क्षेत्र का यह स्थान प्रधान केन्द्र है। धान तथा अन्य क्षेत्रीय उपज के लिए रियासत भर में इसका प्रमुख स्थान रहा है।

महाराजा रणवीरसिंह ने इस नगर को आबाद किया ताकि इस क्षेत्र को केन्द्रीय मंडी उपलब्ध हो। उस समय पंजाब से रियासत का सम्बन्ध इसी रास्ता से था स्यालकोट-जम्मू रेल-लाईन तथा सड़क पर यही रियासत का प्रधान नगर था।

इस नगर में मेघ जाति की बस्ती काफी थी। जब आर्यसमाज ने मेघोद्धार का काम आरम्भ किया तो यह नगर भी इस शुद्धि कार्य का मुख्य केन्द्र स्थान बन गया।

इस स्थान पर समाज की स्थापना का श्रेय महाशय मगूराम जी, पं० ढूढराज जी कानूनगो, म० ठाकुर दास जी तहसीलदार, म० नरसिंह दास जी ज़िलादार नहर, म० तुलसीराम जी वलर्क P. W. D. आदि को है। समाज की भूमि सरकार से प्राप्त हुई।

आगे चल कर म० बिशन दास जी वकील, म० मेला राम जी अरोड़ा वकील, स्वामी क्षमानन्द जी, डा० शिवराम, भक्त छज्जूराम, ला० देसराज आदि ने भी समाज-कार्य-संचालन में पूरा सहयोग दिया।

जैसा कि वर्णन किया जा चुका है कि यह समाज शुद्धिकार्य का केन्द्र रहा है। एक बार महात्मा मुन्शीराम जी तथा महान भक्त श्री धर्मभिक्षु जी जलसा पर पधारे। इससे समाज को बल मिला।

अलफशाह तथा कुछ अन्य मुसलमानों ने सरकारी सांड की हत्या कर दी। इलाका में इस गोहत्या पर आन्दोलन चला। म० मगूराम जी ने इस पर मुकदमा

में पूरा प्रयत्न किया। तारीख पर सैंकड़ों व्यक्ति जाया करते थे। इस में अलफशाह तथा अन्य हत्यारों को दण्ड मिला। म० मंगूराम जी की पोलीस द्वारा भी प्रशसा की गई।

ला० बिशनदास जी वकील को कठुआ (जहां वह आर्यसमाज के प्रधान थे) वज़ीर वज़ारत (राजा मुहम्मद अकबर खान) ने ज़िला बदर कर दिया तो वह नवां शहर में आ गए। समाज में यहां भी कार्य करने लगे।

स्वामी क्षमानन्द जी ने यहां वैदिक आश्रम की स्थापना की म० श्री छज्जूराम जी द्वारा प्रदत्त भूमि पर इस आश्रम का निर्माण हुआ। इसकी प्रबन्धक समिति के प्रधान भी ला० बिशनदास जी थे। ला० देसराज, डा० शिवराम जी, श्रीमती सीतादेवी जी तथा श्री छज्जूराम जी सदस्य थे।

आश्रम द्वारा आस-पास ग्रामों में प्रचार होता था। हरिजनों की शिक्षा के लिए पाठशालाएं खोली गई ग्राम चुरोभान, गुलाबगढ़ और अन्दाल में इस प्रकार की आरम्भिक पाठशालाए थीं।

म० ठाकुरदास जी तहसीलदार अपने सेवाभाव के लिए प्रसिद्ध थे। प्रतिदिन घर-घर में जा कर रोगियों की सेवा और सहायता का कार्य किया करते थे आपने अपने चारों लड़कों को गुरुकुल में शिक्षा दिलवाई। आसपास के ग्रामों में उन की सेवा का प्रभाव था।

ला० मेलाराम जी अरोड़ा वकील और ला० बद्रीनाथ जी पोस्ट मास्टर ने भी समाज को अपना सहयोग दिया।

आर्यसमाज ढींडे कलां

यह ग्राम रणवीर सिंह पुरा और जम्मू के मध्य में सड़क के किनारे मीरां साहिब के पास है।

प्रेरणा एक बार जम्मू समाज में ५०, ६० मेघों का शुद्धि सस्कार किया गया। इसके प्रभावस्वरूप कुछ लोगों ने भजन-मडली बनाकर ग्राम-प्रचार आरम्भ कर दिया। इसी प्रचार का फल इस ग्राम के समाज की स्थापना है।

समाज की स्थापना— ७ मार्च सन् १९५३ को यहां आर्यसमाज की स्थापना की गई। संस्थापकों में श्री जमनादास जी, श्री देवीदास तथा अन्य कई महानुभाव थे। एक महाशय ने १९ मरले भूमि समाज के लिए दान दी। उसे बेच कर समाज के मन्दिर का निर्माण किया गया। इस समाज ने ग्रामों में प्रचार का बहुत ही उपयुक्त ढंग अपनाया है। यह ढंग इनका परम्परागत और अत्यन्त प्रभावशाली है।

आरम्भ में म० नगलूराम अरूड़ा, भगत म० नाहरसिंह और म० शकर ने इस ढंग से प्रचार किया। एक भजनमडली का संगठन किया गया। इसके पास ढोलक, छैने, एकतारा, बाजा आदि ग्रामीण वाद्य हैं। स्वरचित कविताएं और समाज सुधार के सरल भजन हैं। इनको गा बजा कर यह मडली समय बांध देती है। इनकी बातों का श्रोताओं पर गहरा प्रभाव पड़ता है।

इस समय भी भजनमंडली में पूर्णचन्द, केसरचन्द शकरदास, साईंदास, प्रकाश, विशम्भरदास, कालीदास, मगलदेव, बोधराज, सरदारीलाल आदि प्रचारकार्य में भाग लेते हैं।

राधास्वामी मत का खंडन

राधास्वामी मत का तहसील रणवीरसिंहपुरा में खासा प्रचार बढ़ गया था। अरणियां ग्राम का बाँका और कई और व्यक्तियों ने इस गुरुडम का बहुत प्रचार किया। आर्यसमाज की इस भजनमंडली ने ग्राम-ग्राम और मेला स्थानों पर इन का खंडन करके इसे पीछे डाल दिया है। लोगों को गुरुडम के जाल से बचाने में काफी सफलता मिली है

अधिकारी– इस समाज के प्रधान म० जमनादास और मन्त्री म० देवीदास हैं।

आर्य समाज मोरां साहिब

आर्य समाज ढींडकलां के प्रायः सदस्य मोराँ साहिब की फैक्टरियों में काम करते हैं। म० देवीदास जी मन्त्री भी टरपैंटाइन फैक्ट्री में हैं। इन लोगों ने मोराँ साहिब में भी एक आर्यसमाज की स्थापना कर रखी है। इसे ये लोग ढींड कलां समाज की शाखा का रूप कहते हैं। प्रायः पदाधिकारी दोनों समाजों

में काम करते हैं।

अधिकारी :— इस समय उपप्रधान मास्टर मगलदेव, उपमन्त्री प्रकाश जी, आर्यप्रेमी, खजानची सरदारीलाल भगत हैं।

प्रधान और मन्त्री— श्री जमनादास और श्री देवीदास ढींडे कलां निवासी ही माने जाते हैं।

नोट— ढीडे कलां और मीरां साहिब के दोनों समाजों को ला० रोहलू शाह साकन रत्तियां कलां का सहायता का हाथ सदा ही प्राप्त रहा है।

आर्यसमाज बिशनाह

डा० शिवराम का दवाईखाना तो नवांशहर में था। पर वह दयानन्द दलितोद्धार मडल होशियारपुर के भी प्रचारक थे आस-पास के ग्रामों में प्रचार किया करते थे। उनके प्रयत्न से ही बिशनाह में आर्यसमाज की स्थापना हो गई। एक सज्जन ने भूमि दान में दी। इस पर आर्यसमाज का मंदिर भी बन गया। रायबहादुर वृन्दावन जी का भी इसमें सहयोग था। म० नन्दीलाल कई वर्ष तक मत्री रहे। इस समय यह समाज मृतप्राय है। इसके पुनरुद्धार की आवश्यकता है।

आर्यसमाज चक्रोही

नवां शहर के इस उपजाऊ क्षेत्र में चक्रोही मुख्य ग्रामों में से एक है। यहां काफी धनी लोगों का निवास स्थान रहा है। यहां ला० ढूंडेशाह तथा ला० ठाकुरदास (लूथरा आदि के प्रयत्न से एक मदिर में आर्यसमाज के सत्सग आरम्भ हुए। प्रचारकों के व्याख्यान भी इस ग्राम में होते थे। इससे आस-पास का वातावरण सुधर गया था।

ला० ढूडेशाह ने ५० एकड़ भूमि गुरुकुल के लिए प्रदान की। इसमें गुरुकुल की विधिवत् स्थापना की गई। पं० परसराम जी यहां अध्यापन कार्य करते रहे। आर्यसमाज के प्रसिद्ध उपदेशक पं० पूर्णचन्द जी भी कुछ

काल यहां रहे।

सन् १९४७ में देशविभाजन तथा पाकिस्तानी आक्रमण से यह ग्राम उजड़ गया। सीमा पर होने के कारण खतरे का बिन्दु बना है। यहां समाज-कार्य भी बन्द पड़ा है। न गुरुकुल रहा और न भूमि ही रही। पुनरुत्थान की बड़ी अपेक्षा है।

आर्यसमाज अरणियां

अरणियां भी इस क्षेत्र के प्रसिद्ध ग्रामों में से एक है। इस समय सीमा पर स्थित है। ला० मिल्खीराम जी (ला० तेजराम महाजन के पिता) के प्रयत्न से यहां आर्यसमाज की स्थापना हुई थी। इस क्षेत्र के अन्य ग्रामीण आर्यसमाजों की भांति यह समाज भी समाप्त हो चुका है। इसका पुनरुत्थान अत्यावश्यक कार्य है।

आर्यसमाज चौहाला, आर्यसमाज रंगपुर, आर्यसमाज रत्तियां कलां

ये समाज भी नवांशहर क्षेत्र के ग्रामों के समाज थे। यहां भी कभी आर्यसमाज का प्रचार कार्य जोर से होता था। ये सब दलितोद्धार केन्द्र थे। परन्तु अब समाप्त हो चुके हैं। इन ग्रामों में अब काफी आबादी है, इस ओर ध्यान देने की आवश्यकता है।

आर्यसमाज अखनूर

अखनूर नगर का संस्थापक राजा जगदेव परमार (पंवार) था। यह वंश महाराजा विक्रमादित्य और राजा भोज, धारा नगरी उज्जैन वालों को अपना पूर्वज मानता है। इस वंश का राज्य यहां ६०० वर्ष रहा। १९४५ में इसको जम्मू राज्य में मिला लिया गया।

स्थापना—आर्यसमाज के विचारों के प्रचार का प्रभाव अखनूर के कुछ सज्जनों पर भी पड़ा। फलस्वरूप वहां भी आर्यसमाज की स्थापना हुई। प्रथम संस्थापकों में श्री सीताराम जी लगेह। जो सन्यासी बनकर अब ग्राम-ग्राम

में प्रचार करते हैं, श्री सीताराम जी मलहोत्रा, ला० देसराज, ला० जमीयत राय, और ला० रामकृष्ण ने अच्छा काम किया। ला० बन्सीलाल, ला० दीनानाथ पसारी भी कार्य में भाग लेते रहे।

प्रथम अधिकारी—श्री सीताराम जी मलहोत्रा प्रधान, ला० दीनानाथ जी पसारी मन्त्री और ला० बसीलाल जी खजानची रहे। ला० सन्तराम नागपाल और ला० दौलतराम सर्राफ का सहयोग भी समाज को प्राप्त रहा है।

सत्संग का आरम्भ—आरम्भ में आर्यसमाज का अपना स्थान न था। बाज़ार में एक कमरा किराया पर लेकर समाज के सत्संगों का आरम्भ किया गया।

म० रामचन्द्र का आगमन—म० रामचन्द्र जी साम्बा से तब्दील होकर यहां आ गए। आप तहसील के खजांची थे। सरकारी काम के पश्चात् सारा समय आर्यसमाज के प्रचारकार्य में लगाते थे। ग्राम-ग्राम जाकर प्रचार करते थे। मेघ जाति के सुधार की धुन थी। अपने आप को भी मेघ महाशय कहलाते थे।

मेघ जाति की प्रथम कान्फ्रैंस—महाशय रामचन्द्र जी के अनथक प्रयत्न से आर्यसमाज ने राजा बाज़ार की सराय में ६०, ७० मेघ जाति के प्रमुख व्यक्तियों का सम्मेलन किया और उनको विश्वास दिया कि आर्यसमाज उनके साथ है और आर्यसमाज उनकी हर प्रकार से सहायता करेगा।

बहिष्कार—इस पर नगर के हिन्दू-मुसलमानों ने आर्यसमाज के सदस्यों का सामाजिक बहिष्कार कर दिया। नाई, धोबी, कुम्हार, हद्दे रोटी, मेघा लेने वाले ब्राह्मणों तक पर बन्दिश लगा दी। उनकी दुकानों में सौदा तक लेना बन्द कर दिया गया। मगर एक भी आर्यसमाजी अपने रास्ते से न भटका।

नगर-निवासियों ने नरसिंह मंदिर में सभा कर प्रस्ताव पास किया कि जो भी आर्यसमाजी समाज का त्याग करे, उसे पुन बिरादरी में ले लिया जाए। मगर इस लालच में भी कोई आर्यसमाजी न ही फसा न ही दबका।

पाठशाला की स्थापना—बाजार में आर्यसमाज में ही मेघ बच्चों के लिए आरम्भिक पाठशाला खोली गई। एक मेघ महाशय मुंशीराम को अध्यापक रखा गया। हिन्दुओं ने भरसक विरोध किया। लड़कों को गालियां देते। मास्टर को ग्राम के नम्बरदार से खूब पिटवाया गया। आर्यसमाज ने फौजदारी दावा किया नम्बरदार को मुन्शीराम से क्षमा याचना करनी पड़ी। समाज की धाक जम गई। पाठशाला के स्थान पर रोज झगड़ा होता। हिन्दू बाजार में पाठशाला का होना सहन न करते थे। आखिर एक राजीनामा हुआ कि पाठशाला को नगर के बाहर पुराने बोर्डिंग हाऊस में ले जाया जाये। मगर महाशय रामचन्द्र बाहर से आए तो उन्होंने ये राजीनामा मानने से इन्कार कर दिया। बाजार में पाठशाला रखने पर अड़ गए। आखिर एक महाशय कृपाराम ने पाठशाला के लिए नगर से बाहिर अपनी भूमि समाज को दान कर दी। श्री सीताराम मलहोत्रा ने इस पर मकान बनवा दिया मगर छत डालते समय सनातनी हिन्दू फिर विरोध पर तन गए। झगड़े को निपटाने के लिए इमारत रोक दी। राजतिलक के पूर्व जब महाराजा हरिसिंह और उनका वजीर बेकफील्ड अखनूर आए तो उनको गाथा सुनाई गई। वजीर ने मौका देखा और तत्काल मकान पूरा करने की आज्ञा दे दी।

पढ़ाई के अच्छा होने से पाठशाला लोकप्रिय हो गई। ला० बंसीलाल और म० सीताराम आदि ने नये कमरे बनवाए।

अन्य पाठशालाएं—समाज का सम्बन्ध आर्य प्रादेशिक सभा पंजाब सिंध, बिलोचिस्तान से हो गया। महात्मा हंसराज जी इस समाज की उन्नति में विशेष रुचि लेते थे। सभा के आधीन महात्मा जी ने अखनूर, छम्ब, नारायणा और ढोक में दलितों के लिए पाठशालाएं खोल दीं। इन में क्रमशः मास्टर रामरखा म० केसरनाथ, मास्टर बेलीराम और बाशोराम काम करते रहे। बटहरा में प्रतिनिधि सभा की पाठशाला थी। इसमें मास्टर बूटोराम काम करते थे। म० नाहरसिंह और शंकरदास को कई वर्ष तक इस इलाका में प्रचार कार्य में सभा में लगाए रखा गया।

प्रचारकार्य—समाज के उत्सव खास रौनक से होते थे। नगरकीर्तन

प्रभावशाली होता था। ग्रामों से सहस्रों लोग सम्मिलित होते थे। म० खुशहालचन्द जी, श्री रामगोपाल शास्त्री, श्री अजीतसिंह सन्यार्थी, श्री रामसहाई चिमटा भजन, मंडली, तथा अन्य चोटी के उपदेशक भजनीक आते थे।

ठाकुर अमरसिंह तथा भजनीक श्री सत्यपाल कुछ समय तक इस तहसील में लगाए गए ताकि वे राजपूत मुसलमानों की शुद्धि करें।

हरिजनों को कूप पर चढ़ाना—महाराजा की आज्ञा से सब हरिजनों को कूपों से पानी भरने का अधिकार मिल गया। गुड़ा बाग के राजपूत न माने। आर्यसमाज ने इस कूप पर हरिजनों को चढ़ाया तो झगड़ा हो गया। हिन्दुओं ने पानी भरना त्याग दिया। बाद में हरिजनों को पीटा गया। अन्त में ठाकुर करतारसिंह ने राज़ीनामा करा दिया। कूपजल सबके लिए समान रूप से खुल गया।

प्रचार कार्य—पं० रघुनन्दन जी, भजनीक हरिदेव जी, पं० अमरनाथ जी कथावाचक काफी समय तक इस प्रदेश में प्रचार करते रहे। श्री पं० मुक्तिराम जी के गुरुकुल के ब्रह्मचारी भी हर वर्ष आकर प्रचारकार्य किया किया करते थे।

कार्यकर्त्ता—म० जीयालाल जी अरसा से मंत्री हैं। ये लग्न से कार्य करते हैं श्री रामदेव जी तथा कुलयश राय जी भी पदाधिकारी रूप से कार्यरत रहे हैं।

आर्यसमाज हमीरपुर सिद्धड़

श्री ला० देसराज जी सन् १९२५ में मथुरा में दयानन्द जन्म शताब्दी देखकर प्रभावित होकर आर्यसमाजी बने। आकर श्री ला० देसराज जी द्वारा यहां आर्यसमाज की स्थापना हुई बाजार में भूमि दान कर समाज का निर्माण किया। १९४७ में यह ग्राम उजड़ गया तो समाज बन्द हो गया। जाति विरोध का डट कर सामना किया। मेघों, बरवालों डूमों को कूपों पर चढ़ाया। श्री पृथ्वीसिंह आज़ाद को अखनूर बुला कर प्रचार करवाया। ला० देसराज जी के सुपुत्र ला० रामदेव जी वकील, जो अखनूर में आ बसे हैं,

अब स्थानीय आर्यसमाज के प्रधान हैं।

आर्य समाज भजनौवा (तहसील नौशहरा)

इस समाज की स्थापना १८.८ १९६८ रविवार को हुई। इसके मंत्री श्री नन्दलाल जी सरकारी स्कूल में अध्यापक हैं।

ग्रामों में आर्यसमाजें

आर्यसमाज कांगड़ी—प्रादेशिक सभा के उपदेशक पं० मस्तानचन्द जी और महता सावनमल दत्त जी, (बाद में स्वामी सोमानन्द जी) इस स्थान पर पधारे। सन् १९१२ में यहां आर्यसमाज की स्थापना हो गई।

इसके प्रधान श्री गुरांदित्ता मल जी समाज के प्राण थे। सन् १९५७ में इनका देहान्त हो गया तो इनके सुपुत्र श्री भगतराम जी समाज-कार्य की देखभाल करने लगे।

पाठशाला—सन् १९४७ में यहां पाठशाला स्थापित हुई। सात आठ वर्ष तक इसका काम व प्रबन्ध आदि प्रादेशिक सभा द्वारा होता था। बाद में कुछ वर्ष स्वतन्त्ररूप से चलती रही। अब यह बन्द हो गई हैं।

इस पाठशाला में जटाधारी ओ३म् बाबा (राजौरी वाले) मास्टर जसवन्तसिंह जी और श्री मास्टर तपस्वीराम जी भी अध्यापन तथा प्रचार कार्य करते रहे हैं। वैद्य कृष्णचन्द जी का सहयोग भी समाज को प्राप्त रहा है।

आर्यसमाज तपस्वी-वाटिका कांगड़ी

मास्टर तपस्वीराम जी इस पहाड़ी प्रदेश में निवास करते हैं और इस नाम से आर्यसमाज का संचालन करते हैं। यह प्रचार केन्द्र है।

आर्यसमाज छम्ब, नारायणा और ढांक

इन तीनों ग्रामों में प्रादेशिक सभा की पाठशालाएं थीं। अध्यापक

आर्यसमाजी प्रचारक थे। अतः इनमें आर्यसमाज भी स्थापित थे। सन् १९४७ में देश विभाजन के समय यह सब समाज के केन्द्र बन गए।

आर्यसमाज अखनूर क्षेत्र का एक सुखद अनुभव

आर्यसमाजों के मदिर बनाने के लिए नियम बनाया गया। शुद्धि के समय प्रत्येक यज्ञोपवीत की चार आना दक्षिणा ली जाया करे और समाज मंदिर निर्माणार्थ एक रुपया प्रति व्यक्ति चन्दा दे। इस प्रकार ५० रुपये से लेकर १०० तक की राशि जमा हो जाया करती थी। इससे समाज मंदिर बनाने में सहायता मिली।

जो महाशय (मेघ) बालक पढ़ लिख कर अध्यापक, भजनीक, प्रचारक के रूप में कार्य करते रहे, वही सब आगे चल कर स्वतन्त्रता के पश्चात् जम्मू प्रान्त में हरिजनों के नेता बने और राजनैतिक क्षेत्र में M. L. C. या M. L. A और वज़ीर तक बने। इनमें से कुछ नाम उल्लेखनीय हैं :— पं० रामदित्ता, पं० मगलदेव, म० चन्दाराम, म० कर्मचन्द, म० मथुराप्रसाद शास्त्री, म० रामरखा मल, म० केसरनाथ, मास्टर बेलीराम, म० बाशीराम, म० बूटीराम, म० नाहरसिंह, म० शकरदास, म० छज्जूराम आदि।

आर्यसमाज नौशहरा

स्थापना—नौशहरा में आर्यसमाज की स्थापना का श्रेय श्री ला० साईदास जी (सुपुत्र श्री हीरानन्द जी शाह) श्री महता त्रिलोकनाथ जी कोहली और श्री कृपाराम जी दुकानदार को है। आज से लगभग ५० वर्ष पूर्व सन् १९२३-२४ में आर्यसमाज के सत्सग ला० साईदास जी के गृह पर ही लगा करते थे। जब कोई प्रचारक आता तब भी प्रचार का प्रबन्ध वहां ही किया जाता।

समाज मंदिर का निर्माण—सन् १९३० के आसपास कि बात है कि एक मुसलमान लावारिस मर गया। ग्राम के मुसलमान उसके घर पर मस्जिद बनाने की योजना बनाने लगे।

आर्यसमाज के सस्थापकों ने चुपचाप नगर के हिन्दुओं की एक सभा बुलाई। ठीक हिन्दू आबादी के मध्य में मस्जिद बनना आगे चल कर झगड़े

का केन्द्र बन सकता है इस बात को लेकर सब इस बात पर सहमत हो गए कि इस लावारिस मकान पर आर्यसमाज मन्दिर बनाया जाए।

जनता के मत की पुष्टि से आर्यसमाज के कर्मशील कार्यकर्त्ताओं ने रात ही रात में मकान खड़ा करके अधिकार कर लिया और समाज मंदिर बन गया। फिर प्रचार तथा सत्संग आदि यहां ही होने लगा।

प्रचार तथा पाठशालाएं—आर्य प्रादेशिक सभा पंजाब, लाहौर ने इस इलाका में शुद्धि और शिक्षा के प्रसार के लिए इस समाज को केन्द्र बनाया।

इसके आसपास रजोआ, चाही, बुहानो, मंगलादेवी और कांगड़ी में आरम्भिक पाठशालाएं खोली गईं। ताकि दलित जाति के बच्चों को शिक्षा दी जाए। महता सावनमल जी दत्त, इस प्रदेश में विशेष प्रचारक नियुक्त हुए। पं० हरिदेव आर्य मिशनरी भी थे।

देश-विभाजन और पाकिस्तानी आक्रमण के कारण सन् १९४७ में यह इलाका वीरान हो गया। परिणामस्वरूप आर्यसमाज भी शिथिल अवस्था में आ गया।

आर्यसमाज मंदिर का पुनर्निमाण करने का यत्न किया गया पर धन-राशि पर्याप्त एकत्र न हो सकी। दैवयोग से गुड़गावां निवासी चौधरी चन्द्रभान जी Central Intelligence में यहां आ गए। समाज के निर्माण के लिए १४०० रुपया धन दे दिया। उनकी बहिन ने बिजली के पखे दिए। सुन्दर आर्यसमाज बन गया।

अधिकारी वर्ग—इस समय डा० वेदप्रकाश प्रधान, श्री जियालाल जी (सुपुत्र श्री ला० साईदास जी) आर्यसमाज के प्राण और मन्त्री हैं। मास्टर तिलकराज भी कार्य उत्साही कर्ता हैं।

प्रचारक—प्रादेशिक सभा और दयानन्द दलित उद्धार मंडल होशियारपुर के ३, ४ प्रचारक स्थायी रूप से इस इलाका में रहते थे पं० बूटाराम तो जान तली पर रख कर भी शुद्धि कार्य में व्यस्त रहते थे। आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रचारक भी यहाँ आते रहे हैं।

अन्य कार्यकर्त्ता —ला० लालचन्द, ला० अनन्तराम और श्री भगतसिंह जी भी समाज कार्य में तत्पर रहे। समाज में पाठशाला जारी की गई है।

ला० साईंदास का बाहिष्कार —आप ने दो वशिष्ठ स्त्रियों का विवाह अपनी बिरादरी में कर दिया। इस पर आप का बहिष्कार कर दिया गया। पर आप अपने मिशन में दत्तचित्त रहे और सफल हुए।

आर्यसमाज भिम्बर

कांगड़ा के कटोच राजपूत वश के एक नारायणचन्द नामी सामन्त ने इस राज्य की नीव डाली थी। उसके लड़के चिबदेव की सन्तान ही चिब राजपूत हैं जो इस देश में बसते हैं इसी वश का एक राजा धर्मचन्द मुसलमान हो गया था उसी से यह चिब राजपूत हिन्दू और मुसलमान परस्पर शादियां तक करते रहे हैं। इन नौ मुस्लिम चिब राजपूतों को हिन्दू धर्म में आसानी से लिया जा सकता था वे लालायित भी रहे, परन्तु ऐसा हो नहीं सका

स्थापना—यहां पर आर्यसमाज की स्थापना का श्रेय महाशय जट्टमल जी अरजी नवीस और प० प्रभुदयाल जी वर्मा तथा उनके साथियों को है। यह काफी कार्यशील समाज था। प० बुद्धदेव जी विद्यालंकार और श्री माधवाचार्य का शास्त्रार्थ भी यहां हुआ।

समाज द्वारा चिब राजपूत अपनी हिन्दू बिरादरी में मिलना चाहते थे, मगर वह बेल मंडे न चढ़ी।

सन् १९४७ में पाकिस्तानी आक्रमण का यह नगर शिकार हो गया। प्रायः हिन्दू मारे गए। बहुत से स्त्री-पुरुषों ने विष खाकर आत्महत्या कर ली। अब यह नगर पाकिस्तान में है।

आर्यसमाज रामपुर राजौरी

राजौरी अति प्राचीन नगर है। रामायण काल में यह राजगृह था केकेय राज्य की राजधानी और कैकेयी का मायका नगर। महाभारत काल में सावित्री के पिता की राजधानी और उपनिषद् काल में सात्विक जीवन के लिए प्रसिद्ध था।

मुसलमानी काल में इसका नाम राजपुरी, राजवर, राजौर से राजौरी बन गया। पर रामपरिवार का चिन्ह रामपुर अब भी इसके साथ लगा है। इस नगर को वीर वैरागी बन्दा का जन्म स्थान होने का सौभाग्य प्राप्त है।

महमूद गज़नवी के आक्रमणों के समय यहां का राजा नील सनेह नीलखान बन गया। इस तरह पांडवों का खानदान समाप्त होकर इस्लामी राज्य की ११९४ में स्थापना हो गई।

आर्यसमाज की स्थापना—सन् १९०८ की बात है कि ला० सहाईराम सराफ, ला० सन्तराम सराफ और ला० साईंदास मोदी सपरिवार हरिद्वार गए। वापसी पर लाहौर आर्यसमाजों के वार्षिक उत्सव हो रहे थे रौनक देखने चले गए। व्याख्यानों से इतने प्रभावित हुए कि विचारों में परिवर्तन आ गया। वापिस आकर बाज़ार में एक चौबारा किराए पर लिया और आर्यसमाज के सत्संगों का क्रम जारी कर दिया

शास्त्रार्थ और उसका प्रभाव—एक दिन एक रमता साधु नगर में आ गया। उसने मूर्ति पूजा का खंडन किया नगर में हलचल मच गई सनातन धर्म के अनुयायियों ने अमृतसर से प० रुलयाराम, सम्पादक 'सनातनधर्म प्रचारक' को बुलाया। आर्यसमाज का भरपूर खडन किया गया। इसकी प्रतिक्रियास्वरूप आर्यसमाज ने मीरपुर आर्यसमाज की सहायता से लाहौर आर्य प्रतिनिधि सभा गुरूदत्त भवन से पं० पूर्णानन्द, पं० दीनानाथ फिलासफर और एक भजनीक मगवा लिया मीरपुर से भी ३२ आर्य कार्य-कर्त्ता आ गए। लगातार तीन दिन तक शास्त्रार्थ चला परिणाम-स्वरूप आर्यसमाज की धाक जम गई। ७० नए सदस्य बने प्रसिद्ध सनातनी पंडित अनन्तराम ने अपने घर से ठाकुरों की चौकी दरिया में बहा दी। कई लोगों ने मूर्तिपूजा त्याग दी।

समाज मंदिर का निर्माण—ला० नन्दलाल ने और उन के दोनों सुपुत्रों ने बाज़ार में अपनी भूमि समाज को दान दे दी इस पर समाज की दो दुकानों और मंदिर का निर्माण हो कर सत्संग का स्थायी केन्द्र बन गया।

वशिष्ठों की शुद्धि—आर्यसमाज ने वशिष्ठ जाति के शुद्धिकरण के

प्रोग्राम को हाथ में लिया। इस जाति की सख्या २४००० था। आरम्भ में तो साधारण हिन्दू सनातनी जनता ने इसकी ओर ध्यान न दिया। मगर जब १९३०, ३१ में मुस्लिम कान्फरैंस के नेताओं के साम्प्रदायिक प्रचार से इस इलाका में विद्रोह जागृत हो गया और हिन्दू जनता को कष्ट और जन-धन को हानि उठानी पड़ी तो सनातनधर्मी हिन्दू भी सहमत हो गये। इससे शुद्धिकरण और परस्पर का मिलाप व्यापक और आसान हो गया। सहभोजों में वशिष्ठों को साथ मिलाया गया।

विधवाविवाह का श्री गणेश —इस इलाका में हिन्दू जनता में बाल विधवाओं की काफी संख्या थी। उन बेचारियों का जीवन दूभर था। समाज की हानि हो रही थी। अतः इस काम को हाथ में लिया गया। ला० मोहनलाल मोत्याल के प्रयत्न से पहला विधवा विवाह सम्पन्न हुआ जिसके फलस्वरूप उनको बहुत अपमान सहना पड़ा। इस प्रकार विधवा विवाहों का मार्ग प्रशस्त हो गया और कई विधवा विवाह हो गए।

वशिष्ठों की शिक्षा और प्रचार

इस इलाका में प्रचारक्षेत्र प्रादेशिक सभा लाहौर के हाथ में था। सभा के कई प्रचारक, भजनीक, उपदेशक कार्यरत रहे। पं० ऋषिदेव जी तथा श्री नरपत सिंह जी तो स्थायी रूप से इस इलाका में काम करते रहे।

पाठशालाएं - शिक्षा देने के लिए सदयाल और गुन्नी में पाठशालाओं का संचालन हुआ। जहां बाबा ओम् जटाधारी और पं० ऋषिदेव जी अध्यापक का काम भी करते रहे।

विरोध — यह न समझना चाहिये कि सारा काम सरलता से हो गया। सनातन हिन्दु समाज ने इसका भरसक विरोध किया। आर्य लोगों को जाति से बहिष्कृत किया गया। घर वालों ने भी असहयोग किया। ला० साईंदास जी चुग को उनके घर वालों ने छेक दिया। चौधरी मोहनलाल को उनकी माता ने ही तीन मास तक चौके में रोटी नहीं दी और वह घर से बाहिर रहने पर बाध्य हुए।

देश-विभाजन—१९४७ में देश-विभाजन और पाकिस्तान के आक्रमण से यह सारा प्रदेश आतंक और अत्याचार का क्षेत्र बन गया। नगर भर को लूटने और हिन्दू जनता को मारने के लिए आस-पास के मुसलमानों ने प्रयत्न किया। आस-पास के हिन्दू परिवारों ने नगर में आश्रय ले रखा था एक बार तो समय पर सरकारी सहायता तथा प्रोत्साहन प्राप्त होने और नव-युवकों के संगठन ने नगर की रक्षा की। इस कार्य में चौ० मोहनलाल और उनके साथियों ने बड़ा काम किया। मगर आखिर नगर पर पाकिस्तान का अधिकार हो गया नगर लूटा गया। जलाया गया अकथनीय अत्याचार और नरसंहार हुआ। पाकिस्तान का अधिकार छः मास तक रहा।

जौहर—तहसील के अहाता में लगभग १५००० स्त्री-पुरुष जमा थे जब नगर पर आक्रमण हो रहा था तो देवियों ने प्राचीन जौहर की याद ताजा कर दी उन में विष की पुड़ियां बांटी गईं जो प्रसन्नतापूर्वक खाकर स्त्रियों ने प्राणान्त कर लिया। जिनको ज़हर न मिल सका उन के गले तलवारों और कुल्हाड़ों से काटे गए। जो कुछ भाग कर जाने में सफल हो गए उन में से भी अधिकतर रास्ता में मारे गए।

बलिदान-भवन छः मास पश्चात् भारतीय सेना ने नगर पर पुनः अधिकार कर लिया। नगर की हिन्दू जनता ने देवियों के बलिदान से स्थायी प्रेरणा प्राप्त करने के लिए बलिदान का स्थान लेकर उस पर बलिदान-भवन का निर्माण किया। यह भवन पवित्र माना जाता है। प्रतिदिन दोपहर के समय यहां स्त्री सत्संग लगता है।

आर्यसमाज का पुनर्निर्माण—पाकिस्तानियों ने आर्यसमाज मंदिर जला दिया था समाज-भवन का पुनर्निर्माण किया गया। दुकानों के ऊपर विशाल हाल बनाया गया इस कार्य का श्रेय ला० रामनाथ जी वकील (मीरपुरी), श्री ओम्प्रकाश महता मंत्री आर्यसमाज, ला० रूपलाल जी वकील, ला० लाल-चन्द जी, भ० अनन्तराम जी, श्री लेखराज जी बालो आदि तथा उनके सहयोगियों को है।

श्री नरपत सिंह जी आर्य समाज में पुरोहित तथा प्रचार का काम करते हैं

स्त्री आर्यसमाज

श्रीमती बहिन विमलादेवी जी का कार्य सराहनीय है। १९४७ में विधवा हो जाने पर और कुल्हाड़ी से कटने पर भी बच जाने पर आप ने अपना जीवन समाजकार्य में लगा दिया है। स्त्रीसमाज की अपनी अलग इमारत है। प्रात दैनिक यज्ञ और सत्संग होता है। देवियों में खासा प्रचार है।

बलिदान-भवन के सत्संग का संचालन भी श्रीमती विमलादेवी जी ही करती हैं। इन का जीवन आदर्श समाजसेवा में लग रहा है।

कुछ विशेष व्यक्ति

ला० फ़कीर चन्द जी अर्जीनबीस का जीवन प्रेरणा का स्रोत रहा है। घर में प्रतिदिन यज्ञ, संध्या उपासना का क्रम सदा चला। अतिथि सेवा, दलितों की सेवा, नवयुवकों का मार्गदर्शन कर आपने आदर्श जीवन व्यतीत किया।

ला० नन्दलाल का परिवार, मोदीपरिवार के मंगाराम, साईंदास, रूपचन्द आदि ला० रूपचन्द हकीम, साईंदास चुग, सन्तराम, सोमराज सराफ, ला० बोधराज, अमरचन्द और जगतसिंह महता ने समाज के काम में सदा सहयोग दिया है।

कुछ घटनाएं

१. डाक्टर रामसिंह —पुञ्छ में स्वास्थ्य अधिकारी रहे। वे जम्मू में भी काफी प्रसिद्ध थे। आप की कन्या सन्तोष B.A., B T. राजौरी सरकारी स्कूल में मुख्याध्यापिका थी। दैववश श्री अब्दुलगनी गोनी से सम्बन्ध हो गया। मुसलमान हो गई। उससे विवाह कर लिया। लड़का भी हो गया।

इस पर राजौरी हिन्दूसमाज में आन्दोलन खड़ा हो गया। आर्यसमाज राजौरी और जम्मू के प्रयत्न से तथा कुछ व्यक्तियों के विशेष प्रभाव से इसे वापस ले कर शुद्ध किया गया और देहली में इस का विवाह एक शास्त्री महोदय से कर दिया गया।

२. म० खियालीराम जी —ये जाति के वशिष्ठ थे। मीरपुर आर्य समाज में सेवक का काम करते रहे। सारी आयु प्रचारकार्य में व्यतीत की। सैकड़ों जाति भाइयों को शुद्ध किया अपना सर्वस्व आर्यसमाज को दे दिया। आर्यसमाज राजौरी को भी ५०० रुपये की राशि दी।

आपका सुपुत्र म० रामचन्द अब भी ऊधमपुर में अपना कार्य करता हुआ समाज सेवा में रत है।

३. यज्ञोपवीत की घटना— इस इलाका में गोपीचन्द नामी एक वशिष्ठ के यज्ञोपवीत लेने पर उस ग्राम के दो राजपूत और एक गूजर ने न केवल उसे पीटा, बल्कि उसका यज्ञोपवीत तोड़ कर दरान्ती गर्म करके उसके शरीर पर यज्ञोपवीत का निशान बना दिया। आर्यसमाज ने मुकद्दमा चलाया। जज ने दो को छः, छः मास और एक को नौ मास का कारावास दड़ दिया।

आर्यसमाज पुञ्छ

ऐतिहासिक विवरण—पुञ्छ प्रदेश का प्राचीन नाम दारु अभिसार था और पुञ्छ नगर का परतर्स। यही नाम बिगड़ कर 'पुञ्छ' हो गया है।

प्राचीनकाल से यह प्रदेश हिन्दूराज्यान्तर्गत था। सन् १५८६ में जोधपुर के राजा मानसिंह के कई लड़कों में से एक सुरजन सिंह अपनी रानी के साथ एक मुसलमान फकीर के प्रभाव में आकर सिराजुद्दीन के नाम से राजा बन गया। मुसलमानी शासन का अन्त महाराजा रणजीतसिंह ने किया और राज्य का अधिकारी अपने वजीर ध्यानसिंह को बनाया। बाद में ध्यानसिंह का पुत्र राजा हीरासिंह पुञ्छ का राजा घोषित हुआ। राज्यप्रबन्ध आरम्भ से ही महाराजा गुलाबसिंह के अधीन रहा अतः यह राज्य जम्मू राज्य का एक अंग बन गया।

आर्यसमाज की स्थापना —अनुमानतः सन् १९१७ - १८ में आर्यसमाज की स्थापना यहां हुई थी। आरम्भ में म० बालाराम जी, डा० रामसिंह पचन्दा स्वास्थ्य अधिकारी, ला० रामदास छांजल वाले, ला० जयराम शाह, ला० रामलाल वकील, ला० ईश्वरदास जी और म० मंगतराम जी कार्यकर्ता थे। ला० गुलजारीलाल जी नन्दा (भूतपूर्व गृहमंत्री और स्थानापन्न प्रधानमंत्री भारत) के पिता भी यहां सरकारी नौकरी में थे। श्री गुलजारी लाल जी ने भी अपना बाल्यकाल यहां व्यतीत किया।

आरम्भ में साप्ताहिक सत्संग एक कच्चे मकान में लगा करता था। डॉ० रामसिंह जी प्रधान थे। सन् १९२५-२६ में समाज मंदिर बना। ला० दौलतराम तथा ला० रूपलाल जी वकील मन्त्री रहे। डॉ० सीताराम म० सेवकराम आदि कार्य करते रहे। श्रीमती ईश्वरदेवी जी मैनी व ला० रूप लाल वकील व अन्य सज्जनों ने समाज के कई कमरे बनवाए। समाज की भूमि भगत मंगतराम ने दान में दी थी।

पाठशाला की स्थापना—आर्यसमाज मंदिर में स्कूल की स्थापना की गई जो कई वर्ष तक सेवाकार्य करता रहा और शिक्षा का लोकप्रिय केन्द्र बना रहा।

सन् १९३१ - ३२ में इस इलाका में मुस्लिम कान्फ्रेंस के नेताओं के कुप्रचार से साम्प्रदायिक और राजनैतिक शोरश मचा। इस इलाका में बहुत से हिन्दुओं को जबरदस्ती मुसलमान बनाया गया।

शुद्धिकरण-कार्य, सहायता-कार्य —विस्थापित हुए और उजड़ गए हिन्दुओं की सहायता के लिए दयानन्द-दलित-उद्धार मंडल होशियारपुर, हिन्दु सभा पंजाब, लाहौर (भाई परमानन्द जी द्वारा), आर्य प्रतिनिधि सभा गुरुदत्त भवन लाहौर, आर्य प्रादेशिक सभा अनारकली लाहौर तथा कई अन्य हिन्दू-संस्थाओं ने सहायता की। पुञ्छ में ला० बालाराम जी ने सहायता कार्य को इस योग्यता, तत्परता, और निष्ठा से किया कि सहायता देने वाले, पाने वाले सभी लोग उनके प्रशंसक बन गए। पुञ्छ के राजा साहिब सहायता कार्य से इतने प्रसन्न हुए कि आपने लाला बालाराम को दरबार में बुलाकर

सम्मानित किया और विशेष प्रशंसा की और आगे से आर्यसमाज के काम में विशेष रुचि लेने लगे

मुसलमान बनाए गए हिन्दुओं को वापस लेने का काम आर्यसमाज तथा आर्यसमाज की संस्थाओं ने अपने हाथ में लिया।

ला० देवीचन्द जी ने दलितोद्धार मंडल होशयारपुर के आठ उपदेशकों को (१ पं० नन्दलाल, २ ला० देवराज, ३ श्री लक्ष्मण दास, ४ पं० परमानन्द, ५ पं० गुरुदत्त, ६ श्री दीनराम, ७ श्री नाहरसिंह और ८ श्री बूटाराम) को इस कार्य पर नियुक्त कर दिया। म० नाहरसिंह और बूटाराम को स्थायी रूप से इस प्रदेश में लगा दिया।

आर्य प्रादेशिक सभा ने भी अपने उपदेशकों के अतिरिक्त महात्मा हंसराज जी की प्रेरणा पर कई प्रतिष्ठित आर्य सज्जनों को इलाका में भ्रमण करने, लोगों का मनोबल बढ़ाने और मुसलमान बने लोगों को वापस लेने के लिए भेजा। आर्य प्रतिनिधि सभा के अधीन दयानन्द दलित उद्धार सभा ने भी पूरा सहयोग दिया और इस प्रयत्न से प्रायः सब लोगों को हिन्दू धर्म में वापस ले लिया गया।

१ मैंढर के जागीरदार ईश्वरसिंह को जबरदस्ती मुसलमान बनाया गया था उसे वापस लिया गया

२. महेश जागीर पुञ्छ के १०४ चमारों को वापस लेने का भी पूरा यत्न किया गया पं० नन्दलाल मुसलमाना वेश में इलाका भर में घूम - घूम कर इस प्रकार की सूचनाएं प्राप्त करते रहे।

मायादेवी का मुकद्दमा —पुञ्छ के पास एक ग्राम में एक मुसलमान स्त्री रेशम बीबी कुरेशी को समाज ने शुद्ध करके मायादेवी नाम रखा। मुसलमानों ने कचहरी में दावा किया झगड़े के भय से राजा के एक दरबारी ने लड़की मुसलमानों के हवाले कर दी। पर मायादेवी इतनी दृढ़ थी कि वह किसी प्रकार भी मुसलमान न रहना चाहती थी। आखिर लड़की को वापस लाया गया बक्षी चन्दूलाल सैशन जज के सम्मुख यह सारा मुकद्दमा रखा गया। लड़की पूर्ववत् हिन्दू धर्म में रही उसका विवाह श्री ठाकुरसिंह भजनीक से कर दिया गया और वह डेरा बाबा नानक में चली गई। ला० भगतराम ठेकेदार जगलात ने इस में विशेष प्रयत्न किया।

सन् १९४७ का उपद्रव देश विभाजन और पाकिस्तानी आक्रमण पर यहां काफी हलचल मची। हिन्दू आबादी बरबाद हो गई।

पं जगत राम का बलिदान मास्टर जगत राम ने बहुत काम किया, मगर मुसलमानों के हाथ में फस जाने से बड़े अत्याचार पूर्वक मारे गए। समाज के लिए ही यह बलिभेंट हुई। इस हलचल में आर्य समाज भी मृतप्राय हो गया। आर्य समाजी प्रायः चले आये। इस समय माता रंगीली देवी जी निष्ठा पूर्वक आर्य समाज का साप्ताहिक सत्संग लगाती हैं। यह एक प्रकार का स्त्री सत्संग ही है।

समाज की विशाल इमारत किराया दारों के पास है जो इमारत की देखभाल करते हैं।

आर्य समाज साम्बा

साम्बा नगर का इतिहास —साम्बा सम्याल राजपूतों की बस्ती है। तेरहवी शताब्दी में इन के एक पूर्वज मल्हू को बादशाह देहली ने खान का खिताब दे कर मल खान बना दिया उस के २२ बेटे थे। जिन की २२ कुलों की मंडियां साम्बा के आसपास की २२ पहाड़ी चोटियों पर बसी हैं। प्रत्येक मंडी में तालाब मन्दिर आदि बने हैं। इस प्रकार इस कुल का यहां अधिकार है।

महाराजा रणजीत सिंह ने साम्बा का राज्य राजा सुचेत सिंह को दे दिया था। उसने अपने भाई के लड़के रणवीर सिंह को गोद में लिया। शेष सब वारसों के मारे जाने पर रणवीर सिंह जम्मू का भी राजा बना और साम्बा जम्मू राज्य का अङ्ग बन गया।

आर्य समाज की स्थापना —साम्बा के सरकारी स्कूल में मा० सीताराम जी जफलालया अध्यापक थे आप दृढ़ आर्य समाजी थे। उन के सम्पर्क से मा० जस्सा राम जी और मास्टर अमर नाथ जी सूदन भी आर्य समाजी बन गए। मास्टर अमर नाथ सूदन के मकान पर साप्ताहिक सत्संगों का आयोजन किया जाने लगा।

महाशय राम चन्द्र जी का आगमन —सन् १९२०—२१ में मा० राम चन्द्र जी तहसील खजानची बन कर यहाँ आ गए। आप को समाज की अथाह लगन थी। स्कूल में मास्टरों के साथ मिल कर प्रचार कार्य बढ़ाया जाने लगा मा० रामचन्द्र जी आस-पास के ग्रामों में भी प्रचार करने लगे।

वार्षिकोत्सव —सन १९२०—२१ में आर्य समाज का वार्षिक उत्सव रखा गया। श्री पं० पूर्ण चन्द जी, मा० हरिदेव जी भजनीक और एक सन्यासी युवक प्रचारार्थ पधारे। नगर कीर्तन का प्रबन्ध किया गया। नगर कीर्तन का जलूस चल रहा था कि चार राजपूत तलवारें सोंते जलूस के आगे आए। जलूस रोक दिया। समाज के जलसे प्रचार और मा० रामचन्द्र द्वारा किये जा रहे दलितोद्धार को वे सहन न कर सकते थे। म० रामचन्द्र जी जलूस के आगे आए और राजपूतों को चुनौती दी कि उन पर वार करना चाहें तो करें। इतने में सन्यासी महोदय भी आगे आ गए। अपने आप को बलि के लिए प्रस्तुत कर दिया। इस पर लोग जमा हो गए। बीच बचाव कर के झगड़ा शान्त कर दिया गया।

पण्डाल में उत्सव बाकायदा हुआ और प्रभावशाली प्रचार हुआ।

समाज का निर्माण —आर्य समाज के लिए जमीन ४, ५ सौ रुपया में खरीद की गई। समाज का हाल म० रामचन्द्र और अमर नाथ सूदन ने सम्वत् १९९७ में बनवाया सामने के कमरे म० सन्तराम जी ने निर्माण कराए।

इस समय ये सामने के कमरे ५० रुपए मासिक किराया पर लगे हैं। खादी और ग्राम उद्योग संघ के म० मेलाराम जी यहाँ काम करते हैं। आर सात्विक स्वभाव के आर्य समाजी हैं। समाज सेवा में अटूट लगन रखते हैं।

म० रूप लाल जी —साम्बा के वयोवृद्ध आर्य नर रत्न म० रूप लाल जी हैं आप का जन्म सम्वत् १९५९ में कट्टर सनातनी घराना में हुआ। इनके पिता की नाम दरबारी शाह था। पिता के डर से रात के समय घर से छिप कर समाज का उपदेश सुनने और सेवा करने चले जाया करते थे।

एक समय हसन नाई से हजामत कराते झगड़ा हो गया हसन ने कृष्ण महाराज के गोपी चीर हरण को ले कर लांछन लगाया। रूप चन्द ने तुरकी-

बहुरकी जवाब दिया और मुहम्मद के अपनी पुत्र वधू से विवाह का किस्सा सुना दिया। शोर मच गया। मुसलमान रूप लाल के जान लेवा बन गए। म० रामचन्द्र के संसर्ग से समाज प्रेम और भी बढ़ गया।

आदर्श विवाह —सन् १९२९ में स्यालकोट की जन्म की मुसलमान स्त्री को आर्य समाज पुरानी मंडी जम्मू में शुद्ध किया गया और उसका विवाह भी वहाँ ही म० रूप लाल जी से हुआ।

उसके वारसों ने मुकदमा किया। समाज के आधिकारियों के भी वारंट निकले। मुकदमा चला, मगर स्त्री बालग थी, स्वतन्त्र थी, । अतः मुकदमा असफल हो गया। मगर घर वालों और बिरादरी का विरोध जारी रहा। आप आपने कर्त्तव्य पर डटे रहे। साम्बा त्याग कर बानिहाल, डोडा, किश्दवाड़, भद्रवाह चले गए। देश विभाजन के समय लूटे जाने पर वापस आये।

इसी स्त्री से आप की सन्तान पुत्र-पुत्रियों के विवाह बिरादरी के प्रतिष्ठित परिवारों में हुए। आप का सुपुत्र वेदव्रत इस समय भी आर्य समाज का मंत्री है आप अब तक भी समाजसेवा में तन-मन-धन से लगे रहते हैं। इसके अतिरिक्त ल० दीना नाथ शाह जो आर्य समाज मन्दिर के निकट रहते हैं उनका सारा परिवार आर्य समाज की सेवा में तत्पर रहता है।

आर्य समाज कठूआ—ऐतिहासिक महत्त्व —कठूआ नगर कठ जनपद की यादगार है। यह एक गण राज्य था। आज से २३०० वर्ष पूर्व जब सिकंदर (यवन राज) ने यहाँ से रावी नदी पार की थी तो उसकी विशाल सेना का इस छोटे से गण राज्य के वीर योद्धाओं ने सामना किया था।

उस से बहुत पूर्व यहाँ महर्षि कठ का आश्रम था। यह महर्षि वेद की काठक शाखा के प्रवर्तक हुए कठ उपनिषद् भी इन का ही संकलितग्रंथ है। जो संसार प्रसिद्ध है।

समाज की स्थापना —इस समाज की स्थापना सम्वत् १९७०, तदनुसार सन् १९१३ में हुई। इसके संस्थापन का श्रेय अन्य लोगों के साथ श्री पं० जगन्नाथ जी, श्री ला० भगत राम जी भरडू, चौ० राजेन्द्र जी और चौ० लछमन सिंह जी को है।

आरम्भिक सत्संग — आरम्भ में सत्संग घरों में लगाए जाते थे। यह एक प्रकार का पारिवारिक सत्संग का रूप था। फिर बाजार में मकान किराया पर लेकर सत्संगों का क्रम यहाँ जारी किया गया।

आर्य समाज मंदिर का निर्माण —लाला देवी दित्ता मल जी तहसीलदार बन्दोबस्त थे। ला० दीना नाथ जी अरोड़ा वकील भी यहाँ कार्य करते थे। इनके तथा अन्य सज्जनों के सहयोग से चौधरी ससार सिंह व हाकम सिंह सुपुत्र चेतू सकना कठूआ ने साढे १५ मरले भूमि समाजके स्कूल के लिये दानदी।

समाज निर्माण व प्रबन्ध तथा अन्य कार्यों में सहयोग देने वालों में निम्नलिखित सज्जनों के नाम उल्लेखनीय हैं:—

१. ला० भगत राम जी S. D. O. कठूआ सकना उड़मुड़ टांडा।
२. ला० भगत राम जी चावला सकना जम्मू।
३. ला० नन्थूराम जी वकील कठूआ।
४. ला० बेली राम जी भरड़ ।

शुद्धि कार्य का आरम्भ —पंजाब में ओड़ों और रहतियों की शुद्धि का कार्य क्रम चालू हो चुका था। इस के नेता पं० गंगा राम जी महात्मा मुन्शी राम जी और चौ० राम भजदत्त जी आदि थे। चौधरी रामभजदत्त जी गुरदास पुर जिला के निवासी थे। इस जिला में उनके नेतृत्व में दलितोद्धार कार्य वेग से बढ़ रहा था। कठुआ साथ लगता नगर है। अतः चौधरी जी ने इसे भी अपने कार्य क्षेत्र में सम्मिलित कर लिया।

कठुआ में शुद्धि यज्ञ का विशेष आयोजन किया गया। वहां के साधारण सनातनी हिन्दू समाज और मुस्लमानों ने विरोध किया। स्थानीय वजीर बजारत ने समाज के चार कार्य कर्त्ताओं को सीमा से निर्वासित कर दिया। ये चारों पंजाब चले गए। वजीर बजारत की आज्ञा वापस ली गई। चारों कार्य कर्ता वापस आए। आयोजन और भी जोर से किया गया। सहस्रों दलितों को यज्ञोपवीत दिए गए। चौधरी रामभज दत्त ने सब को प्रमाण पत्र दिए। ये प्रमाण पत्र अब तक लोगों के घरों की शोभा बढ़ा रहे हैं। समाज की पाठशाला के मुख्य अध्यापक देव व्रत भी एक प्रमाण पत्र धारी सज्जन ही हैं।

यह शुद्धि क्रम तबसे जारी है। इस के साथ ही हरिजनों को कूपों से जल लेने, देव दर्शन करने, सहभोज तथा उन की शिक्षा के लिए प्रयत्न जारी हैं।

देव दर्शन फरमान —महाराजा हरिसिंह ने दलितों को मंदिर प्रवेश की आज्ञा दे दी कठूआ में मंदिरों के संचालक बज़िद थे कि दलित हरिजन केवल दूर से देव दर्शन कर सकते हैं। मंदिर के गर्भ गृह तक नहीं जा सकते। समाज ने दलितों का पक्ष लिया और अन्त में इस काम में पूर्णतया सफल हुआ।

ला० बिशन दास वकील को कठूआ बदर करना – कठूआ के बाज़ार में एक कूप बिल्ला शाह है। किसी ने इस में गाय की हड्डियाँ फेंक दीं। इस पर नगर में हड़ताल हो गई तनाव बढ़ गया। राजा अकरम खान वज़ीर वज़ारत ने ला बिशन दास वकील, प्रधान आर्य समाज को तत्काल कठूआ बदर कर दिया। वर्षा होते हुए भी वह रात को कठूआ से बाहिर रहे और दूसरे दिन जम्मू से नवां शहर चले गए।

वज़ीर वज़ारत के इस पग की सब अखबारों ने निन्दा की आर्य समाज ने इसे अपने लिए चुनौती समझा और इस का सामना करने के लिए तैयार हो गई। इस पर जम्मू दरबार ने इस आज्ञा को वाकस ले लिया।

वज़ीर वज़ारत चिढ़ गया। उस ने आर्य समाज के प्रधान ला० तेजराम के मुकदमों को खारज करना आरम्भ कर दिया। ला० तेजराम ने सारे मुकदमें अन्य वकीलों को दे दिए और ६ मास तक काम त्याग दिया मगर काम में डटे रहे।

वज़ीर वज़ारत को बदल दिया गया तो उन की आमदनी की कमी भी पूरी हो गया।

पाठ शाला —दलितों की शिक्षार्थ आर्य समाज में पाठशाला खोली गई। अब यह मिडल स्कूल है। मुख्याध्यापक मा० देवीदत्त इसी पाठशाला का विद्यार्थी है।

समाज भवन —अब यह भवन काफी विशाल है। कई कमरे, यज्ञ शाला

हाल जनेतघर, अतिथिशाला बनी हैं। समाज की ३२ दुकानें बनी हैं एक हजार के बगभग किराया की आय है।

कार्य — समाज के कुछ सदस्यों ने हैदराबाद सत्याग्रह है भी सक्रिय भाग लिया। मा० ज्ञान चन्द और मा० छज्जू राम जी को समाज की ओर से भेजा गया।

श्री मती चनन देवी जी ने हिन्दी सत्याग्रह में भाग लिया।

कठिनाइयां अधूतोद्धार कार्य में आर्य समाज के सदस्यों को काफी कठिनायों का सामना करना पड़ा। चौधरी लछमन सिंह, नवाब राम मुरड़ू तथा श्री ला० दरचन्द्र आदि का बहिष्कार किया गया मगर उन की दृढ़ता से सब कठिनाइयां दूर हो गई।

पदाधिकारी — इस समय मा० राजकुमार जी प्रधान हैं। मा० भगत राम जी मंत्री हैं। मा० राजेन्द्र नाथ जी स्कूल के प्रबन्धक हैं। ला० तेज राम जी वकील समाज का काम लगन से करते हैं मा० मुल्क राज जी मोरपुरी भी पूरे मनोयोग से कार्य करते हैं।

श्री कुलभूषण जी समाज की उन्नति में सक्रिय हैं। श्री कुलभूषण जी ने आर्य समाज को सब प्रकार से प्रगतिशील बनाने में श्री राज कुमार जी के साथ प्रशंसनीय कार्य कर रहे हैं।

पं० विष्णुदत्त का बलिदान — इस समाज के मन्त्री प० विष्णुदत्त जी का बलिदान इस समाज के लिए १९४७ की एक प्रेरणादायक घटना है। जब देश विभाजन के पश्चात् पाकिस्तानी आक्रमणकारी इस इलाका में हिन्दुओं को लूट-मार रहे थे, उनके घर ग्राम जला रहे थे तो पं० विष्णुदत्त उन की सेवा सहायता कार्य में लगे थे मुसलमानों के कब्जा में आ गए और मार दिए गए।

उस दिन महाराज हरि सिंह और उनके दीवान जस्टिस डा० मेहर चन्द जी दौरा पर कठुआ में थे घटना सुनकर महाराजा ने शव के संस्कार का व्यय अपने पास से कर दिया और मंत्री समाज के सेवाभाव व बलिदान की सराहना की।

आर्य-समाज बसोहली-इतिहास—बसोहली प्राचीन नगर है। कहा जाता है कि महाभारत काल के एक प्रसिद्ध अभियन्ता विश्वकर्मा ने इस की स्थापना की थी। अपने नाम पर इसका का नाम 'विश्वकर्मा स्थली' रखा जो बिगड़ कर 'बसोहली हो गया यह बड़ा सुन्दर रमणीक स्थान है। यह रियासत १५०० वर्ष तक स्वतन्त्र रही सन् १८४६ में अहदनामा अमृतसर से यह इलाका भी महाराजा गुलाब सिंह के अधीन हो कर जम्मू राज्य का अंग बन गया।

पं० गंगा राम जी विजयवाड़िया, ओवर सीयर, जिन्होंने अनाथालय खोलने और ओड जाति की शुद्धि से यश कमाया। ने यहाँ भी एक अनाथालय खोला ताकि अनाथ बच्चों की रक्षा - शिक्षा हो सके।

प्रादेशिक सभा के उपदेशकों के प्रचार से यहाँ आर्य समाज की स्थापना हुई। ला० देवी चन्द जी ने दयानन्द दलित उद्धार मंडल का एक प्रचारक स्थायी रूप से इस इलाका में रख कर प्रचार कार्य जारी रखा।

आर्य-समाज ऊधमपुर- महाराजा पृथ्वी राज की पराजय के पश्चात् राजपूताना में उथल-पुथल मची तो मेवाड़ के कुछ राजपूत देश छोड़कर इधर आ गए। उनमें से एक राजा विजयदेव था इसने अपने नाम पर जम्मू के पास 'बजालता' ग्राम बसाया। इसी का एक वंशज बिल्लो था इसने बिलवालता ग्राम बसाया। इसी का नाम बाद में महाराजा गुलाब सिंह के लड़के ऊधमसिंह के नाम पर ऊधमपुर हो गया। इलाका का नाम अब तक बिलवालता प्रसिद्ध है। यह नाम अपने संस्थापक राजा 'बिलो' का स्मरण करवाता है।

आर्य-समाज की स्थापना—भादों सम्वत् १९७८-७९ की बात है ला० जमन नाथ जी वकील मीरपुर से ऊधमपुर आकर वकालत करने लगे यहाँ पं० विजय रत्न जी पी. डब्लयू डी. में काम करते थे प्रहलाद भगत जी वकील भी आर्य - समाज के विचारों के थे। इन लोगों ने १९ भादों सम्वत् १९७९ को आर्य समाज के सत्संग का श्री गणेश किया इस काम के लिए बाज़ार में

एक दुकान किराया पर ली गई।

आर्य-समाज मन्दिर का निर्माण—सम्बत् १९८० में श्रीमती सुभद्रा देवी जी ने श्री प्रह्लाद भगत जी की प्रेरणा से अपने पति की स्मृति में समाज मन्दिर के लिए भूमिदान कर दी। इस पर समाज मन्दिर का हाल निर्माण हो कर सत्संग यहीं लगने लगे। रियासत में नए आर्य समाज की स्थापना न की जा सकती थी। इस अड़चन से बचने के लिए इस आर्य समाज को जम्मू आर्य समाज की शाखा घोषित किया गया। राय बहादुर बिन्द्राबन और श्री बिहारी लाल जी जज ने इसमें सहायता की। पाठशाला के लिए समाज के साथ ५५०० रुपये में भूमि खरीद की गई। दो दुकानें बाजार में दान में मिली। मेघों और राजपूतों के एक मुकदमे में ला० जगन्नाथ ने मेघों का पक्ष लिया। पैरवी की। मुकदमा जीतने पर मियाँ का बाग का एक भाग मेघों ने लाला जी को भेंट किया। यह उन्होंने समाज को प्रदान कर दिया। अब यह स्थान दयानन्द उद्यान के नाम से ज्ञात है।

कन्या पाठशाला—आज से लगभग ३० वर्ष पूर्व आर्य कन्या पाठशाला शिव रात्री को दयानन्द बोधोत्सव के दिन चालू की गई। इस का उद्घाटन श्री हरिश्चन्द्र जी विद्यार्थी से कराया गया। इस समय इसमें ४०० बच्चे शिक्षा ग्रहण करते हैं। यह विद्यालय दसवीं श्रेणी तक है श्री राज दुलारी जी मुख्याध्यापिका हैं। वे न केवल दृढ़ आर्य विचारों की हैं अपितु दोनों ओर से आर्य विचारों के कुलों से भी सम्बद्ध हैं।

ला० जगन्नाथ, ला० ढेरामल, ला० बद्रीनाथ तथा मीरपुर से आए अन्य बहुत से सज्जन यहाँ आर्य समाज का काम बड़ी लगन से करते हैं। उनमें वेदरत्न, विश्वबन्धु, वेदप्रकाश मीरपुरी, दीनानाथ, सत्यव्रत, खेमचन्द, ओमप्रकाश आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

दलितोद्धार कार्य—मेघोद्धार शुद्धि सभा स्यालकोट की सहायता से इलाका में शुद्धि कार्य का विस्तार हुआ। मेघ, डूम, बटवाल, जातियों को यज्ञोपवीत देकर हिन्दुओं के समान अधिकार दिलवाए गए। मन्दिरों में प्रवेश और कूपों से जल भरने के अधिकार प्राप्त करने में इनकी सहायता की गई।

बरयाल, काना, बाढ़या, और कई अन्य ग्रामों में इन के लिए पाठशालाएं चलाकर शिक्षा प्रदान करने का प्रबन्ध किया गया।

ग्राम हिन्दुओं से श्मशान में शव जलाने का भी झगड़ा था। इसमें उनकी सहायता करके उन्हें समान अधिकार दिलाया गया।

चन्देल राजपूतों की शुद्धि—१९४७ में देश विभाजन के समय यहाँ आस-पास बसे चन्देल राजपूत पाकिस्तान न जाकर हिन्दू बन गए और अपनी राजपूत बिरादरी में सम्मिलित हो गए। जब शेख अब्दुला रियासत का प्रधान मन्त्री बना तो उसने इन सब को पुनः मुसलमान बना लिया।

मीरपुर पर पाकिस्तानी अधिकार हो जाने पर ६०, ७० आर्य परिवार वहाँ से उजड़ कर यहां आ गए। ला० जगन्नाथ, ला० ढेरा मल तथा अन्य आर्य सज्जनों ने इनकी सहायता की। इन लोगों ने भी आर्य समाज की सेवा में हाथ बटाया। सब लोग कारोबार में लग गए और बस गए।

आर्य-समाज मीरपुर कालोनी

(ईश्वरदास वेद भवन)—सरकार द्वारा प्रदत्त भूमि में मीरपुर के विस्थापित परिवारों की नई बस्ती बस गई। इस में भी एक आर्य समाज की स्थापना हो गई है। ला० ईश्वरदास जी मीरपुरी को पत्नी के दान प्रदत्त मकान में "ईश्वरदास वेद भवन" के नाम से आर्य समाज का निर्माण किया गया है। यहाँ दैनिक सत्संग के अतिरिक्त शनिवार को स्त्री आर्य सत्संग भी लगता है।

आर्य-समाज बटोत

ऊधमपुर समाज की शाखा रूप—बटोत स्वास्थ्य प्रद स्थान है। प्रतिवर्ष गर्मियों में कई आर्य परिवार यहाँ आते हैं। ला० राम रक्खामल स्याल-कोटी ने यहां एक मकान बना रखा है अतः यहाँ भी अस्थायी रूप से आर्य समाज ऊधमपुर की शाखा के नाम से आर्य सत्संग गृह की स्थापना हो गई।

ला० राम रक्खामल और ला० जगन्नाथ वकील ऊधमपुर के नाम से समाज के लिए एक भूमि का टुकड़ा खरीदा गया, पर समाज मन्दिर का निर्माण न हो सका।

यह भूमि ५००० रुपये में बेच कर राशि सार्वदेशिक सभा, दयानन्द भवन देहली के कोष में जमा करा दी गई है।

आर्य-समाज रामनगर—जनवरी सन् १९२३ में महाशय रामचन्द्र का बुटहरा में बलिदान हुआ इस बलिदाद के फल स्वरूप आर्य समाज के प्रचार और दलित उद्धार कार्य में प्रगति आ गई। प्रादेशिक सभा, पंजाब, आर्य प्रतिनिधि सभा तथा दयानन्द दलितोद्धार मंडल के प्रचारक स्थान-स्थान पर जा कर प्रचार का विस्तार करने लगे।

इसी समय रामनगर में भी आर्य समाज की स्थापना हो गई आरम्भ में इसे भी आर्य समाज ऊधमपुर की शाखा घोषित किया गया ताकि सरकारी आज्ञा की कोई अड़चन न हो सके।

उस समय यहां ठा० धनवन्तर सिंह रेंज ऑफिसर, ला० सन्तराम अर्जी-नवीस श्री मंगतराम जी, पूर्वा. ला० ढेरामल जी वकील, आदि ने आर्य समाज का आरम्भ किया।

पं० मनसाराम जी को ब्रह्म विद्यालय लाहौर में शिक्षा दिलवाकर आस-पास इलाका में संस्कार आदि कराने पर नियुक्त किया गया सेरवाला ग्राम में दलितों की शिक्षा के लिए पाठशाला खोली गई पं० मनसाराम अध्यापक ने बच्चों के नामों को पुनः बदलकर नाम करण संस्कार पुनः कर दिया। इस से उनका मनोबल बढ़ गया।

भगत ईश्वर दास जी नन्दा—आप महात्मा हंसराज जी के कुटुम्ब थे। इनके लड़के के साथ महात्मा जी की लड़की ब्याही थी आप यहां मुनसिफ थे। सदा आर्य समाज के काम में सहायता प्रदान करते रहे।

गुलाम मुहम्मद मुन्सिफ से झगड़ा—आर्य समाज का जलसा था।

मुन्सिफ गुलाम मुहम्मद ने दफा १४४ लगा कर जलसे पर रोक लगा दी और स्वय आकर जलसा स्थान पर बैठ गया। ठाकुर धनवन्तर सिंह आदि ने इसका विरोध किया। काफी गर्मा - गर्मी हो गई उसकी आज्ञा के विरुद्ध हाई-कोर्ट से मन्सूखी का हुक्म लिया गया। जलसा और शास्त्रार्थ धूम-धाम से हुए।

विधवा विवाह एक ब्राह्मणी विधवा का सम्बन्ध एक मुसलमान कोर्ट इन्स्पैक्टर से था उसके मुसलमान बन जाने का भय था। सनातनियों को समझा बुझा कर आर्य समाज ने उसका पुनर्विवाह कर दिया। फिर भी सनातनियों का एक पक्ष विरोध करने लगा। तनाव बढ़ गया। शास्त्रार्थ भी हुआ अन्त को समय पाकर यह बात शान्त हो गई।

प्रचार यहाँ प्रचार और शास्त्रार्थ कई बार हुए। काफी रौनक होती रही। एक बार मिडल स्कूल के हैडमास्टर पं० परसराम (पं० लोकनाथ वकील के बहनोई) जो सनातन धर्मी थे। मध्यस्थ बने। आपने निर्णय दिया कि सनातनी पक्ष हार गया है। उत्तर नहीं दे सका।

आर्य-समाज का निर्माण—आर्य समाज के लिए भूमि नीलामी में खरीदी गई। इस पर आर्य समाज का मंदिर बनाया गया। इस समय ला० देसराज वकील प्रधान, और सन्त राम जी मन्त्री हैं। बा० बद्रीदास भी यहां डाकखाना में रहे और काफी सहयोग देते रहे।

आर्य-समाज रामबन व मकरकोट (प्रदेश की साम्प्रदायिक परिस्थिति)—पोगल परिस्तान का सुन्तर रमणीक पर्वतीय प्रदेश रामबन और रामसू से ऊपर पहाड़ में है। इस ओर जाने को सड़कों और अच्छे ग्रामों का अभाव है सन् १९४० - ४६ के मध्य में तो यह प्रदेश एक अलग - थलग इलाका था अब्दुल सुबहान नाम का एक कट्टर मुस्लिम लीगी मौलवी यहां आया। उन दिनों मुसलमानों को हिन्दू जनता के विरुद्ध भड़काना भी इसलाम की सेवा

माना जाता था दैवयोग से ऊधमपुर का तहसीलदार भी मुसलिम लीगी था। मौलवी अब्दुल सुबहान के साथ इसका जोड़ था। दोनों एक नीति पर चलते थे इस सारे पर्वतीय प्रदेश में हिन्दू १५००० के लगभग थे। मुसलमानों की संख्या बहुत अधिक थी। मुसलमानों में उत्तेजना फैलने से हिन्दू जनता भयभीत हो गई। प्रसिद्ध हिन्दुओं पर झूठे मुकदमें बनाकर तहसीलदार के सामने बुलाया जाने लगा। दूर-दूर से आने जाने में और बार-बार तारीखें डालकर उन को तंग किया जाने लगा।

प्रादेशिक सभा को सहायता का आह्वान—किसी प्रकार इस विकट परिस्थिति की सूचना श्री लाला खुशहाल चन्द जी प्रधान प्रादेशिक सभा, लाहौर, भाई परमानन्द जी प्रधान पंजाब हिन्दू महासभा और ला० देवी चन्द जी होश्यारपुर को पहुँच गई। परिणाम स्वरूप सारी स्थिति को सुधारने के लिए विचार-विमर्श हुआ और कार्य-कर्त्ताओं को इस इलाका में भेजा गया।

प रामचन्द्र जी अभय, पं० फकीर चन्द जी और श्री रामप्रसाद जी ने इस प्रदेश में भ्रमण किया। पं० रामप्रसाद जी ईसाई पादरी रह चुके थे उन को सपरिवार शुद्ध किया गया था जम्मू डी. ए. वी. हाई स्कूल में उनको शिक्षक नियुक्त किया गया था। इन प्रचारकों ने हिन्दू जनता का मनोबल बढ़ाया उनको प्रोत्साहन दिया सहायता की आशा दिलाई। लाला खुशहाल चन्द जी प्रधान प्रादेशिक सभा ने स्वयं इस प्रदेश का दौरा किया।

ऊधमपुर में चलाए जा रहे झूठे अभियोगों का सारा तारतम्य डिप्टी कमिश्नर तथा अन्य पदाधिकारियों के सन्मुख रखा गया। इस का परिणाम यह हुआ कि सारे मुकदमे झूठे साबित होकर खारिज हो गए। तहसीलदार महोदय को तबदील कर दिया गया।

इस से इस प्रदेश की हिन्दू जनता को राहत मिली। उनको विश्वास हो गया कि उनकी पीठ पीछे भी हिन्दू आर्य शक्ति विद्यमान है। संकट के समय उनकी रक्षा हो सकती है।

रामबन के आर्य समाज को पुष्ट किया गया। मकरकोट में भी आर्य समाज की स्थापना की गई। मन्दिर का निर्माण किया गया। एक मिडल स्कूल

खोला गया। एक औषधालय का भी संचालन किया गया। इस प्रकार इस क्षत्र की पिछड़ी हुई हिन्दू जनता को संगठन केन्द्र में एकभूत होने का अवसर मिला।

१९४७ की राजकीय उथल-पुथल में यह सारा काम समाप्त होगया जो अब तक पुनः नहीं किया जा सका है।

आर्य समाज रियासी-नगर की स्थापना—जम्मू से चार मील दूर बजालता ग्राम का संस्थापक मेवाड़ देश का एक राज कुमार राजा विजय देव था। इस के एक लड़के बिल्लू ने 'बिलवालता ग्राम बसाया था जो बाद में ऊधमपुर बना। दूसरे लड़के रक्षपाल ने अपने नाम पर 'रियासी' ग्राम बसाया। यही रियासी बाद में जागीर और स्वतन्त्र राज्य बन गया। इसे महाराज गुलाब सिंह ने जम्मू राज्य का अंग बनाया।

आर्य समाज की स्थापना—सन् १९०२-३ की बात है। उस समय रियासी नगर का एक बालक हरिराम पाँचवी श्रेणी में पढता था यह लाहौर गया। उस समय वह डा० चिरंजीव लाल भारद्वाज के सम्पर्क में आया। डाक्टर जी ने उसे उर्दू सत्यार्थ प्रकाश की एक प्रति दे दी। इस के पढ़ने से हरिराम के विचार बदल गए। उस ने ठाकर जी वह नदी से लाया था पुनः नदी में फेंक दिया तमाकू पीना आदि व्यसन त्याग दिए। आर्य समाज के प्रचार में लग गया।

इन्ही दिनों एक मुसलमान फकीर लावारस मर गया। उस का स्थान १५० रुपये में नीलाम हो गया। यह इस युवक ने खरीद लिया। रुपया पास न था। अपने कानो की सोनें की नन्तियाँ बेच दीं और कुछ रूपया घर से चुरा लिया।

समाज की स्थापना न की जा सकती थी। अतः इस ने इसका नाम धर्मशाला प्याऊ रखा। पानी पिलाने का प्रबन्ध कर दिया गया।

बाद में इसका नाम बदल कर आर्य समाज रखा गया। हिन्दू जनता बिगड़ गई। पथराव हुआ। हरिराम का बहिष्कार कर दिया गया। घर से भी निकाला गया। खाना भी मांग कर खाता रहा। पर कर्तव्य कर्म न छोड़ा। शहर त्याग कर जम्मू चले आना पड़ा।

कुछ समय पश्चात् आर्य समाज का स्थान दीवान फतहचन्द की कृपा से वापस मिल गया। विरोध कम हो गया। श्री हरिराम जी का जीवन वृत अलग आगे एक अध्याय में वर्णित है। पत्नी की मृत्यु पर आप ने वानप्रस्थ ले लिया

स्वामी सिया राम जी—आप वीतराग सन्यासी विद्वान थे। हरिराम जी आप के सम्पर्क में आए। वानप्रस्थ का दीक्षा ली सध्या हवन आदि इन की कृपा से ही सीखा। जीवन बदल गया।

आर्य समाज मन्दिर का निर्माण—श्री नरसिंह दयाल जी वैद्य इस समय समाज के प्रधान हैं। आप आर्य समाज के संस्थापकों में से हैं। ला० दीनानाथ जी भट्टे वाले, और श्री चूनी लाल जी ने समाज के निर्माण में काफी सहयोग दिया है।

आर्य समाज का उद्घाटन श्री ला० वृन्दावन जी मुनसिफ (जम्मू निवासी) द्वारा सन् १९१३-१४ में कराया गया था समाज का मंत्री डा० कुलदीप कुमार है। यह आर्य वीर दल पुरानी मंडी जम्मू में भी कार्य करता रहा हैं। आप बीकानेर राज्य में भी रहे हैं।

गुरू कुल की स्थापना—वानप्रस्थी हरिराम जी के प्रयास से एक गुरू कुल की भी स्थापना की गई थी। प० दया राम जी शास्त्री ऊधमपुर निवासी यहां अध्यापन कराते रहे। यह संस्था ३½ वर्ष जारी रह कर बन्द हो गई। यह गुरू कुल कालिका देवी के मन्दिर में खोला गया था: प० गोबिन्द दास जी भी अध्यापन कार्य यहां करते रहे।

हैदराबाद सत्याग्रह—सन् १९३९ में हैदराबाद के सत्याग्रह में भी रियासी नगर ने भाग लिया। श्री ला० नरसिंह दास जी वैद्य श्री परस राम जी, श्री अमरनाथ जी चोपड़ा तथा श्री मणीराम जी सत्याग्रह में सम्मिलित हुए।

वानप्रस्थ आश्रम—श्री वानपस्थी हरिराम जी ने अंजी नदी तट पर कुटिया

बनामर कई वर्ष यहां निवास किया। यहाँ ही कुछ काल स्वामी शान्तानन्द जी, ला० अमरनाथ जी, गुजरांवालया तथा श्री तुला राम जी भी रहे।

शुद्धि—इस समाज के प्रयत्न और पौणी निवासी ला० संसार चन्द तथा अन्य सहयोगियों के कार्य और जम्मू समाज की सहायता से पौणी में एक विशाल शुद्धि यज्ञ किया गया। इस से इस इलाका भर में दलितोद्धार का प्रचार हुआ। सनातनियों, राजपूतों तथा ब्राह्मणों में विशेष उत्तेजना फैली। झगड़े के भय के कारण पोलीस दल का एक बड़ा कैम्प भी यहाँ लगा।

लगभग २०,००० जनता के समारोह में विशाल शुद्धि यज्ञ सम्पन्न हुआ। स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी अध्यक्ष थे। आपने आदि शंकराचार्य की नकल में यज्ञ के पश्चात् शंखनाद से दलित जन समूह को शुद्ध किया। सब को यज्ञोपवीत देकर द्विज की पदवी प्रदान की।

आर्य समाज भद्रवाह, पूर्व इतिहास—बिलावर के राजा भोज पाल के एक पुत्र राधक ने इस प्रदेश में अपना शासन जमाकर भगवती भद्रकाली का मन्दिर बनवाया। उसी समय उसके यहाँ लड़का उत्पन्न हुआ। इसका नाम भद्रपाल रखा गया। इन दोनों की यादगार में इस ग्राम का नाम भी 'भद्र' रखा गया, जो बाद में भद्रवाह बन गया।

यह नगर नीरू - नदी पर बसा है। यह नदी कैलाश पर्वत से निकलती है। वहां कैलाश कुंड, बासुकी कुंड, नाग कुंड आदि स्थान प्रसिद्ध तीर्थ हैं।

आर्य समाज की स्थापना— सम्बत् १९८१ - ८२ में प० रामस्वरूप जी शान्त और सालगराम जी भजनीक सभा (प्रतिनिधि सभा पंजाब) की ओर से प्रचार करने आए। उनके दो बार आने से यहां वातावरण तयार सा हो गया। परिणाम स्वरूप सबत् १९८३ में आर्य समाज की स्थापना हो गई। आरम्भ में बाजार में एक दुकान किराया पर लेकर साप्ताहिक सत्संगों का क्रम जारी किया गया। एक वर्ष पश्चात् सम्बत १९८४ में नगर से बाहिर जमीन खरीदी गई और समाज मन्दिर बनाया गया। समाज के आगे बहुत बड़ा गढ़ा था। सम्बत् १९८५

में अहालया नदी में बाढ़ आ गई। नगर की बड़ी हानि हुई पर समाज के आगे का गर्त भर गया और स्थान समतल हो गया।

संस्थापक— सर्व प्रथम प्रधान श्री परस राम पटवारी थे और मन्त्री उस समय श्री बद्री नाथ पोस्ट मास्टर थे। उस समय के समाज के कार्य-कर्ताओं में श्री मनोहर लाल कोतवाल (पुस्तकाध्यक्ष), डा० हरिश्चन्द्र जी सुपुत्र श्री दास राम मलिक जो उस समय यहां सरकारी डाक्टर थे, श्री लक्ष्मी राम कोतवाल, श्री बेली राम कोतवाल, श्री कांशी राम जी कोतवाल, श्री लाल चन्द जी ठेकेदार, श्री रामधन जी कोतवाल (डडी निवासी) थे। श्री कुंज लाल जी जो बड़े स्वध्याय प्रिय व्यक्ति थे ने अपनी ज़मीन बेच कर भाई के नाराज़ होने पर भी वेद खरीद लिए। प्रचार की लगन थी। सेवा का भाव था। स्वामी दर्शनानन्द के ट्रैक्ट मंगवाकर बाँटा करते थे और ग्राम-ग्राम में प्रचार करते थे। अन्त समय अपने निजी पुस्तकालय की १००० पुस्तकें आर्य प्रतिनिधि सभा जालन्धर को दे गए।

आर्य समाज द्रांगा—(तहसील भद्रवाह)-यहाँ आर्य समाज की स्थापना सम्वत् २०१३ तदनुसार सन् १९५६ में हुई। म० शिवशरण जी म० राम चन्द्र जी श्री अमीर चन्द जी, और श्री बंसी लाल जी तथा श्री सहज राम जी को स्थापना तथा संचालन का श्रेय प्राप्त है। इस इलाका में भूत-प्रेतों में विश्वास छूत-छात, पशु बलि, मूर्ति पूजा, नाग पूजा, आदि की प्रथाएं बड़े जोरों पर थीं जब आर्य समाज का थोड़ा बहुत साहित्य इन सज्जनों ने पढ़ा तो इन कुरीतीयों के खडन का भाव जागृत हुआ। उसी का फल आर्य समाज की स्थापना है।

उस समय भी म० शिवशरण जी प्रधान और बंसी लाल जी मन्त्री हैं। दोनों सज्जन अनथक कार्य कर्त्ता हैं।

आर्यसमाज भद्रवाह (चालू) प्रधान—कोतवाल दयाकिशन जी,

मन्त्री—स० सुरजीतसिंह जी (मुख्याध्यापक)

कोषाध्यक्ष—भगत अमीर चन्द जी

पुस्तकाध्यक्ष—श्री मनोहर लाल जी कोतवाल।

आर्यसमाज का काम—१ आर्य समाज के प्रचार और दलितोद्धार के काम से इस तहसील के सब दलितभाई 'आर्य' बन गए। अब तक सब इस नाम से जाने जाते हैं। चाहें अब हरिजन नाम भी प्रयोग में आने लगा है। आरम्भ में छुआछात का बहुत जोर था। मगर अब यहां यह बला नाम को भी नहीं है। सब दलितों से सब हिन्दू समान भाव से बर्ताव करते हैं।

यज्ञोपवीत संस्कार की दक्षिणा का १ (एक) रूपया समाज के लिए लिया जाता था। इस फंड के ११०० रूपये एक बार आर्य प्रतिनिधि सभा को भेजे गए थे दलितों के यज्ञोपवीत की उस काल की यह संख्या थी।

मौलाना सत्यदेव का आगमन—एक अहमदी मौलवी ने यहां आ कर हिन्दू धर्म पर आक्षेप किये। इस पर मौलाना सत्यदेव जी पधारे। आपने मुसलमान मौलवियों से कई शास्त्रार्थ किए और उन का मुख बन्द कर दिया। आप कई बार यहां आए।

भाई परमानन्द जी प० मनसा राम जी वैदिक तोप, महता जय मुनि जी तथा अन्य उपदेशक भी यहां आते रहे हैं।

आयुर्वेद औषधालय—एक बार श्री बाबा गुरू मुख सिंह जी भी इधर आए। आप यहां जड़ी-बूटियों के अनुसंधान का प्रबन्ध करना चाहते थे। इस लिए आप के दान से एक आयुर्वेद औषधालय की स्थापना की गई। यह संस्था २ वर्ष चली।

शुद्धि कार्य—एक विधवा चदी देवी का एक मुसलमान से सम्बन्ध हो गया। वह चम्बा चली गई और मुसलमान बन गई। आर्य समाज ने १८ वर्ष पश्चात् उसे चम्बा से लाकर बच्चों सहित शुद्ध कर लिया।

आज से तीन वर्ष पूर्व पास के एक ग्राम में एक स्त्री, एक युवक, और उन के

साथ कुछ और व्यक्ति मुसलमान बन गए। ये सब हरिजन थे। जम्मू में सूचना भेजने पर श्री हरीशचन्द्र जी विद्यार्थी और श्री सत्य प्रकाश जी आनंद जम्मू से यहां आए। साथ में जाकर प्रयत्न कर के सब को वापस लिया गया। गीता भवन में सब को शुद्ध कर लिया गया। इस पर मुसलमानों ने मसजिद में सभा कर के काफी धन जमा कर के उन को लालच दिया। कई सहभोजों पर उन को बुलाया पर उन की दाल न गली।

नोट—भद्रवाह महाराजा हरि सिंह की जागीर थी। उन के कार्य कर्ता (बेकफील्ड) की आज्ञा से यहां समाज बना था। वरन यहां समाज बनाना मना था।

अन्य कार्य—समाज मंदिर में योगासन शिक्षा का क्रम भी कुछ काल तक चलता रहा।

श्री सुरजीत सिंह जी जम्वाल अच्छे कवि हैं। अपने एक साथी वैजनाथ के साथ ग्रामों में फिर कर प्रचार किया करते थे। ये अब समाज के मंत्री हैं। समाज के लिखित प्रचार में बड़ी रूची लेते हैं। इसी प्रकार म० फकीर चन्द जी भी आर्य समाज के पत्रों द्वारा प्रचार कार्य करते हैं। कोतवाल हरीलाल जी (कोतवाल दया किशन के पिता) भी प्रचार में बहुत रूची रखते थे।

आर्य समाज किश्तवाड़ - इतिहास भूगोल—किश्तवाड़ का प्राचीन नाम समर्थगढ़ था। घना जंगल था। यह तवाड़ हो कर झील बन गया। इसका नाम गोवर्धन सर था। पहाड़ के फटने से पानी बह गया। यहां पुनः जंगल हो गया। इस में हाड़ी के वृक्ष बहुत थे। इसका फल 'हाड़यां' अमृतसर पंजाब जाती थीं। पंजाब में इसका नाम किशटा था। अतः यह इलाका भी किशटवार या किश्तवाड़ (किशटा का आहाता) पड़ गया। यहां देर तक हिन्दू राजा राज्य करते रहे। औरंगजेब के समय उसकी आज्ञा से १६६४ में यहां के राजा को मुसलमान बनाया गया। आबादी को भी जबरदस्ती मुसलमान बना लिया गया। जम्मू से २०० मील दूर पहाड़ों से घिरी दरया चिनाब के तट पर ५४०० फुट ऊंची यह सुन्दर घाटी है।

आर्य समाज की स्थापना—सम्बत् १९८१ - ८२ में भाई परमानन्द जी और धर्म वीर जी यहां पधारे। उन्होंने आर्य समाज का प्रचार किया। सम्वत् १९८२ में पास के एक ग्राम सिंघापुर के दलित मुसलमान बन गए श्री साईं दास जी जो डिंगा सिंह कम्पनी के प्रबन्ध कर्ता थे और होश्यार पुर के निवासी थे, द्वारा यह सूचना लाला देवीचन्द जी को मिली वह अपने उपदेशक चेतराम के साथ यहां आए और आर्य समाज की स्थापना की। वह तीन बार यहां चेत-राम के साथ आए। चेत राम को मडल की ओर से यहां स्थिर उपदेशक रखा। वे सिंघपुरा के बहुत से परिवारों को वापस लेने में सफल हो गए।

आर्य समाज मन्दिर—सम्बत् १९९९ में यहाँ आर्य समाज मन्दिर बनाया गया। राय बहादुर जोधामल जी ने २५०० रुपया दान दिया। लकड़ी भी दा। एक मन्दिर तयार किया गया।

संस्थापक—आर्य समाज के संस्थापकों और कार्य कर्त्ताओं में निम्नलिखित सज्जनों के नाम उल्लेखनीय हैं—१. महता नन्द लाल जी। आप आयु भर आर्य समाज का काम करते रहे। आप का सुपुत्र श्री ओम महता इस समय केन्द्र में मन्त्री हैं। आप का पत्नी श्रीमती रत्ना देवी जी समाज के कामों में बहुत रुचि रखती हैं २. श्री नन्द लाल जी गुरु आप सन्यासी बन गए थे। आप अन्त समय तक आर्य समाज का काम करते रहे। ३ श्री भगत राम जी ४. श्री तारा चन्द जी, ५ भगत आसा राम जी, श्री हरिलाल ज्योतिषी, ७. ला० तेज राम शाह जी, ८. श्री साईं दास जी। ९ श्री जगत राम जी आर्थन आप मेघ जाति से थे समाज ने आप की शिक्षा में सहायता की आप राज्य विधान सभा के ११ वर्ष तक सदस्य रहे हैं १०. श्री त्रिलोकी नाथ जी बजाज आर्य समाज के मन्त्री रहे।

कष्ट सहन—श्री तेज राम शाह ने दलित बिरादरी के साथ सहभोज किया आर्य समाज ने इस में भाग लिया। इन को बिरादरी से बहिष्कृत कर दिया गया श्री महता नन्दलाल जी के घर वालों को भी इसका काफी कष्ट सहन करना पड़ा पर इस से कोई भी समाजी विचलित न हुआ।

प्रचार—आर्य समाज के वार्षिक उत्सव पुर रौनक होते रहे। मौलाना सत्यदेव

जी तथा अन्य प्रचारक आते रहे। स्वामी मुद्धानन्द जी प्रतिवर्ष यहाँ आते रहे। उन्हों ने पाडर तक जाकर आर्य समाज का प्रचार किया। इस समय इधर आर्य समाज के प्रचार की आवश्यकता है।

आर्य समाज मीरपुर (पाकिस्तान)—जम्मू - कश्मीर राज्य में एक समय आर्य समाज की स्थापना करने की आज्ञा न थी कई समाज अन्य समाजों की शाखा रूप में स्थापित हुए थे। कश्मीर में पं० गणपति शर्मा ने जब पादरी जानसन को परास्त कर के भगाया तो महाराजा बहादुर प्रताप सिंह जी प्रसन्न हो गए। इस से आर्य समाज की स्थापना और प्रचार का मार्ग प्रशस्त हो गया। यह घटना सन् १९५३ की है।

मीरपुर में आर्य समाज—इस सुअवसर से लाभ उठा कर मीरपुर के कुछ उत्साही नवयुवकों ने आर्य समाज की स्थापना की इन में मुख्य रूप से—श्री पं. रघुनाथ जी प्रथम प्रधान थे ला० दीवान चन्द जी वकील मन्त्री थे। म० कर्मचन्द जी वकील ला० रामभेजा मल जी, ला० जगन्नाथ जी सराफ, ला० बाल मुकुन्द, ला० काहन चन्द, श्री चूनी लाल, ला० ठाकुर दास, ला० फेरू मल ला० रूप चन्द, बालाराम जी, श्री दीवान चन्द, श्री तीर्थ राम, श्री रामनाथ वकील, श्री जगत राम, श्री क्षेम चन्द, ला० अमरनाथ वकील और श्री वेणी गुप्त म० सन्तरामजी व श्री सोहन लाल जी सम्मिलित थे।

संघर्ष—इस समाज के सदस्यों को अपनी बिरादरी और घर वालों से भी संघर्ष करना पड़ा। ला० कर्म चन्द जी को पिता ने घर से भी निकाल दिया पर सब लोग डटे रहे और अन्त में सफल हुए। आर्य समाज इस प्रदेश में सभी सुधारों का केन्द्र बना और दूर - दूर तक इसका प्रभाव फैला।

शुद्धि कार्य—इस प्रदेश में विशिष्ट जाति के लोग काफी संख्या में बसते हैं। इनका रहन - सहन हिन्दवाना होने पर भी इन्हें अछूत माना जाता था। जब पंजाब में पं० गंगा राम, लाला गंगाराम पुरी, म० मुन्शी राम और पं० रामभजदत्त चौधरी ने दलितोद्धार कार्य को सामूहिक रूपदियातो मीरपुर पर भी उस का प्रभाव पड़ा।

प्रथम बार आर्य समाज मन्दिर में ५० विशिष्टों को शुद्ध कर यज्ञो - पवीत दे कर द्विज की पदवी देकर समान अधिकार दिये गए। उनके साथ सहभोज में आर्य लोग सम्मिलित हुए। इस पर हिन्दू जन्ता तथा बिरादरी वालों ने घोर विरोध किया। सब आर्य परिवारों का सामाजिक बहिष्कार किया गया। नाई, धोबी, कहार, ब्राह्मण आदि ने इनका काम करना बन्द कर दिया।

नवयुवक श्री जगत राम जी और क्षेम चन्द जी आदि स्वयं सेवक घर का पानी भरते रहे, परन्तु एक भी आर्य समाजी पथ भ्रष्ट न हुआ। परिणामतः अन्त में बहिष्कार का यह शस्त्र विफल हो गया और स्वयं बहिष्कार करने वाले इस कार्य में सहयोग देने पर बाध्य हो गए।

शिक्षा प्रचार—आरम्भ में श्रीमती सीता देवी वानप्रस्थ और महासती माला दीवान देवी जी ने कन्याओं की शिक्षा का कार्य आरम्भ किया। आर्य समाज ने कन्या पाठशाला की स्थापना की। इन बहनों ने इस लगन से कान्याओं में वैदिक धर्म के संस्कार डाले कि यह पाठशाला आदर्श संस्था बन गई।

ग्रामों में भी शिक्षा का प्रचार करने के लिए चाही ग्राम, कांगड़ी - भज - वाल, बुद्धल आदि स्थानों पर पाठशालाएं खोली गईं।

अन्य आर्य समाजों से सम्पर्क व सहायता—ज़िला की केन्द्रीय समाज होने के नाते इस का सम्पर्क और सहायता का हाथ अन्य समाजों को भी प्राप्त रहा। इस प्रकार आय समाज पुण्छ, आर्य समाज कोटली, खूई रट्टा, राजौरी, नौशहरा, भिम्बर तथा आस - पास की समाजों को सदा सहयोग प्राप्त होता रहा और उनके साथ मिल कर प्रचार कार्य किया जाता रहा।

प्रचार—नगर में तथा इस प्रदेश में आर्य समाज के प्रचार का डंका बजा। प्रादेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, पजाब आर्य प्रतिनिधि सभा, दलितोद्धार मंडल होश्यारपुर तथा आर्य समाज की अन्य प्रचारक संस्थाओं ने इस समाज को प्रचार कार्य में भरपूर सहयोग प्रदान किया।

पं० बुद्धदेव जी मीरपुर, पं० बुद्धदेव जी विद्यालंकार, पं० रामचन्द्र जी शास्त्री, पं० राम गोपाल जी शास्त्री, कुंवर सुखलाल जी, ठाकुर अमर सिंह जी, पं० भगवत् दत्त पं० राजाराम, आचार्य राम देव (स्वामी सत्यानन्द जी), स्वा० दर्शनानन्द जी, स्वा० अनुभवानन्द जी, आचार्य मुक्तिराम जी, पं० चमूपति जी, श्री चिरंजीत लाल प्रेम, भाई परमानन्द जी, स्वामी वेदानन्द जी तथा दयानन्द कालिज के मान्य प्रोफेसर गण सदा इस समाज केन्द्र को योगदान देते रहे।

ग्राम प्रचार- सभाओं के स्थायी प्रचारकों के अतिरिक्त म० जगत राम जी, तथा प० जगन्नाथ जी भी ग्रामों में जा जा कर प्रचार करते रहे।

दलीतों को यज्ञोपवीत—आर्य समाज की ओर से दलितों को यज्ञोपवीत दिया जाता था। इस से उनका मनोबल बढ़ जाता था। वे राजपूत और ब्राह्मणों से समान रूप से व्यवहार करने लग जाते थे। फिर वे बेगार भी न देते थे। इस से ऊंची जाति के हिन्दू उन पर अत्याचार करते थे। मुसलमान भी इन हिन्दुओं का साथ देते थे।

तराल ग्राम में इसी प्रकार यज्ञोपवीत धारी विशिष्टों—फिरंगीमल व गोपी चन्द्र को पकड़ लिया गया। उनके कपड़े उतार कर गर्म लोहे के छड़ से उन के शरीर पर यज्ञोपवीत का निशान बनाया गया आर्य समाज ने फौजदारी दावा किया। अदालत से दो व्यक्तियों को ६, ६ मास और एक को कारावास का दंड मिला। इस अत्याचार और उसके प्रतिकार का परिणाम यह हुआ कि ग्रामों में दलितोद्धार की लहर वेगवती हो गई।

सन् १९३१ के बलवे—सन् १९३१ में शेख अब्दुल्ला के साम्प्रदायिक प्रचार तथा मुस्लिम कान्फ्रेंस के कार्य-कर्त्ताओं की उत्तेजना से इस प्रदेश में हिन्दुओं को कष्टों का सामना करना पड़ा। इस समय पंजाब की आर्य समाजी संस्थाओं तथा हिन्दू सभा आदि ने पुष्कल सहायता दी। ला० देवी चन्द जी ने अपने मंडल के उपदेशकों को इसी काम पर लगाया। स्थानीय समाज के सदस्यों विशेषकर महाशय बालाराम जी ने इस समय विशेष कार्य किया।

सन् १९४७ का देश विभाजन- पाकिस्तानी आक्रमण कारियों ने

नगर का घेराव किया नगर के नव युवकों ने संगठित हो कर उन का सामना किया और लगभग दो मास तक नगर की रक्षा की। सहायता के लिए केन्द्रीय सरकार पर ज़ोर डाला गया। परन्तु मीरपुर जाने वाली सेना की टुकड़ी को उस समय के प्रधान मंत्री शेख अब्दुल्ला ने रोक कर कशमीर भेज दिया। फलस्वरूप नगर पर पाकिस्तानियों का अधिकार हो गया। लगभग १५००० हिन्दू मारे और लूटे गए जो बच सके उन्हें अली बेग कैम्प में रख कर निकाला गया। कई प्रतिष्ठित लोगों का इस अवसर पर देहान्त या बलिदान हुआ म० जगत राम जी भी उसी समय मारे गए। अली बेग का कैम्प एक बूचड़ खाने से कम न था इस में सौ सौ प्रमुख व्यक्तियों को छांट कर कुल्हाड़ों से काटा जाता था। जो बचे उन को रेड क्रास सोसाइटी ने निकाला, जब कि उन में से लगभग १५०० मारे जा चुके थे।

मीरपुर के विस्थापित कहते हैं की एक ग्राम में गुरू नानक जी बड़ी सेवा हुई तो उन्होंने अशीर्वाद में कहा की ग्राम उजड़ जाय। भावना यह थी कि ये विस्थापित लोग अन्य स्थानों पर शुभ कार्य करेंगे। यही हाल मीरपुर का हुआ। यहां भी यह आर्य परीवार गए वहां ही आर्य समाज की स्थापना हुई। समाज के प्रचार कार्य में प्रगति आई।

जम्मू में आर्य समाज कोटली कालोनी और बख्शी नगर, ऊधमपुर समाज और ईश्वरदास वेद भवन, पठानकोट का माडल टाउन और आर्य समाज दिल्ली अमर कालोनी का आर्य समाज तथा अन्य कई स्थानों पर मीरपुर के आर्य समाजियों ने समाज का झंडा गाड़ा हैं। पूर्वी अफ्रीका, नैरोबी आदि नगरों तक इनका क्षेत्र है। बम्बई में चेम्बूर आर्य समाज मंदिर का श्रेय भी इन को है।

इन सब व्यक्तियों का विशेष परिचय अलग अध्याय में दिया गया है।

महासती माता दीवान देवी का बलिदान—जब मीरपुर पर पाकिस्तानी अधिकार हुआ तो माता दीवान देवी जी ने अपनी आठ सहयोगी देवियों के साथ अपना बलिदान दिया। उन्होंने स्वयं ही श्री बाल कृष्ण को प्रेरित

और वचन बद्ध कर इन देवियों ने अपने गले पर तलवार चलवाकर अपना बलिदान करवा दिया।

इस घटना का विस्तृत परिचय अन्यत्र दिया गया है।

जम्मू का आर्य समाज मीरपुर कालोनी या बच्ची नगर— यह इसी आर्य समाज का नाम लेवा है।

आर्य समाज कोटली— सम्वत् १९७५ आषाढ़ पांच (तदनुसार सन् १९१८) में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब लाहौर के उपदेशक श्री रामशरण की प्रेरणा से कोटली आर्यसमाज की स्थापना की गई। बक्शी शिव शरण जी प्रधान तथा मास्टर चूनी लाल जी मंत्री नियुक्त हुए। कुछ और सदस्य भी उसी समय बने समाज मंदिर का शिलान्यास महात्मा हंसराज जी द्वारा किया गया सदस्यों ने इस निर्माण में स्वयं शारीरिक सेवा कार्य करके आदर्श स्थापित किया। यह समाज बड़ा सुदृढ़ प्रचार केन्द्र बना। नगर के प्रतिष्ठित परिवारों में—स्त्री बच्चों तक आर्य समाज के विचारों का प्रभाव बढ़ा।

पं० बुद्ध देव जी मीरपुरी ने अरसा तक इसे अपना प्रचार केन्द्र बनाये रखा आर्य समाज के प्रसिद्ध उपदेशक भी समय-समय पर यहां आते रहे। परिणाम स्वरूप यहां आर्य समाज दृढ़ मूल हो गया।

इस समाज ने कई प्रसिद्ध आर्य समाजी कार्य कर्त्ता उत्पन्न किये। इन के परिवार अब तक आर्य समाजों की सेवा में संलग्न हैं। ऐसे कुछ व्यक्तियों के नाम निम्नलिखित हैं

१ म० मोती राम जी खन्ना २ म० मगत राम जी खन्ना अर्जी नवीस, ३ ला० राम भेजा मल जी भजनीक, ४ ला० रामनाथ जी वकील, ५ ला० रूपलाल जी वकील, हकीम रामनाथ जी आदी।

इन सब का परिचय अन्यत्र दिया गया।

सन् १९४७ में देश विभाजन के समय कोटली पर पाकिस्तान का अधिकार

श्री फकीर चन्द अर्जी नवीस की धर्म पत्नी (राजौरी) जिस के प्रभाव से कई लोग आर्य समाज की विचार धारा से प्रभावित हुए हैं। इस प्रकार की अनेक देवियों ने अपना समय, शक्ति और साधन आर्य समाज के प्रचार और सुधार में लगाए हैं। सत्य तो यह है कि आर्य महिलाओं के सहयोग के बिना आर्य समाज का कार्य कभी इतना आगे न बढ़ सकता था।

स्त्री आर्य समाजों का वर्णन नहीं किया गया है, पर यह सदा स्मरण रखना चाहिए कि प्राय: सभी आर्य समाजों के साथ स्त्री आर्य समाजों का संगठन है स्थाई समाजों के सत्संगों के अतिरिक्त प्राय: सभी आर्य समाजों में स्त्रियों के अलग विशेष सत्संग भी लगते हैं उनका संगठन भी आर्य समाज के नियमों उप-नियमों के अन्तर ही हुआ है कहीं कहीं स्वतन्त्र स्त्री आर्य समाजें भी सुसंगठित हैं। ये अपने दैनिक साप्ताहिक सत्संग अलग लगाती हैं। और समाज सुधार के कई काम स्वतन्त्र रूप से करती हैं।

आर्य कुमार सभाएं और आर्य वीर दल—समय समय पर आर्य कुमार सभाओं, बाला समाजों और आर्य वीर दलों का आयोजन भी होता रहा है। प्राय: प्रत्येक पाठशाला में बाला समाज स्थापित है। कई कुमार सभाओं और बाला समाजों ने बहुत सराहनीय कार्य किया है।

चतुर्थ अध्याय

जम्मू कश्मीर में आर्य समाज की स्थापना (द्वितीय भाग)

कश्मीर घाटी में आर्य समाज

प्रस्तावना—कश्मीर का नाम अपने संस्थापक के आश्रम (कश्यपमेर) के नाम पर है। प्राचीन काल में यह एक विशाल झील सती सर थी। इस के कालान्तर में सूखजाने से घाटी की भूमि का उदय हुआ तब यह संसार की सुन्दरतम घाटी अस्तित्व में आई।

यह घाटी छः मील चौडी और ४० मील लम्बी समतल है। इसके चारों ओर उँचे बर्फ से ढके हुए विशाल पर्वत हैं। पूर्व में हरमुख (१९९०३ फुट) महादेव और गवाशभरी १७८०० फुट रक्षा करते हैं। दक्षिण - पश्चिम में पीर पजाल १५००० फुट ऊचा सिर उठाए खड़ा है। उत्तर में तोष मैदान १४००० फुट पश्चिमोत्तर में काजी नाग १२००० फुट कराकुरम क्यून लयून और नगा पवत की भव्य पर्वत सालायें दूर से दिखाई देती हैं।

समतल भूमी में चश्मों, झीलों, नदीयों, नालों और वितिस्ता (झेलम नदी) का विहार स्थान है। रंग-रंग के फूल और फल तथा भान्ति २ की बनस्पतीयाँ इस की सुन्दरता को अनुपम शोभा प्रदान करती हैं।

कश्मीर भारत माता का उतमाङ्ग है। शरीर में मस्तिष्क की भान्ति यह भारतीय सभ्यता, सस्कृति ज्ञान - विज्ञान, कला - कौशल का केन्द्र स्थान है। भारतीय सभ्यता औपनिषदिक ज्ञान और बुद्ध की शिक्षा का विदेशों में प्रचार का श्रेय काश्मीर को रहा है। तिब्बत, चीन, मंगोलिया, कोरिया, मध्य एशिया वो यहीं से भारतीय सस्कृति का प्रवाह बह कर गया है।

प्रत्येक भारतीय सुधार लहर, दार्शनिक विचार धारा, कलाकृति विस्तार का प्रभाव इस घाटी पर पड़ता रहा है तो आर्य समाज जैसी क्रान्ति कारी और कार्यशील प्रचारक संस्था का प्रभाव ऊचे पर्वतों को पार कर के यहां न पहुचता तो यह एक इतिहास का आश्चर्य ही होता।

काश्मीर ने इतिहास के कई रंग देखे हैं ललितादित्य जैसे महाराज अशोक और प्रवर सेन जैसे शासक, गोपादिन्य और अवन्ति वर्मन जैसे लोक प्रिय महाराजे, कनिष्क जैसे विजेता और मध्यान्तिक तथा नागार्जुन जैसे प्रचारक इस घाटी में हुए हैं।

सिकन्दर बुतशिकन, जिसने प्राचीन कला और मंदिरों को विध्वंस किया मिहिर कुल जैसे क्रूर और अत्याचारी शासक और ब्राह्मणों को थैलों में बाँध कर डल में डुबाने वाले हत्हारे भी इस के इतिहास में रहे हैं।

सन् १५६० में अकबर के समय इस घाटी की जन संख्या १२०००० थी जो १८३५ में पठानी राज्य के अन्त में केवल दो लाख रह गई थी। सन्

१८७३ में महाराजा रणवीर सिंह के समय यह ४९१८७६ हो गई और महाराजा प्रताप सिंह के राज्य काल में १८९१ में यह बढ़ कर ८१४२४१ अर्थात् दुगनी हो गई। जनगणना के यह आंकड़े ही प्रकट करते हैं कि काश्मीर पर पठानी (मुसलमानो) राज्य और डोगरा वंश के हिन्दू राज्य में जनता की अवस्था कैसी थी।

आर्य समाज का काश्मीर घाटी से सम्पर्क - महाराजा गुलाब सिंह ने काश्मीर घाटी सन् १८४६ में अमृतसर की संधि से प्राप्त की। आपने १८५६ में राज्य त्याग दिया। महाराजा रणवीर सिंह १८५६ से १८८५ तक राज्य करते रहे। तत्पश्चात महाराजा प्रताप सिंह और महाराजा हरि सिंह आए और सन १९४७ में डोगरा वंश का राज्य समाप्त होकर भारत की प्रजातन्त्र प्रणाली यहाँ लागू हो गई। इस प्रकार आर्य समाज का इस घाटी से सम्पर्क काल महाराजा रणवीर सिंह के राज्य काल की घटना है।

उस ससय यहां के हिन्दू समाज की परिस्थिति क्या थी इस का वर्णन श्री जवाहर लाल के शब्दों में इस प्रकार है :—

'काश्मीर में लम्बे काल तक हिन्दूओं को मुसलमान बनाने का क्रम जारी रहा। इस से यहां की ९५% जनता मुसलमान हो गई। पर उन के रस्मों रिवाज - कार - व्यवहार, आदतें खान - पान आदि हिन्दवाना बने रहे। महाराजा रणवीर सिंह के समय में इन मुसलमानों की बहुत बड़ी संख्या ने अपनी इच्छा और आग्रह प्रकट किया कि उन को सामूहिक रूप से हिन्दू धर्म में ले लिया जाय। यह उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य काल की बात है। महाराजा ने काश्मीर के पण्डितों की सलाह ली और एक शिष्ट मण्डल बनारस में भेजा कि वहाँ की शिरोमणि पण्डित मण्डली इस सम्बन्ध में उचित व्यवस्था दे।

पण्डितों ने इस प्रकार से मुसलमानों को हिन्दू धर्म में लेने से इन्कार कर दिया और यह बात वहीं समाप्त हो गई। लोग निराश हो कर चुप हो गए "

इस उद्धारण से कश्मीरी पण्डितों का रूढ़िवाद कैसा था यह स्पष्ट है। अन्य बातों में भी हिन्दू समाज में रूढ़िवाद इतना बद्ध मूल था कि उसे उखाड़ना बड़ी भारी समस्या थी।

स्वामी दयानन्द से सम्पर्क तथा आर्य समाज की रुकावटों का दूर होना - सन् १८७७ के देहली दरबार में स्वामी दयानन्द सरस्वती ने एक सर्व धर्म सम्मेलन किया। उस समय कुछ सज्जनों द्वारा महाराजा रणवीर सिंह से सम्पर्क हुआ। महाराजा स्वामी जी को काश्मीर बुलाना चाहते थे परन्तु उन के दरबारी पण्डितों के रूढ़ीवाद ने बात सिरे न चढ़ने दी।

दूसरी बार जब स्वामी जी पंजाब में प्रचार करते हुए रावलपिंडी आए और वहां आर्य समाज की स्थापना की तो प्रयत्न किया गया कि उन को काश्मीर में बुला कर प्रचार कार्य किया जाए, परन्तु इस बार भी बातचीत बीच में ही रह गई।

स्वामी जी की मृत्यु (सन १८८३) के पश्चात् श्री स्वामी नित्यानन्द जी दो बार काश्मीर पधारे। एक बार वह अपने शिष्य महाराजा मैसूर को भी लाना चाहते थे, परन्तु महाराजा की मृत्यु से यह बात भी सिरे न चढ़ पाई। दूसरी बार स्वामी जी यहां ठहरे। संस्कृत में कई भाषण दिये। पुरुषार्थ प्रकाश ग्रन्थ (महाराज कुमार बड़ोदा की शिक्षा के लिए) लिखा। राज दरबार पर इस का अच्छा प्रभाव पड़ा।

सन् १८९६ में पं० गणपतिशर्मा के पादरी जानसन की चुनौती को स्वीकार कर, उसे परास्त कर के उस को भाग जाने पर बाध्य करने से आर्य समाज का मार्ग प्रशस्त हो गया।

ठाकुर प्रवीण सिंह के मधुर और शिक्षा प्रद भजनों ने भी महाराजा प्रताप सिंह को खासा प्रभावित किया।

महाराजा हरि सिंह के तो विचार आर्य समाज के बहुत निकट थे। उन के घरेलू दान का एक विशेष भाग हर वर्ष आर्य समाज को मिलता था। मृत्यु समय लगभग दो करोड़ रुपया की सम्पत्ति वह आर्य समाज की दयानन्द कालिज सोसाइटी और ट्रस्ट को शिक्षा प्रचारार्थ दे गए।

उन की कूपों से पानी लेने और मन्दिर प्रवेश की आज्ञाओं से दलितों को समान अधिकार प्राप्त करने की समस्या का समाधान हो गया। इस प्रकार पग - पग करके काश्मीर घाटी में तथा राज्य में आर्य समाज का मार्ग अधिक -

अधिक स्पष्ट होता गया।

काश्मीर घाटी में आर्य समाज का प्रवेश—काश्मीर घाटी में जाने का प्राचीन मार्ग - भिम्बर - पुण्छ मार्ग था। वह अब प्रायः प्रयोग नहीं होता है। रावलपिंडी से श्रीनगर तक सड़क बन जाने से लोग इक्कों - टाँगों द्वारा काश्मीर की यात्रा किया करते थे। पहले पहल मोटर का प्रयोग एन. डा. राधा कृष्ण ऐण्ड सन्ज़ ने—जिन के पास डाक का ठेका था—किया। दैव योग से इस कम्पनी के संचालक आर्य समाज के साथ सम्पर्क रखते थे। इन का भी प्रभाव पड़ा। पंजाब के कुछ व्यापारी परिवार भी अपने कारोबार के कारण काश्मीर में आ बसे। महाराजा रणवीर सिंह ने काश्मीर का व्यापार बढ़ाने के लिए श्रीनगर में 'महाराज गंज' नाम से एक मण्डी का निर्माण किया। अमृतसर के कई व्यापारियों को इस मण्डी में अपनी दुकानें या उनकी शाखें खोलने का निमन्त्रण दिया। इन व्यापारियों में कई दृढ़ आर्य समाजी थे।

उन दिनों सरकारी नौकरी के लिए पंजाबियों या राज्य से बाहर के लोगों पर रोक न थी। इस से सरकारी कर्मचारियों में भी पंजाबी आर्य समाजों की एक विशेष संख्या थी। ऐसी परस्थितयों में आर्य समाजों की श्रीनगर और उसके आस - पास स्थापना होना सर्वथा स्वाभाविक ही था।

आर्य समाज हज़ूरी बाग श्रीनगर—सर्व प्रथम आर्य समाज पंजाबी मुहल्ला में आरम्भ हुआ। मग्गरमल बाग में एक किराये के मकान पर सत्संग लगने लगे। इस समाज की स्थापना २३ मई सन् १८९२। (सम्बत् १९४९) में हुई। पाँच बर्ष पश्चात् अमीरां कदल में मन्दिर के लिए भूमि लेकर समाज मन्दिर बनाया गया। परन्तु इस स्थान पर हरिसिंह हाई स्ट्रीट का बाज़ार बन गया। अतः यह भूमि सरकार ने ले ली। इस लिए ३० मई सन् १९२४ को हज़ूरी बाग में ७९५७ रुपये में आर्य समाज के लिए भूमि खरीद कर इस पर समाज मन्दिर का निर्माण किया गया। यह समाज मंदिर सन् १९२८ में ३१००० रुपये की लागत से बन कर तैयार हो गया।

संस्थापक—आरम्भिक कार्य - कर्त्ताओं और पदाधिकारियों में ला० गोबिन्द

सहाय जी (गोबिन्द सहाय केदारनाथ फर्म), ला० चिरंजीत लाल जी (काश्मीर मैटल मार्ट के मालक), डा० कुलभूषण जी (काश्मीर के हैल्थ आफिसर), बाबा बलवन्त सिंह जी, इन्स्पैक्टर ऑफ स्कूलज और आर्य पत्रिका के सम्पादक बाबा छज्जू सिंह जी के सुपुत्र श्री बी. डी. नन्दा आदि आर्य सज्जन थे सेठी ब्रदर्स श्री अमोलक राम तथा उनके बड़े भाई का भी पर्याप्त सहयोग था।

प्रथम वार्षिकोत्सव—आर्य समाज हजूरी बाग श्रीनगर का प्रथम वार्षिकोत्सव २९, ३०, ३१ भादों सम्बत् १९७० को हुआ। इस में गत २१ वर्ष के कार्य का लेखा जनता के सामने रखा गया। और भविष्य के कार्यक्रम पर बिचार किया गया।

आर्य उपदेशकों का सम्मान—पहले बतलाया जा चुका है कि श्री ब्रह्मचारी स्वामी नित्यानन्द जी के आगमन, श्री पं० गणपति शर्मा के शास्त्रार्थ और वि० सम्बत् १९५३ में पादरी जानसन का पलायन तथा १९५७ में मास्टर लक्ष्मण जी आदि के उपदेशों और ठाकुर प्रवीण सिंह जी 'मधुर' के भजनों का महाराजा प्रताप सिंह पर बड़ा प्रभाव पड़ा। इस से इस राज्य में आर्य समाज का मार्ग प्रशस्त हुआ।

महात्मा हंसराज जी और उनके साथियों का आगमन

महाराज गंज आर्य समाज के वार्षिकोत्सव पर महात्मा हंसराज जी, प्रो० दीवान चन्द जी, बक्षी टेकचन्द जी और ला० देवी चन्द जी पधारे। उनका यश सुन कर महाराजा ने उन को दरबार में बुलाकर सम्मान किया। इस से भी आर्य समाज का प्रभाव बढ़ा।

देवकी देवी पाठशाला की स्थापना—पंजाबी मुहल्ला में कन्याओं की शिक्षा के लिये श्रीमति देवकीदेवी और उनकी सत्संगनियों ने पुत्री पाठशाला प्रारम्भ की कुछ काल पश्चात् यह आर्य समाज के हवाले कर दी गई। अब यह पाठशाला दसवीं श्रेणी तक है। इसका वर्णन पृथक शिक्षा संस्थाओं के अध्याय में किया गया है।

आर्य वीर दल—आर्य वीर दल की स्थापना भी की गई। श्री टी. एन -

कौल जो इस समय अमेरिका में भारत के राजदूत हैं) भी इस दल के सदस्य रहे हैं।

प्रचार—शुद्धियां विधवा विवाह, उत्सव, यज्ञ, व्याख्यान आदि द्वारा प्रचार कार्य सदा चलता रहा है। गर्मियों में यात्रियों का यहां आगमन होता है। तब बहुत से आर्य सज्जन भी यहां पधारते हैं। अतः यह केन्द्रीय आर्य समाज प्रचार का विशेष आकर्षण स्थान बन जाता है।

अतिथिशाला आर्य समाज मन्दिर में कुछ कमरे अतिथिशाला के लिए बनाए गए हैं। काश्मीर आने वाले आर्य सज्जन इस से सदा लाभ उठाते हैं और परस्पर का सम्पर्क भी होता रहता है।

पदाधिकारी—इस समय प्रधान ला० बिहारी लाल जी बतरा हैं मंत्री श्री योगेन्द्र जी मदन (सुपुत्र श्री जीवन लाल जी), सहायक मंत्री—श्री कृष्ण लाल गुप्ता, उपमंत्री—श्री मनोहर नाथ जी, कोषाध्यक्ष—श्री आश्चर्य लाल जी, और पुस्तकाध्यक्ष श्री नेत्र पाल जी हैं। यह आर्य समाज के पुरोहित भी हैं।

आर्य समाज के विशेष कार्य—वैसे तो आर्य समाज, सामाजिक, धार्मिक और संगठनात्मक गतिविधियों का केन्द्र है ही, पर कुछ विशेष घटनाओं का सम्बन्ध भी इस आर्य समाज से हैं। यथा—

१. भद्र करवाने का झगड़ा—राजा की मृत्यु पर इस राज्य में भद्र करवाने (सिर मुंडवाने) की प्रथा रही है। महाराजा प्रताप सिंह की मृत्यु पर श्री नरसिंह दास को भद्र न करवाने पर ही अपने बजीर बजारा के सुपरिटेंडेंट के पद से अलग कर दिया गया। अपील करने पर उसे समय पूर्व ही रिटायर कर दिया गया।

आर्य समाज के प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने भी 'भद्र' कराने से इन्कार कर दिया। उस समय डा० कुलभूषण श्रीनगर के स्वास्थ्य अधिकारी थे। आप से महाराजा हरि सिंह ने पूछा तो आप ने उत्तर दिया कि शास्त्रानुसार शरीर के

भस्म हो जाने के पश्चात् मृतक के लिए कोई भी क्रिया शास्त्रानुकूल शेष नहीं रहती। आर्य लोग तो पिता की मृत्यु पर भी 'भद्र' नहीं करवाते। फिर मुसलमान आदि भी तो 'भद्र' नहीं करवाते। इस उत्तर पर फिर कोई कारवाई न की गई।

२. आनन्दमार्ग का भंडाफोड़—सन् १९७१ मे श्री भीमसेन कठुआ निवासी का लड़का चन्द्रमोहन श्रीनगर मैडिकल कालिज में पढ़ता था। वह आनन्दमार्गी अवधूतों के बहकावे में आगया। उसे रांची की ओर भेज दिया गया। बहुत तलाश करने पर भी जब कुछ पता न लग सका तो आर्य समाज उस समय श्री भीमसेन की सहायता के लिए प्रयत्नवान हुआ। राँची में उसका पता लगा कर उसे बनारस नगर में अवधूत के रूप में पकड़ा गया। उसके ब्यान से आनन्दमार्ग के काम पर सन्देह हो गया। रांची में इन के केन्द्र स्थान पर छापा मारा गया। यहां से हथियार, खोपड़ियां तथा अन्य इसी प्रकार की चीजें हाथ लगीं। तब से ही इस के संस्थापक आनन्दमूर्ति (प्रभात रंजन सरकार) पर मुकदमा चल रहा है। वह पटना जेल में पड़ा है।

३. लाला बालमुकुन्द—जम्मू काश्मीर राज्य के ऐकाउटैंट जनरल के दफ्तर में सुपरिंटैंडैंट थे। आप आर्य समाज के संस्थापकों में से थे। अपनी मृत्यु पर अपनी लाखों रुपों की सम्पत्ति गाँधरबल में अपनी एकमात्र पुत्री के नाम कर गए यह लड़की विधवा होकर असहाय हो गई। गांधरबल में सारी आबादी मुसलमान है। अतः इसे बहका कर मुसलमान बना लिया गया। एक मुसलमान ने इस के साथ निकाह भी कर लिया।

इस घटना का आर्य समाज को पता चला विशेष प्रयत्न से उस लड़की से सम्पर्क स्थापित किया गया। अन्त में उसे शुद्ध करके उस की सुरक्षा का प्रबन्ध कर दिया गया। पं० नेत्रपाल जी ने इस में विशेष परिश्रम कर के सफलता प्राप्त की।

४. सिपाही रामेश्वर सिंह की मुक्ति—श्रीमती परमेश्वरी देवी हांडू के मुसलमान बनाए जाने पर काश्मीरी पण्डित समाज में भारी आन्दोलन हुआ। इसी आन्दोलन के समय मुसलमानों की भीड़ के शान्ति भंग करने पर गोली

चलाई गई। इस में दो व्यक्ति मारे गए। मुसलमानो के शोर मचाने पर सिपाही रामेश्वर सिंह पर मुकदमा चला कर उसे फाँसी का दंड दिलाया गया।

आर्य समाज ने इस मुकदमे को अपने हाथ में लिया। वह सज्जन उत्तर प्रदेश पोलिस का था। उस प्रान्त के मुख्य मन्त्री द्वारा इस मुकदमे की अपील उच्च न्यायालय में करवाई गई। वह सिपही निर्दोष सिद्ध हो कर जेल मुक्त किया गया श्री प० नेज़पाल जी ने इस मुकदमे में भरसक प्रयत्न कर इसे अन्त तक पहुंचाया।

अनन्तनाग के छात्र-छात्राओं की शुद्धि—काश्मीर सरकार की साम्प्रदायिक पक्षपात पूर्ण नीति के कारण अच्छे अंक लेकर भी हिन्दू बालक-बालिकाओं को स्थानीय मैडिकल और इंजीनियरिंग कालिजों में प्रवेश से वंचित कर दिया जाता था। इस के विपरीत अयोग्य मुसलमान भी प्रविष्ट कर लिए जाते थे। इस पक्षपात से बचने के लिए अनन्तनाग के ३५ बालक-बालिकाएं मुसलमान बन गए। इस से हिन्दू समाज में भारी रोष पैदा हुआ।

आर्य समाज के कार्य कर्त्ताओं ने इस काण्ड में रूचो ले कर सम्बन्धित बालक-बालिकाओं तथा उन के परिवारों से सम्पर्क उत्पन्न कर के इन सब को वापस हिन्दू धर्म में लिया। इन में से २२ को श्रीनगर ला कर शुद्ध किया गया शेष १३ को अनन्तनाग में विश्णु के मंदिर में शुद्ध किया गया।

हाई कोर्ट में 'रिट' कर के प्रवश चुनाव को अवैध घोषित कराया गया। जिस से कुछ को प्रवेश भी मिल गया।

इस प्रकार यह केन्द्रीय आर्य समाज श्रीनगर इस घाटी में हिन्दू समाज का प्रहरी है और सकट के समय में सदा आगे जाकर कार्य करता है।

ला० चिरंजीव लाल जी के परीवार का इस समाज से सदा विशेष सम्बन्ध रहा है। श्री० विक्रम कुमार इस समय पाठशाला के प्रबन्धक हैं। इस समय भी ला० जयदेव जी तथा उन के परीवार के अन्य सदस्य इस आर्य समाज के लिए तन, मन, धन से पूर्ण सहयोग प्रदान करते हैं।

आर्य समाज वज़ीर बाग—की स्थापना में श्री अमोलक राम जी सेठी श्री ओमप्रकाश जी सेठी, ला० दयाल चन्द जी Deputy Accountant

General, श्री भगवान दास जी तथा श्री बसी लाल जी नन्दा का बड़ हाथ रहा है। इस समाज का सम्बन्ध आरम्भ से ही आर्य प्रदेशिक सभा पंजाब से रहा है। प्रचार कार्य पर्व - उत्सव, व्याख्यान, वार्षिकोत्सवों के साथ कथा के रूप से वैदिक धर्म का प्रचार सदा से होता रहा है।

स्त्री समाज- हजूरी बाग और जवीर बाग समाजों में स्त्री समाजें भी हैं। कभी - कभी ये समाजें बारी बारी से सम्मिलित सत्संग लगाती हैं स्त्रियों में आर्य समाज के प्रचार तथा वैदिक संस्कारों के प्रसार का ये समाजें विशेष साधन है।

अतिथिशाला—इस समाज में भी अतिथिशाला का विशेष प्रबंध है। आर्य समाज के प्रचारक जो समय - समय पर यहाँ आते हैं इन से लाभ उठाते हैं।

शिक्षा प्रचार—इस समाज का विशेष कार्य शिक्षा प्रचार है। डी - ए - वी कालिज से विशेष संबन्ध होने के कारण इस समय भी इस समाज के साथ लड़कों का एक हायर सैकंडरी स्कूल है। एक डी - ए - वी कालिज भी था जो अब बन्द हो चुका है। परन्तु अब दोनों स्कूलों में कालिज की श्रेणियां आरम्भ करने की योजनाएं हैं। इन का विवरण शिक्षा कार्य के अध्याय में दिया गया है।

अधिकारी वर्ग—इस समय ला० अमोलक राम जी सेठ प्रधान, और श्री आर - के - गजू इस समाज के मंत्री हैं। स्कूलों के अध्यापकों की पर्याप्त संख्या समाज के कार्य में रूची लेती है। अतः कश्मीरी हिन्दू सभा से इस आर्य समाज का सम्पर्क सदा बना रहता है। उस में निरन्तर विकास भी हो रहा है।

आर्य समाज रैणावाड़ी- रैणावाड़ी मुहल्ला काश्मीरी पंडित समाज का गढ़ है। उन के सभी सामाजिक कार्यों तथा समष्टिगत गतिविधियां यहां हो आरम्भ होती तथा बढती हैं।

आर्य समाज की स्थापना—इस मुहल्ला में ईसाइयत के प्रचार प्रसार

के लिए ईसाई मिशनरीयों ने एक मिशन का मिडल स्कूल स्थापित किया था। उस की संचालिका मिशनरी देवी मिस विशाट थी। उसने हिन्दू युवकों को आकर्षित करने के लिए एक ड्रामा कलब स्थापित किया था। इस के द्वारा वह कई युवक युवतीयों को पथ - भ्रष्ट करने लगी। इस पर पंडित समाज में खल - बली मची। इस की प्रतिक्रिया के रूप में यहाँ आर्य समाज की स्थापना १९३४-३५ में की गई।

संस्थापक – आर्य समाज की स्थापना का श्रेय काश्मीरी पंडित समाज के बहुत से नवयुवकों को है। इन में विशेषरूप से भाग लेने वाले थे –

१. पं० राधा कृष्ण जी, २. पं० काशीनाथ जलाली ३ श्री प्रेमनाथ जलाली, ३. श्री प्रेमनाथ नीरा, ४ महाताब ज़ तिक ५. कैलाश ज रंगरू ६. श्याम लाल सराफ ७. दीनानाथ कौल, ८. पृथ्वी नाथ डुल्लू, ९ श्याम सुन्दर हुंडू १० श्रीधर जी डुल्लू, ११. नन्द लाल चौधरी, १२. राधा कृष्ण जी काक, १३ बद्रीनाथ जी काचरू, १४. रामचन्द्र जी अभय १५ जगन्नाथ जी आर्य आदि।

इस प्रकार काश्मीरी पंडित समाज में उन्हीं द्वारा संचालित यह प्रथम आर्य समाज था। अतः यह समाज जागृति का केन्द्र बना।

आरम्भ में सत्संग का प्रबन्ध एक किराया के मकान पर किया गया। इस की उन्नति के साथ साथ इस के प्रचार के प्रभाव से मिशन स्कूल की जड़ उखड़ गई। उन का स्कूल बन्द कर दिया गया और मिस विशाट अपना प्रयत्न विफल देख कर अन्यत्र चली गई।

इस स्कूल का स्थान और मकान आर्य समाज ने ले लिया। उसी में आर्य दयानन्द स्कूल की स्थापना की गई है आर्य समाज मन्दिर बनाया गया है और यह सब सामाजिक गति - विधियों का केन्द्र बन गया है।

इस समाज के साथ अब एक विशाल हायर सैकण्डरी स्कूल है। इस का अपना लाखों रुपये का भवन है इसे अब विश्व विद्यालय में बदलने की योजना है (इस का वर्णन अलग शिक्षा अध्याय में है।)

इस आर्य समाज ने केन्द्र का रूप धारण कर काश्मीरी पण्डित समाज में बद्धमूल रूढ़ियों का सामना करके समस्याओं का समाधान करने की चेष्टा की है। इन का इतिहास बड़ा रोचक और शिक्षा प्रद है।

शुद्धि का श्रीगणेश—पहले बताया जा चुका है कि रूढ़िवादी काश्मीरी पंडित समाज किस प्रकार शुद्धि विरोधी था। इस में सर्व प्रथम शुद्धि माधव जी जिगू का हुई। यह व्यक्ति मिशन हस्पताल में लैबारेटरी ऐसिस्टैंट था। इसे ईसाई बना कर काश्मीर से बाहर अज्ञात स्थान पर भेज दिया गया। इस के पिता गोपाल राम जी प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। बड़ी खोज के पश्चात् उसे उत्तर प्रदेश में उपलब्ध किया। आर्य समाज स्यालकोट द्वारा शुद्ध करा कर इसे वापस लाया गया।

महाराजा रणवीर सिंह द्वारा संकलित और प्रकाशित "रणवीर प्रायश्चित्त प्रकाश" की व्यवस्था के अनुसार इसे सनातन धर्म सभा श्रीनगर काश्मीर ने पुनः शुद्ध किया। इस का ईसाई नाम माइकेल जाहन था। वह बदल कर इसे 'माधव जू भान' नाम दिया गया।

इस सभा के संस्थापक तथा अधिकारी थे—पं० हर गोपाल कौल वकील, पं० बेदलाल, और पं० राजदान। इन में से पं० हरगोपाल कौल का सम्पर्क आर्य समाज लाहौर से रहा था इस प्रकार सनातन धर्म सभा और आर्य समाज शुद्धि कार्य में एकमत हो गए। काश्मीरी पंडित समाज में यह प्रथम शुद्धि थी। इस का व्यापक प्रभाव पड़ा। मिशन वालों ने इसे अपनी नौकरी से निकाल दिया। डा० कुलभूषण ने इसे सरकारी डिस्पैंसरी में उपयुक्त स्थान देकर यह कमी पूरी कर दी।

कृष्णदास की शुद्धि—कृष्ण दास एक नवयुवक था उसका दिमाग बिगड़ गया वह सब के हाथ का खाने-पीने लगा। उस की सम्पत्ति काफी था उस की अपनी कोई सन्तान न थी केवल एक बूढ़ी माता थी माता ने पुत्र का साथ न छोड़ा इस पर उसकी बिरादरी और विशेष कर सम्पत्ति के लालची लोगों ने उन माता पुत्र को मुसलमान घोषित कर सम्पत्ति पर अधिकार कर लेने की चेष्टा की। कुछ समय पश्चात् वह स्वस्थ हो गया पर उसे मुसलमान ही

बनाए रखा गया। इस पर आर्य समाज उसकी रक्षा को आगे बढ़ा। उसे अनन्तनाग में पं० श्रीधर और हलधर चीरनू ने एक महान यज्ञ करके, गायत्री का जप करा कर शुद्ध किया उस का बाग़ और सम्पत्ति उसे वापस दिलाई गई उसकी ८० वर्षीया माता के मुसलमानी कपड़े बदलवा कर पुनः उसे हिन्दू समाज में ले लिया गया इस प्रकार इस सनातनी रूढ़ि का अन्त किया गया।

पण्डित समाज में सुधार की लहर—आर्य समाज महाराजगंज में वार्षिक उत्सव हो रहा था। महात्मा हंसराज जी, ला० सांई दास जी, प्रो० दीवान चन्द जी, बक्शी राम रत्न जी और लाला देवी चन्द जी पधारे। महात्मा जी के कुछ शिष्यों ने उन से भेंट की। कुछ अन्य काश्मीरी युवक भी साथ थे। महात्मा जी के सुझाव और प्रेरणा से एक आर्य कुमार सभा जो की बाद में आर्य युवक सभा बन गई—की स्थापना हुई।

पं० कश्यप बन्धु का आगमन—पं० कश्यप बन्धु जी लाहौर में ब्रह्म महाविद्यालय में पढ़ते रहे। ये 'आर्य गज़ट' के सम्पादक भी रहे। अतः महात्मा हंसराज जी तथा उनके सहयोगियों से न केवल परिचित थे, अपितु उन की कार्य प्रणाली से भी सहमत थे। लाहौर त्याग कर काश्मीर को अपना कार्य क्षेत्र बना कर वह आर्य युवक समाज के सक्रिय कार्यकर्त्ता बन गए।

इसका प्रथम मंत्री पं० रामचन्द्र अभय और प्रधान पं० माधवजी भान थे। पं० सर्वानन्द, पं० दीनानाथ पं० तारा चन्द, पं० जानकी नाथ, पं० गवाशा लाल, पं० जिया लाल कौल। बाद में इस युवक समाज में और लोग भी सम्मिलित हो गए जैसे :— पं० कश्यप बन्धु, श्यामलाल गुरटू, लम्बोदर टिक्कू, अमर नाथ मट्टू, पं० दीनानाथ मट्टू, जिया लाल दर प्रेम नाथ कौल।

पं० कश्यप बन्धु के साथ पं० राम चन्द्र कौल, पं० प्रेमनाथ बज़ाज, श्याम लाल, पं० लक्ष्मी नारायण कौल, पं० रघुनाथ पं० दीनानाथ चिकन, पं० हरिदत्त काल आदि सुधारवादी लोग भी बाद में इस युवक समाज के सदस्य बन गए। इस से यह संस्था काश्मीरी समाज में विशेष शक्तिशाली हो गई

काश्मीरी पण्डित समाज में सुधार—रूढ़ि वादी काश्मीरी हिन्दू

समाज में कई प्रथाएं और समस्याएं ऐसी थीं जो इसे उठने न देती थीं आर्य युवक समाज ने इनका समाधान करने की चेष्टा की।

१. शुद्धि का वर्णन पहले किया जा चुका है प० माधवजी भान (जो अब युवक समाज का प्रथम प्रधान बना) और प० कृष्ण दास और उस की माता की शुद्धि और समाज में पुनर्मिलन से यह रास्ता खुल गया। इस के पश्चात् कई और शुद्धियां हुईं। और छोटी - छोटी बातों पर 'पतित हो जाना' यह रूढ़िवाद भी समाप्त हो गया।

२. विधवा - विवाह की समस्या बड़ी जटिल थी। पांच हजार से अधिक बाल - विधवाएं थीं विधुर कुमारियों से विवाह कर लेते थे। दूसरी समस्या अविवाहित काश्मीरी पंडितों की थी सहस्रों कुमार युवक थे जिन्हें विवाह-आशा न थी।

विधवा - विवाह के लिए बड़ा प्रयत्न करना पड़ा। एक प्रतिष्ठित और सम्पन्न पंडित श्रीधर ने एक विधवा से विवाह किया। घर वालों ने उस का बहिष्कार कर दिया। बिरादरी वालों ने विरोध किया पर वह न केवल दृढ़ रहा अपितु पति - पत्नी दोनों ने विधवा विवाह को अपना ध्येय बनाया। ग्रामों तक में जा कर इस का प्रचार किया। प० ओंकार नाथ ने एक बाल विधवा से विवाह किया। उसे पीटा गया। वह घायल हो गया। हजूरी बाग आर्य समाज ने उसकी सहायता की। वह भी सफल हुआ।

श्री त्रिलोक नाथ बी. ए. के छात्र ने विधवा से विवाह का प्रण किया। उसका विवाह बड़े घर में हुआ था, परन्तु वह विधुर हो गया था वह मैजिस्ट्रेट बना। अच्छी से अच्छी कुमारियों से सम्बन्ध उसे मिलते थे परन्तु सब त्याग कर उस ने एक विधवा से विवाह कर लिया।

इस प्रकार यह लहर बढ़ी। रूढ़ी टूटी। विधवा विवाह साहायक सभा की स्थापना हुई। उसने इसे प्रगति दी। इस से समाज की यह समस्या बहुत सीमा तक हल हो गई।

कुमार युवकों की समस्या—इस से दूसरी मिलती - जुलती समस्या

सहसी ऐसे युवकों की थी जो अविवाहित रह जाते थे। युवक समाज ने इस समस्या का समाधान करने के लिए निम्नलिखत ढंग अपनाए—

१. विधवाओं से विवाह की रूकावट को दूर किया गया।

२. श्री कश्यप बन्धु ने भाई परमानन्द तथा अन्य हिन्दू नेताओं से मिल कर उत्तर प्रदेश के वनिता आश्रम बरेली तथा अन्य आश्रमों से सम्पर्क पैदा किया। कई हिन्दुस्तानी स्त्रियों का काश्मीरी परीवारों में विवाह कराया गया।

कुछ मुसलमान लड़कियों को भी शुद्ध कर के विवाह बन्धन में अपना लिया गया। इस प्रकार इस समस्या के समाधान में कुछ प्रगति हुई।

आर्य युवक समाज ने अन्तर्जातीय और अन्तर प्रान्तीय विवाह को भी प्रोत्साहित किया है। परिणाम स्वरूप कई काश्मीरी लड़कियाँ पंजाबी परिवारों में व्याही गई हैं। श्री जानकी नाथ जी मदन (मालक ऐलोरा होटल) ने स्याल कोट की एक पंजाबी लड़की से व्याह किया। इस दम्पति का लड़का योगेन्द्र इस समय आर्य समाज हजरी बाग श्रीनगर का मन्त्री है।

एक जन्म की मुस्लिम लड़की ने न्यायाधीष के सम्मुख घोषणा कर के अपनी पसन्द के हिन्दू लड़के श्री काशी नाथ खैबरी से विवाह करना चाहा मुसलमानों के विरोध के कारण लड़की को न्यायालय की शरण लेनी पड़ी। पुलीस की सुरक्षा में उस का विवाह आर्य समाज हजूरी बाग में हुआ।

एक ईसाई देवी मिस राय रियासती बाशिन्दा न थी। उसे हस्पताल में अपनी नर्स पन की नौकरी के जाने का खतरा था उसने महाराज गंज के एक व्यापारी श्री मलहोत्रा से विवाह कर लिया श्री मोहन लाल जी मोत्याल ने यह सराहनीय कार्य किया। इस प्रकार इस विवाह समस्या में कुछ राहत हो गई है और काश्मीरी पंडित समाज एक कठिनाई से बच गया।

सनातन रूढ़ीवाद से टक्कर—रूढ़ी वाद के पोषक भी अपना प्रयत्न जारी रखे हुए थे। परन्तु प्रगतिवाद के सामने उन का ठहर सकना कठिन हो गया साधारण जनता का मत भी थोड़ा बहुत बदल गया।

१- पण्डित ठाकुर बनवट्टू एक विद्वान पण्डित था। उसने दीवान बाग

में पौराणिक कथा का क्रम आरम्भ किया। आर्य समाज और आर्य युवक समाज की निन्दा और उन पर आक्रमण करना आरम्भ किया श्री जियालाल बिलम प्रधान आर्य कुमार सभा ने इस का मुकाबला करने के लिए दीवान बाग में ही प्रचार करना आरम्भ कर दिया। कुछ ही दिनों में प० ठाकुर जू की बोलती बन्द हो गई और उसने अपना प्रयास छोड़ दिया

२. पं० तारा चन्द बड़ू कट्टर पौराणिक पण्डित था। यह सिल्क फैक्टरी में काम करता था प० रामचन्द अभय ने साथ प्रायः इस का टकराव हो जाता था। आर्य समाज और आर्य कुमार सभा की निन्दा करना इस का प्रधान कार्य होता था परन्तु सत्यार्थ प्रकाश आदि ग्रन्थों के अध्ययन से इस विचार में भी परिवर्तन आ गया। यह आर्य समाजी बन गया और फिर आर्य कुमार सभा में सम्मिलत होकर इसने भी सक्रिय भाग लिया।

उसने श्राद्ध - पिंड का इतना खंडन किया कि उसे सनातनी 'तारक पिंड' के नाम से पुकारने लगे उन्होंने यह भी लछन लयागा कि वह श्राद्धों के पिंड खा जाता है

३. कुछ सनातनी काश्मीरी पण्डित अधिकारियों के प्रभाव से पुलिस द्वारा आर्य कुमार सभा को नोटिस दिलवाया गया कि आर्य समाजी संस्था क्यों बनाई गई। इस पर आर्य समाज के प्रधान ला० गोबिन्द सहाय जो उस समय ऐकाउटैंट जनरल के कार्यालय में सुपरिंटैंडैंट थे और ला० नन्दलाल ने जो बाद में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के मंत्री बने, लिख कर दे दिया कि आर्य कुमार सभा उनके आर्य समाज की शाखा है इस प्रकार सनातनियों का यह वार भी विफल हो गया।

४. श्रावणी पूर्णमासी काश्मीरी महापर्व यह पर्व काश्मीरी में विशेष महत्त्व का होता है। इस समय दुग्ध गंगा पर मेला लगता है आर्य युवक समाज के सदस्यों ने इस पर्व पर दुग्ध गंगा पर यज्ञ किया। अपने यज्ञोपवीत बदल कर सब ने पीले यज्ञोपवीत धारण कर लिए।

इस पर भी पौराणिकों ने उन्हें यह कह कर बदनाम किया कि उन लोगों ने यज्ञोपवीत तोड़ दिए हैं। पीले धागे गले में डाल कर पतित हो गए हैं।

५. प० रामचन्द्र मन्त्री सभा के विषय में प्रसिद्ध किया कि वह यंत्र -

मंत्र, टूना - फांडा करने वाला 'मन्त्री' है। उसे पतित कह कर 'मृत' घोषित कर दिया। उसकी पत्नी को बाध्य किया कि वह उसके घर न जा कर नानी के घर में रहे। उसे 'विधवा' तक कहा जाता रहा। पर बड़ी हो कर वह अपने घर आ गई और सनातनी आर्य समाज का कुछ न बिगाड़ सके।

पंजाबी-कश्मीरी मन-मुटाव.—काश्मीरी समाज समझता था कि आर्य समाजियों को पंजाबी आर्यों से प्रोत्साहन मिलता था। पंजाबी सरकारी अधिकारी थे ही। काश्मीरी पंडित नौकरी प्रिय हैं। उन्होंने यह आन्दोलन आरम्भ किया कि पंजाबियों को सरकारी पदों से हटाया जाये इससे काश्मीरी - पंजाबी का प्रश्न उत्पन्न हो गया।

डा० कुलभूषण, ला० गोबिन्द सहाय, श्री नन्द लाल जी तथा लाला चिरंजीत लाल आदि ने इस मन - मुटाव को दूर करने के लिए एक आर्य सम्मेलन किया। उसमें सब को प्रेरणा की गई कि काश्मीरी - पंजाबी के भेद भाव को भुला कर सब को परस्पर प्रेम से समान भाव से बर्त्ताव करना चाहिए।

इस पर भी काश्मीरी पण्डित समाज ने काश्मीरी आर्यों का बहिष्कार किया, परन्तु यह बात देर तक न चल सकी। उधर काश्मीरी - पंजाबी भी एक बिरादरी न बन सके। पृथकता की भावना बनी ही रही, जो अब तक भी है।

६. आर्य समाज का विद्वान गुजराती पंडित महारानी शंकर काश्मीर आया। उसके व्याख्यान हजूरी बाग में होते रहे। इन का बड़ा प्रभाव पड़ा।

सनातन धर्मी इसे सहन न कर सके। स्वामी प्रकाशानन्द को बुलाया गया। उसका काम आर्य समाजियों तथा आर्य युवक सभा के सदस्यों को गालियाँ देना था। उसने आर्य समाजी - सनातनी तनाव को बढ़ावा दिया पर यह भी अस्थायी रहा।

७. इस खींच - तान से एक लाभ हुआ। प० जानकी नाथ दर बड़ा विद्वान सनातनी पंडित था। जब उसने ध्यान पूर्वक उपनिषदों तथा अन्य शास्त्रों को पढ़ा तो वह आर्य समाजी बन गया घर वालों और अपनी बिरादरी के घोर

विरोध भरने पर भी वह आर्य समाज का सदस्य बना और आयु भर वैदिक धर्म का प्रचार करता रहा।

इस सनातनी - समाजी संघर्ष से प्रतिष्ठित काश्मीरी पंडित आर्य युवक समाज के सदस्य बन गए। इससे सभा की शक्ति पहले से बढ़ गई। अब काश्मीरी पंडीतों में आर्य समाज का प्रचार श्रीनगर से बाहर ग्रामों में भी फैलने लगा।

१. कुलगाम, २. अनन्तनाग, ३. जैनपुर ४. अशमूजी, ५. बारामूला, ६. सोपर, आदि स्थानों पर भी प्रचार केन्द्र बन गए और आर्य समाजों की स्थापना हो गई।

पं० कश्यप बन्धु और उनके साथियों ने समाज सुधार की गति को वेगवान करने के लिए 'सुबह काश्मीर' के नाम से एक साप्ताहिक उर्दू पत्र निकाला। इस में शुद्धि, विधवा - विवाह, अन्तर जातीय और अन्तर प्रान्तीय विवाह तथा अन्य विषयों पर लेख लिखे छपने लगे। हानि कर रूढ़िवादी प्रथाओं का भी खण्डन किया जाता रहा।

आर्य समाज बारामूला में श्री जगन्नाथ जी ला० बलराज मधोक जी के पिता) कुछ काल तक मन्त्री पद पर रहे।

आर्य समाज सोपुर—सोपुर प्रसिद्ध सूया इंजीनियर की यादगार है। उसने काश्मीर को बाढ़ों से बचाने के लिए जेहलम नदी के अतिरिक्त जल के निकास और भूमि सिंचाई का प्रबन्ध करके काश्मीर की जनता को समृद्ध बनाया था।

सन् १९१२ - १३ में पं० वासुदेव काचरू (आयु ७५ वर्ष) उस समय बाल्यावस्था में थे। आपने पटन में स्वामी सत्यानन्द जी महाराज और फकीर चन्द वानप्रस्थी के व्याख्यान सुने। उन्हें सोपुर बुलाया। प्रचार शिव मंदिर में हुआ। स्वामी दर्शनानन्द के ट्रैक्ट लोगों में बांटे गये।

इसके फल स्वरूप कई लोग आर्य विचारों के हो गए और यहां आर्य समाज की स्थापना हो गई। पं० वास देव जी सम्पन्न व्यक्ति हैं। आपने आर्य समाज मन्दिर के लिए भूमि प्रदान की पत्थर आदि सामग्री भी एकत्र कर दी। मंदिर की

बुनियाद भी भरी गई उस समय यहां पाकिस्तानी आक्रमण हुआ। नगर उजड़ गया। लोग भाग गए। समाज पनप न सका।

पत्थर आदि सामग्री बाद में साथ वाले मंदिर को दे दी गई।

इस समाज को स्थापना में प० वासदेव जी काचरू के अतिरिक्त निम्न - लिखित सज्जनो ने भी सक्रिय भाग लिया :—

१. श्री पं० जानकी नाथ जी, श्रीमती उमरावती जी (आप कन्या स्कूल की मुख्याध्यापिका थीं)। ३. पं० सोना जू अध्यापक गवर्नमैंट स्कूल. ४. ला० मेहरचन्द जी आनन्द (मुजफराबादी)। ५. श्री शम्भू नाथ जी।

पहले सत्सग अलग अलग स्थानों पर लगते थे। फिर एक स्थायी स्थान किराया पर ले लिया था।

इस समाज ने विधवा विवाह, शुद्धि तथा अन्य कई प्रकार से काफी प्रचार कार्य किया हैं।

आर्य समाज आकूर—मार्तंडतीर्थ स्थान से एक मील की दूरी पर आकूर नगर है। यहाँ भी आर्य समाज की स्थोपना की गई। संस्थापकों में १ श्री पं० गोबिन्द ज राजदान २. प्रेम जी राजदान, और ३. प० शिव जी वल्ली प्रमुख थे।

आर्य समाज जैनपुर—कुलगांव तहसील के जैनपुर ग्राम में प० ऋषि देव जी ने आर्य समाज की स्थापना की थी। आप आर्य प्रादेशिक सभा के उप - देशक थे। आपने एक विशिष्ठ लड़की से विवाह कर उस समय एक उज्ज्वल आदर्श प्रस्तुत किया था। आप को काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। परिवार के बच्चों की शादियों में भी कठिनाई आई, पर आपने सब विपदाओं का डट कर सामना किया।

आप सपरिवार राजौरी के पास एक ग्राम में रहते हैं। आप का सुपुत्र देव-राज दयानन्द दलित उद्धार मडल की ओर से काश्मीर में प्रचारक का काम करता रहा है।

आर्य समाज अशमू जी—तहसील कुलगांव में अश्मू जी स्थान पर भी एक आर्य समाज की स्थापना की गई थी। इसके संस्थापक श्री राम कृष्ण जी थे। आप इस समय भी प्राचीन ऋषि जीवन के आदर्श का पालन कर रहे हैं।

आर्य समाज करण नगर-(नागरिक आर्य समाज)— आर्य कुमार सभा और आर्य युवक समाज का संक्षिप्त कार्य विवरण पीछे दिया जा चुका है। इनका केन्द्र स्थान आर्य समाज मग्घर मल बाग में था। जब हरिसिंह हाई स्ट्रीट का निर्माण हुआ और आर्य समाज हजूरी बाग में स्थानान्तरित हो गई तो युवक समाज हब्बा कदल में आ गई। इस का सम्बन्ध आर्य समाज वजीर बाग से हो गया। इस के कार्यकर्त्ताओं में उस समय १. श्री जानकी नाथ जी विद्यार्थी। २. श्री माधव जी गिग्गू (भान), ३. श्री राम लाल जी गुरटू, ४. श्री रामचन्द जी अभय और ५ श्री दीना नाथ जी कौल आदि प्रमुख थे।

आर्य समाज महाराज गंज तथा युवक समाज के शिथिल हो जाने पर इन का कुछ सामान ले कर पं० दीनानाथ जी कौल ने नये समाज की स्थापना की। इस का नाम—**आर्य समाज भान मुहल्ला** था। इस के सर्वे - सर्वा दीनानाथ जी कौल थे।

लाला दयाल चन्द औषधालय—ला० दयाल चन्द जो Deputy Accountant General ने अपने निजी व्यय पर एक वैद्य श्री योगेन्द्र शास्त्री को औषधियों का प्रबन्ध करके भान मुहल्ला आर्य समाज में निःशुल्क औषधालय खोल दिया।

सुलक्षण सिंह वनिता विश्राम आश्रम—श्री सुलक्षण सिंह जी रावलपिंडी श्रीनगर डाक के ठेकेदार थे (राधाकृष्ण ऐंड सन्ज़)। आप ने आर्य समाज भान मुहल्ला को १०० रुपया मासिक वनिता विश्राम आश्रम को संचालित करने के लिए दान दिया। इस से विधवाओं को ५ रुपया मासिक वृत्ति देकर सिलाई का काम सिखाने का प्रबन्ध किया गया। इस में १४ (चौदह) विधवाएं शिक्षा ग्रहण करती थीं।

आर्य कन्या विद्यालय कटलेश्वर—इन विध्वाओं के साथ चार, पांच कन्याए भी आया करती थीं। प० दीनानाथ जी कौल ने इन को पढ़ाना आरम्भ किया। इसी छोटे से प्रयत्न से विकसित हो कर कन्या विद्यालय मुहल्ला कटलेश्वर का हाई स्कूल बना यह स्कूल अब आर्य समाज करण नगर के अधीन है।

आर्य समाज करणनगर—दीवान जीवण नाथ जी मदन ने ८०० रुपया में एक भूमि का टुकड़ा करणनगर में खरीद कर आर्य समाज भान मुहल्ला को प्रदान किया। आर्य समाज भान मुहल्ला यहां स्थानान्तरित हो गया। इसका नाम अब आर्य समाज करणनगर या आर्य समाज नागरिक हो गया।

इस समाज में पं० जानकी नाथ, पं० दीनानाथ कौल आदि ने किंडर गारटन स्कूल आरम्भ किया। इसका नाम 'विद्या निकेतन' है। प्रत्येक बच्चे से १ रुपया मासिक समाज भवन निधि रूप लिया जाता है। इस २५० रुपया मासिक आय से आर्य समाज का सभा कक्ष (हाल) तथा अन्य कई कमरे बनकर तैयार हो गए हैं।

विद्या भवन स्कूल—पं दीना नाथ जी कौल गांधी जी के सेवा आश्रम में भी रहे हैं। वहीं आपने एक महाराष्ट्र देवी से विवाह किया। दोनों को बच्चों की शिक्षा में रुचि है।

विद्या निकेतन स्कूल के अध्यापकों के तीन शिशुओं को इस दम्पति ने अपने घर पर पढ़ाना आरम्भ किया। यहां अब विद्या भवन स्कूल के नाम से एक विशाल संस्था हैं। इसमें ६०० छात्र पढ़ते हैं। आप सरकारी सहायता भी नहीं लेते है। वैदिक शिक्षा के रूप में यहां भी धर्म शिक्षा का प्रबन्ध है।

आर्य समाज महाराज गंज—स्थापना—आर्य समाज महाराज गंज की स्थापना साधारण सत्संग के रूप में उन्नीस आषाढ़ सम्बत १९८७ को हुई थी। इसकी स्थापना का श्रेय प्रधानतया लाला दयाल चन्द जी और उनके कुछ अन्य सहयोगियों को है। इनमें भक्त हरिचन्द जी, ला० भगवान दास जी (सुपरिटैंडैंट, ऐकाउंटैंट जनरल कार्यालय), ला० रजीत राय जी, तथा महाराज गंज के कुछ व्यापारी थे जिन में अग्रगण्य थे—

१. ला० मंगूमल जी गुमाश्ता ला० राम दित्तामल, अमृतसर।

२. ला० केशो राम दलाल (इनका सुपुत्र श्री राजपाल इस समय भी आर्य समाज का मन्त्री है।)

३. लाला राधाराम, ४. ला० गोबिन्ध सहाय केदारनाथ (फर्म)।

५. ला० बुलाकी राम (सरकारी पदाधिकारी थे)।

६ ला० दूनी चन्द जी के भाई। आप अपना अधिकतर समय समाज कार्य में ही लगाते थे और अपने निजी काम से भी समाज के काम में अधिक रूचि रखते थे।

आरम्भिक सत्संग– आरम्भ में समाज का सत्संग महाराज गंज के एक चौबारे में लगा करता था। बाद में मंदिर निर्माण के लिए भूमि खरीदी गई।

भूमि खरीद– समाज के लिए २०९०३ वर्ग फुट भूमि श्रीमती समदा बानो बेगम से २४०० रुपये में खरीद की गई। इस भूमि की रजिस्ट्री असल अब आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब गुरुदत्त भवन, जालन्धर के पास है। उस समय यह १. ला० बालचन्द जी, २. ला० केदार नाथ जी, और ३. ला० मुकुन्द लाल जी के नाम से कराई गई थी।

यहां ही मिति १४ आषाढ़ सम्वत् १९८१ को आर्य समाज का अपना भवन बनना प्रारम्भ हुआ। इस पर एक विशाल भवन का निर्माण हो चुका है। यहां ही अब आर्य समाज का सत्संग लगता है।

हाई स्कूल—इस समाज के साथ भी एक हाई स्कूल की स्थापना की गई थी। यह कई वर्ष तक शिक्षा प्रचार में अग्रसर रहा। सन १९४७-४८ में जब शेख अब्दुल्ला राज्य का प्रधान मंत्री बना तो उसने इस की सरकारी सहायता इस लिए बन्द कर दी की यह स्कूल साम्प्रदायिक है और धर्मशिक्षा देता है अतः यह शिक्षा केन्द्र बन्द हो गया।

वार्षिकोत्सव—आर्य समाज महाराज गंज का प्रथम वार्षिकोत्सव सन् १९१३

में हुआ इस पर महात्मा हंस राज जी और उन के सहकर्मी प्रोफेसर पधारे थे। महात्मा जी की अपील पर १२, १३ सहस्र रुपया दयानन्द कालिज के लिए दान प्राप्त हुआ। महात्मा जी तथा उनके अन्य सहयोगी प्रोफेसरों के व्याख्यानों से जनता को लाभान्वित करने के लिए सरकारी दफ्तरों तथा स्कूलों में छुट्टी कर दी गई। महाराजा प्रतापसिंह जी ने भी महात्मा जी का आदर सत्कार किया और वापसी यात्रा के लिए १०० रुपया प्रदान किया। महात्मा जी ने यह रुपया कालिज निधि में जमा कर लिया और अपनी पार्टी के साथ रावल पिंडी के रास्ते पैदल लौटे। इस उत्सव तथा महात्मा जी के आगमन के प्रभाव स्वरूप आर्य युवक समाज की स्थापना और उसके कार्य का वर्णन पहले किया जा चका है।

आर्य समाज के विचारों का काश्मीरी पंडित समाज पर प्रभाव—आर्य समाज के इस प्रचार, शिक्षा प्रसार रूढ़ी वाद के खंडन और सामाजिक सुधार का व्यापक प्रभाव पड़ा है। आज काश्मीरी पंडित समाज वह नहीं जो यह आज से ६० वर्ष पूर्व होता था। यह दो तीन घटनाओं से सुस्पष्ट है इसका विशेष वर्णन नीचे किया जाता है।

१. श्रीनगर में बिस्को स्कूल के नाम से ईसाई मिशनरी संस्था है इस का मुख्य उद्देश्य ईसाई मत का प्रचार है। मुसलमानी समाज पर तो इसका मत परिवर्तन रूप प्रभाव सदा ही नगण्य रहा है। हाँ काश्मीरी पंडित समाज पर प्रभाव डाल कर उन में ईसाई मत का प्रचार करने के लिए कई प्रकार के साधनों का प्रयोग किया गया। हस्पताल के साधन से माधव जी गिगू को मायकेल जोहन बनाया। या बोट क्लब के साधन से, सहभोज के साधन से और कुछ युवकों को अपने समाज से पतित करने का प्रयत्न किया गया रैणावाड़ी मिशन स्कूल में ड्रामाटिक कलब के द्वारा युवक - युवतियों की काम वासना की तृप्ति का साधन भी काम में लाया गया। परन्तु आर्य समाज ने ईसाईयों के ये सब प्रयास विफल कर दिए।

बिस्को स्कूल के कुछ जूनियर अध्यापकों को पदोन्नति तथा धन का लालच देकर सन् १९४० में गुप्त रूप से ईसाई मत में प्रविष्ट किया गया। उनके नाम ये हैं —

१. पं० निरंजन दास फोतेदार, २. पं० गोबिन्द जू राजदान ३.

दीनानाथ भट्टू ४. पं० जिया लाल दर ५. पं० श्याम लाल भट्टू ६. पं० राधा कृष्ण ७. पं० निरंजन नाथ मिस्त्री, ८. चन्द्र पण्डित, ९ पं० गोपी नाथ भट्टू, १० पं श्याम लाल

इनको चुपके से सपरिवार ईसाई मत का बपतिस्मा दिया गया। लाहौर के आर्क बिशपने यह मत परिवर्तन सम्पुष्ट किया और इन सब को आशीर्वाद दिया।

यह कार्य गुप्त रखा गया, पर कनिष्ट (जनियर) अध्यापकों की पदोन्नति से वरिष्ठ (सीनियर) अध्यापकों में रोष फैला। इस से भेद खुल गया। ये लोग अपने घरों में तो हिन्दू बने रहते परन्तु गिरजे में ईसाई कहलाते। आर्य समाज को यह पता लगने पर आन्दोलन चला। बात स्पष्ट न होती थी। सनातन धर्म युवक सभा के सचालकों के पास मामला गया तो उन्होंने लीपा-पोती करके टालने का प्रयत्न किया इस पर आर्य समाज रैणाबाड़ी तथा अन्य सम्बन्धित लोगों ने हिन्दू लीग की स्थापना की इसने इस सारे कांड को अपने हाथ में लिया लाहौर के आर्क बिशप से सम्पर्क स्थापित किया सभी सदिग्ध व्यक्तियों को एक प्रश्नावली भेजी गई। उनसे स्पष्ट उत्तर माँगे बिम्को स्कूल के अधिकारियों से भी पूछ ताछ की गई अन्त में सारा कांड स्पष्ट करके एक परिपत्र (पैम्फलेट) प्रकाशित करके सारी स्थिति जनता के सामने रखी गई।

इस पर विधिवत आन्दोलन चलाया गया। इसके परिणाम स्वरूप न केवल ये दस व्यक्ति पतित होने से बच गए, अपितु भविष्य के लिए पादरियों का यह कुचक्र भी सर्वथा बेकार हो गया।

२. परमेश्वरी देवी हांडू यह एक विधवा की असहाय लड़की सरकारी सहयोगी संस्था में माल बिक्री पर नौकर थी। सस्था का मुसलमान खजानची इस से बिकरी की राशि लेने में देर किया करता था कभी कभी नोट खोटे - फटे होने पर वापस करता और इस तरह उसे देर तक रोके रखता था। मैनेजर भी मुसलमाम था उससे साँठ - गांठ थी रात पड़े इसे घर पहुँचाने जाता। बेचारी के सिर पर कर्ज हो गया तो इस सरकारी रुपया को पास रखकर 'अमानत में खयानत' के दोष से भयभीत किया। इस प्रकार इसे बहका कर अपने घर में डाल लिया। यह लड़की रैणाबाड़ी की थी और रैणाबाड़ी आर्य समाज का गढ़ था।

इस लड़की की वापसी के लिए अभूतपूर्व आन्दोलन चला। इस प्रकार की हलचल और निर्भयता का प्रदर्शन पंडित समाज में पहले कभी न हुआ था। सब कारोबार बन्द हो गया। दफ्तरों में काश्मीरी पंडितों ने काम छोड़ा सहस्त्रों की संख्या में स्त्री-पुरुषों के जलूस प्रतिदिन निकलने लगे। लाठी वर्षा पोलीस के अत्याचार, अश्रु गैस के गोले और गोली-बन्दूक से भी यह आन्दोलन दबाया न जा सका। इसका देहली का केन्द्रीय सरकार पर भी प्रभाव पड़ा। जम्मू राज्य की सरकार भी घबराई। मुसलमान खजानची पर मुकदमा चलाया गया। परन्तु परमेश्वरी देवी को कचहरी में ला कर माता के हवाले न किया जा सका

प्रधान मंत्री श्री मती इन्द्रगाँधी और गृह मंत्री श्री चहवान श्रीनगर पधारे काश्मीरी पंडित समाज को आश्वासन दिया गया कि लड़की उपलब्ध कर के वापस की जायगी। इस पर आन्दोलन शान्त हो गया। पर केन्द्रीय मन्त्री और राज्य मन्त्री बेईमान सिद्ध हुए और एक बार आन्दोलन के समाप्त हो जाने पर बात वैसी की वैसी रही।

पर इस आन्दोलन ने काश्मीरी हिन्दू समाज की एक भावना और बलिदान के लिए तत्काल कटिबद्ध हो जाने की बात को पूर्णतया सिद्ध कर दिया और आर्य समाज के काम के प्रभाव का ज्वलन्त उदाहरण उपस्थित कर दिया। इस कार्य में आर्य समाज हजूरी बाग व श्री नेत्रपाल जी ने विशेष परीश्रम और कार्य किया श्री रामगोपाल शालवाले ने भी इसके समर्थन में बहुत प्रयत्न किया।

३. अहमदियों से टक्कर कादयानी अहमदियों ने अपने एक मौलवी दिल मुहम्मद को "संस्कृत का विद्वान" घोषित कर श्रीनगर में प्रचारार्थ भेजा। इसका भी परीणाम वही हुआ जो पं गणपति द्वारा पादरी जानसन का हुआ था। पर इस बार बाहिर के विद्वानों की आवश्यकता नहीं पडी। स्थानीय आर्य समाज का साहित्य जानने वालों ने ही इसे भगा दिया

पादरीयों ने सहभोज करके तथा सम्मिलित चाय पिला कर कुछ काश्मीरी पंडित अध्यापकों को पुनः पतित करने की चेष्टा की तो पं० कश्यप बन्धु ने स्वयं जाकर पादरियों के साथ चाय पीकर इस बात को प्रमाणित कर दिया कि केवल चाय आदि के सहपान से काश्मीरी पंडित अब बिरादरी में पतित नहीं

होता है। इस प्रकार काश्मीरी समाज को आर्य समाज ने प्रभावित कर के इसे अमुल - चल बदल दिया है।

लदाख में आर्य समाज का प्रचार—लद्दाख का जिला विस्तार में भारत में सब से बड़ा है। इसका बिस्तार ९७७८२.४ वर्ग मील है। सन् १९६१ की जनगणना के अनुसार इस जिले की सारी आबादी ८८३५१ थी। इस की भूमी का १४०० वर्ग मील भाग अब चीन के अनुचित अधिकार में हैं। यह प्रदेश जनरल जोरावर सिंह की स्मृति है। उसने अपने प्राणों की बलि दे कर इसे भारत का अंग बनाया था। इस प्रकार उस ने भारत की सीमा को कैलाश पर्वत और मानसरोवर तक पहुचाया था।

इसकी जनता प्रायः बौद्ध धर्मावलम्बी है पर अंग्रेजी राज्य के आरम्भ से ही यहाँ ईसाई पादरियों के प्रचार केन्द्र रहे हैं। ईन्ह सरकार की ओर से सभी प्रकार की सुविधाएं प्राप्त हैं। काश्मीर में अब्दूल्ला शाही आने पर यहाँ मुसलमानों की सख्या में बृद्धि होने लगी। परिणाम स्वरूप अब १९६१ की जनगणना के अनुसार जनसख्या में बौद्ध केवल ५३.८% है जब कि मुसलमानों की सख्या ४५.४% हो गई है। इन मुसलमानो में केवल 7% ही काश्मीरी भाषा भाषी हैं इसके अर्थ यह हैं कि लगभग आधी बौद्ध आबादी ४४.७% मुसलमान हो चुकी है। और यदि यही दशा रही तो इस प्रदेश का मुसलमान बन जाना कुछ समय की ही बात है इस समय भी प्रायः सभी कर्मचारी मुसलमान ही हैं।

इस परिस्थिति से चिन्तित हो कर कुछ बौद्ध नवयुवकों ने प्रादेशिक सभा के प्रधान महात्मा खुशहाल चन्द को पत्र लिख कर प्रान्त की सुधि लेने की प्रार्थना की थी।

इस पर सभा ने सन् १९४४ में पं० रामचन्द्र आर्य को प्रचारक नियुक्त कर के लद्दाख भेजा। उन को एक दुभाषिय की सेबाए भी सुलभ कराई गई थीं। पंडित जी ने यह पहले १९४४ में और फिर १९४५ में जाकर प्रचार किया पं श्री धर जी कौल ने जो यहाँ ऐसिस्टैंट इन्सपैक्टर आफ स्कूल्ज़ थे भी सहयोग दिया।

सोमन एतो बदन का बलिदान सोमन एतो बदन यह एक लद्दाखी नवयुवक था। इसे लाहौर, ब्रह्मा महाविद्यालय में प्रशिक्षण देकर प्रचारक रूप में लद्दाख में नियुक्त किया गया, पर सन् १९४७ में मुसलमानों ने इसे गोली मार कर मार दिया। इस प्रकार लद्दाख प्रचार में यह प्रथम बलिदान था।

आर्य समाज करगल—सन् १९३१-३२ की बात है कि ला० मुलकराज जी मीर पुरी को करगल भेजा गया। आप पी-डब्ल्यू-डी के महकमा नहर में कर्लक थे करगल में मुसलमानों की जन संख्या अधिक है। यह लोग शिय्या हैं बड़े कट्टर रूढ़ी वादी मुसलमान हैं। यहां आर्य समाज की स्थापना की आशा नहीं।

लाला मुलकराज जी ने स्वामी दर्शनानन्द जी के बहुत स्ट्रेंथ रददी के भाव बाज़ार से खरीद किये। इन्हें वहां बाँटा। इस से कुछ व्यक्तियोंतों के विचारों में परिवर्तन हो गया। परिणाम स्वरूप ये लोग मिल कर बाज़ार में एक स्थान पर सत्संग लगाने लगे। आर्य समाज के नाम पर भूमि खरीदी न जा सकती थी।

उस समय रियासत में ग्लैंसी कमीशन बैठा। मुसलमानों की शिकायत पर कमीशन ने घोषना की कि जिन लोगों को अपना धर्म पालने में कठिनाइयाँ हैं वे कमीशन को ज्ञापन दें। पता लगने पर बहुत से अंगूठों का निशान लगवा कर एक ज्ञापन कमीशन को दिया गया। उसी के आधार पर स्थानीय तहसीलदार से एक मुस्लमाज को ५० रुपये देकर भूमि उस से "दान" ली गई। ६ रुपये और व्यय करके ५६ रुपये में आर्य समाज के लिए भूमि खरीद कर ली गई। एक सज्जन ने ५० रुपये दान दिया। इस से भूमि पर एक कच्चा कोठा तैयार कर के "आर्य सत्संग" के नाम से आर्य समाज का सत्संग यहाँ लगाया जाने लगा।

इस समय इस मदिर की क्या अवस्था है, यह भी पता नहीं है।

१९४७ का पाकस्तानी आक्रमण— सन् १९४७ के पाकस्तानी और

कबायलयों ने कशमीर पर आक्रमण कर दिया। अकथनीय अत्याचार किये इस आक्रमण में कशमीर के हिन्दुओं पर विशेष अत्याचार किया गया बारामूला हदवाडा, सोपुर, पट्टन आदि स्थानों पर लूट मार और अत्याचारों की अति हो गभीर सहस्त्रो हिंदू नर नारी बच्चे जान से मारे गए। उनकी सम्पति लूटी गई 2/3 सहस्र हिन्दूओं का धर्म भ्रष्ट कर उन्हें जबरदस्ती मुसलमान बनाया गया।

आक्रमन कारियों को भारतीय सेना ने मार भगाया तो समाज सुधार सभा और आर्य समाज ने इस काम को अपने हाथ में लिया इस कार्य का केन्द्र आर्य समाज करण नगर (नागरिक आर्य समाज) था। इस के सदस्यों में से श्री वीर विश्वेश्वर और श्री दानानाथ जी कौल ने इन स्थानों का भ्रमण किया ग्राम ग्राम जा कर दफनाए गए हिन्दुओं की शवों को भूमि से निकाल कर दाह संस्कार किया गया।

जबरदस्ती मुसलमान बनाए गए सभी हिन्दूओं को शुद्ध करके पुन. जाति में सम्मिलित किया गया। उनकी सहायता के लिये कपड़े तथा कुछ धन राशि भी वितरण की गई।

पांचवां अध्याय

लित दउद्धार लहर

आर्य समाज का दृष्टि कोण – दलितों या अछूतों के उद्धार के बिषय में आर्य समाज का दृष्टिकोण विशेश है। दलित वर्गपन की प्रथा को उन्नीसवी शताब्दी के भारतीय सुधारकों में केवल श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती ने ही इसे शास्त्र और भारतीय सभ्यता संस्कृति तथा प्राचीन परिपाटी के विरुद्ध बताया है। आपने वर्णाश्रम व्यवस्था को जन्म मूलक होना वेद विरुद्ध शास्त्र

विरोधी, और भारतीय संस्कृति के विपरीत प्रतिपादित किया है। अपने प्रसिद्ध ग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' में इसके जन्म मूलक होने को प्रबल खंडन किया है। अपने मन्तव्य और अवमन्तव्य तथा 'आर्योद्देश्य रत्न माला में स्पष्ट घोषणा की है जन्म से सभी शूद्र और कर्म से वर्ण का निर्णय होता है, जन्म से नहीं।

प्रत्येक आर्य के लिए यह एक जीवन सिद्धान्त बन गया कि जन्म से कोई व्यक्ति नीच या ऊँच नहीं। सब समान हैं। इस प्रकार दलितों के विषय में प्रत्येक आर्य समाजी का विश्वास है कि यह प्रणाली, घातक, जाति द्रोही शास्त्र विरुद्ध और अवैदिक है इसका दूर करना प्रत्येक आर्य का प्रथम कर्तव्य है।

दलित उद्धार का आरम्भ—स्वामी दयानन्द किसी को भी जन्म से अछूत न मानते थे आपने नाई के हाथ का पक्का खाना खा कर इसे प्रमाणित कर दिया। लुध्याना में जन्म के मुसलमान उमरदीन को शुद्ध कर के अलख धारी का नाम दिया। यहाँ ही १९ मार्च १९७७ को मास्टर राम शरण जो पहले ब्राह्मण था, परन्तु बाद में ईसाई हो गया था, को आर्य धर्म का स्वरूप समझा कर शुद्ध किया। पजाब में ये दोनों प्रथम शुद्धयाँ थी एक मुसलमान की और एक ईसाई की। इस प्रकार हिन्दू धर्म तथा समाज के बन्द दरवाजों को खोल दिया।

स्वामी जी की मृत्यु के पश्चात् आर्य समाज ने दलितोद्धार को सामूहिक रूप दिया। सर्व प्रथम प० गगाराम जी ने मुलतान, मुज़फर पुर जिलों में ओड़ नाम की दलित जाति को यज्ञोपवीत देकर द्विज का दर्जा देकर हिन्दू समाज में समानता का अधिकारी बना दिया।

महात्मा मुन्शीराम जी ने जलन्धर, गुरदास पुर तथा अन्य स्थानों में रहतिया जाति को यज्ञोपवीत देकर सामूहिक रूप से हिन्दू समाज का समान अंग बना दिया।

जब आर्य समाज जम्मू काश्मीर में पहुँचा तो उसने सर्व प्रथम इसी समस्या को सुलझाने का बीड़ा उठाया। प्रत्येक आर्य समाज इस लहर का केन्द्र बना और प्रत्येक आर्य समाजी इस का प्रचारक।

जम्मू काश्मीर राज्य में दलितों की दशा— जम्मू काश्मीर

राज्य के तीनों भागों की ३५ लाख की सख्या में जम्मू प्रान्त में हिन्दू ६१ प्रतिशत और मुसलमान ३७ प्रतिशत थे। लद्दाख में हिन्दूओं की संख्या एक प्रतिशत से भी कम और काश्मीर में औसतन ५% थी। श्रीनगर में ७% और अन्य स्थानों में कम इस प्रकार केवल जम्मू प्रान्त में ही हिन्दू ऐसी संख्या में थे कि कुछ प्रभाव डाल सकते थे। परन्तु यह आपस में बँटे हुए थे। इनकी १४ लाख की संख्य में ३ लाख तो अस्पृश्य माने जाते थे। इनमें १५०:० से कुछ आधिक मेघ डूम बटवाल, बसिष्ठ आदि जातियाँ थीं। राजपूत और ब्राह्मण न केवल इन्हें छूते ही न थे। वबकि मुसलमानों को इनसे अच्छा मानते थे। फलतः इनके मुसलमान होने पर इन से छूत छात मिट जाती थी। ये बेचारे अशिक्षित थे। क्यो कि स्कूलों में इन के बच्चों को प्रविष्ट न किया जाता था।

ये लोग भूमि विहीन होने से मजदूरी कर के पेट पालते थे। जमींदार और सरकारी कर्मचारी इनसे प्रायः बेगार लेते थे। तिरस्कार पूर्वक व्यवहार करते थे। इसलिये ये प्रायः गरीब भी थे। राजपूत अपने सामने इनको चारपाई पर बैठना भी सहन न कर सकते थे। कूओं से इन्हें जल न भरने दिया जाता था मन्दिरों में जा कर यह लोग देव दर्शन भी न कर सकते थे क्योंकि इनके प्रवेश से मंदिरों के भ्रष्ट हो जाने का भय था। इन्हें अपने शवों को भी अन्य सवर्ण हिन्दुओं के भरघटों में जलाने तक न देते थे।

इस प्रकार सभी सामाजिक अन्यायों से इन्हें मुसलमान बन जाने पर बाध्य किया जा रहा था। यह आश्चर्य है कि इतनी विषम परिस्थितियों में भी ये लोग हिन्दू धर्म से प्रेम करते रहे और हिन्दू ही बने रहे

आर्य समाज की दलित उद्धार की विशेष संस्थाएं :-

आर्य समाज को अपने सिद्धान्त के अनुकूल यह स्थिति सर्वथा धर्म विरुद्ध लगती थी। हिन्दूसमाज को सगठित और सबल बनाने के उस के ध्येय के भी यह विरुद्ध थी। अतः प्रत्येक आर्य समाज इन के सुधार का केन्द्र स्थान था और प्रत्येक आर्य समाजी को इन से हृदय से सहानुभूति थी सामूहिक रूप से इस सुधार कार्य को सम्पन्नत करने के लिए आर्य समाजों के अतिरिक्त भी ऐसी सस्थाए बनीं जिनका केवल यही मुख्य काम था। इन में मुख्य ये थी १ मेघ उद्धार सभा स्यालकोट

२ आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की दयानन्द दलित उद्धार सभा
३ दयानन्द दलित उद्धार मंडल होश्यार पुर
४ आर्य प्रादेशिक सभा पजाब, सिन्ध, बिलोचिस्तान और
५ हरिजन सेवक संघ की पंजाब शाखा।

१ आर्य समाज स्यालकोट की स्थापना १८९० में हुई। उसी वर्ष कुछ मेघों को आर्य समाज में शुद्ध किया गया। सन् १९०६ में इस के लिये विशेष प्रयत्न आरम्भ किया गया। और सन् १९१२ में मेघ उद्धार शुद्धि सभा को नियमित रूप से १८६० के ऐक्ट २१ के अधीन रजिस्टर कराया गया।

ला० गंगाराम पुरी वकील ने अपना जीवन इस काम के अर्पण कर दिया। ला० खुशहाल चन्द प्रधान आर्य समाज ला० चरण दास पुरी आदि आर्य समाज के सदस्यो ने इस काम में विशेष प्रयत्न किया। मेघ जातो की सख्या भारत में ३ लाख है। इन में से जिला अमृतसर में १०००० बम्बई प्रदेश में ३४००० बड़ोदा राज्य में २००० मध्यप्रदेश में एक सहस्र और शेष ८०००० स्यालकोट गुरदास पुर जालन्धर गुजरात और जम्मू-काश्मीर में थे हिन्दू और मुसलमान दोनो इस सुधार के काम में आर्य समाज के विरोधी थे।

इस सभा ने इस कार्य को इस वेग से किया कि कुछ ही वर्षों में स्यालकोट गुजरांवाला, गुरदासपुर और गुजरात जिलों के सभी मेघों को हिन्दू समाज का प्रभावी अंग बना दिया। सब शुद्ध हो गए। इन के लिए स्यालकोट में हाई स्कूल और औद्योगिक श्रेणियों का संचालन किया गया। कबीर वाला के पास ५० मुरब्बा जमीन ले कर आर्य नगर नाम की बस्ती बसाई गई।

जम्मू प्रान्त में १५४२९ मेघ थे। इन के शुद्ध करने के लिये भी अभियान चलाया गया। मेघ लड़को कों प्रशिक्षण देकर उन्हें प्रचारक शिक्षक नियुक्त किया गया। पं राम दित्ता मल प० मगल देव, चन्दाराम, मथुराप्रसाद शास्त्री प्रचार का काम करते थे। और मास्टर राम रखा, केसर नाथ, बेली राम, बांशी राम म० बुटीराम आदी इस समाज के अधीन अध्यापक का काम करते रहे। अखनूर छम्ब, नारायण, ढोक, बुटहरा आदि स्थानों पर इनके बच्चों के लिए पाठशालाये खोली गई।

इन के सामाजिक सुधार के लिए ग्रामों में पंचायतें बनाई चौधरियों की चुनाव प्रणाली की प्रथा चलाई। चौधरियों मे मुख्य चौधरी चुने गए और मुख्य

चौधरियो की सभा स्यालकोट में स्थापित कर के इन के द्वारा सुधार कार्य किया गया। इस प्रकार इस जाती की काया पलट कर दी गई।

० राजपूतों ने ग्रामों में मेघों को कई स्थानों पर पीटा। ग्राम पत्तन सेन से उन को निकाल दिया। गुलाबू और भगतू मेघों पर झूठे मुकदमे बना कर दण्ड दिलवाया। आर्य सभा ने इनका केस लड़ा। वे बरी हो गए और राजपूतों को झूठा मुकदमा बनाने कर १४० रू जुरमाना हुआ।

सन् १९०३ में स्वामी सत्यानन्द जी महाराज की अध्यक्षता में स्यालकोट में महान शुद्धि यज्ञ हुआ। जम्मू प्रान्त से महन्त रामदास ५०० मेघो को इस यज्ञ में ले गया ग्राम के नम्बरदार अब्दुल्ला ने तहसीलदार से इस की शिकायत कर दी। तहसीलदार बिशनदास ने महान्त राम दास से इस दोष के लिये भविष्य में यह काम न करने के लिए 'Security Bond' (प्रतिज्ञा पत्र मुचलका) लिखाया। उसकी नकल नीचे दी जाती है—

" I, Ram Dass son of Sohana Megh of Karim, Tehsil Jammu have been required by the Govt of H. H. the Maharaja of Jammu and Kashmir state to give cognizance for Rs. 100/= to the effect that in future, I will not take the Meghs of the State to the British territory for getting them enteved in the Arya Samaj, nor will I induce them to do so.

Therefore I give the cognizance for Rs. 100/ = and declare that if it is proved that I got Meghs entered in the Arya Samj or induce them to do so, I will pay the sum of Rs 100=entered in this cognizance in default of which it may be recovered from my property.

Witnessed -

1. Lalu Megh of Kurrah. (Sd.) Ram Dass

2 Kaku Megh of Jammu. 7th Har, 1961.

Tehsildar's order file No 125.

Instituted on the 3rd Ashwin 1960, decided on 7th Har, 1 60

"Complaint of Abdulla of Jammu that, Ram Dass of Kahran got 500 Meghs to join the Arya Samaj at Sialkot" इस प्रकार स्पष्ट होता है कि मेघों को आर्य समाज का सदस्य या समाज के सत्संगमें जाना भी तहसीलदार बिशन दास की राय में सरकारी कानून के बिरुद्ध था। अपने आप में यह मुकदमा ही प्रकट करता है कि उस समय दलित जाति की दशा कैसी थी।

नवम्बर १९१० में ग्राम नादाल के ब्राह्मण नम्बरदार ने एक मेघ स्त्री को इस लिए पीटा कि वह आर्य समाज में जा कर शुद्ध क्यो हुई ? उसके लड़के पर झूठा चोरी का मुकदमा बना कर उसे सज़ा दिलवाई। अपील पर वह बरी हो गया। नम्बरदार को कचहरी से दंड दिलवाया गया।

आलोचक ग्राम के मेघों को शुद्ध होने पर ग्राम के मुसलमानों ने इतना पीटा कि वे सारे के सारे ग्राम छोड़ गए

शुद्ध हुए एक महाशय को फसल काटते समय प्यास लगी। खेत के मालिक मुसलमानों ने उसे अपने साफ पानी के स्थान पर कहीं और से पानी न पीने दिया उस ने सारा दिन कष्ट सहन किया पर मुसलमनों का पानी पीने से इन्कार कर दिया।

मेघ जाति के लोग इस प्रकार अपनी परीक्षा में पूरे उतरे।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब लाहौर इस सभा ने दलितों में विशेश जागृति उत्पन्न करने के लिए दयानन्द दलित उद्धार सभा की स्थापना की। इस सभा ने जम्मू प्रान्त को कई मंडलों में बाँट कर हर एक मंडल में प्रचारक तथा भजनीक नियुक्त किये। स्थानीय आर्य समाजों के सहयोग से इस काम में पर्याप्त उन्नति की गई। दलितों की शिक्षा के लिए कई पाठशालाएं भी खोली गई। महाशय रांमचन्द्र के बलिदान पर बुटहरा में भूमि लेकर भवन कूप आदि का निर्माण कर के वार्षिक मेला लगाने का आयोजन किया। पाठशाला की स्थापना की। महाशय अनन्त राम जी जब तक जीवित रहे सभा की ओर से इस का प्रबन्ध करते रहे। इस समय यह बलिदान स्थल आर्य समाज दयानन्द मार्ग जम्मू द्वारा सचालित है बलिदान दिवस पर प्रतिवर्ष उत्सव और मेले का आयोजन उत्साह पूर्वक होता है। इस के आस पास भी कई अन्य स्थानों

पर पाठशालाएं खोली गई थीं।

म० रामचन्द्र के बलिदान दिवस २०-१-१९२३ के बाद दलितोद्धार के काम को विशेष प्रगति मिली। आर्य समाज दयानन्द मार्ग जम्मू में इस काम के लिए महाशय कृष्ण जी की अध्यक्षता में एक बिशाल सम्मेलन हुआ। इस में अनेक सज्जनों और देबियों ने इस काम में अपना तन-मन-धन अर्पण करने के प्रण लिए।

प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में ही श्री रामभजदत्त चौधरी की अध्यक्षता में एक बिशाल शुद्धि करण यज्ञ कठूया में हुआ। इस में सैकड़ों दलितों को यज्ञोपवीत दिए गए। सारे प्रदेश पर इस का स्थायी प्रभाव पड़ा।

इसी प्रकार पौणी ग्राम में श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी की अध्यक्षता में भी एक भारी शुद्धि करण समारोह हुआ। इस में लगभग २०,००० लोग सम्मिलत हुए। श्री हरिराम जी वानप्रस्थी, श्री ससार चन्द्र जी आदि ने इस में विशेष योग दिया। स्वामी जी महाराज ने आदि शँकराचार्य की नकल में—इस यज्ञ में शंख नाद से दलितों की शुद्धि की घोशणा की थी।

आर्य प्रादेशिक सभा के तत्वावधान में— दलितों में विशेष कार्य हुआ। मीरपुर, कोटली, पुन्छ, राजौरी, नौशहरा, और जम्मू क इलाकों में शुद्धि करण का प्रचार अधिक रहा। सभा के उपदेशकों ने कई स्थानों पर शुद्धि समरोह किये। समाज बनाए, पाठशालाएं स्थापित कीं। छात्र वृत्तियां दे कर इन के बालकों को दयानन्द कालिज और ब्रह्ममहा विद्यालय लाहौर में शिक्षा दिलवाई। महात्मा हसराज जी स्वयं इस में विशेष रूचि लेते थे। आर्य समाज पुरानी मंडी जम्मू और उसके प्राण लाला दयानचन्द जी ने इस दिशा में विशेष उत्साह से काम किया।

अखनूर, कांगडीं, छम्भ, ढोक और अन्य कई स्थानों में पाठशालाएं और आर्य समाज स्थापित किये। इन में अधिकतर दलित भाई ही सदस्य और कार्य कर्त्ता रहें।

इसी प्रकार राजौरी-नौशहरा क्षेत्र में राजोआ, चाही, बुटानी, मंगला

देवी आदि स्थानों में पाठशालाएं खोली गईं। आर्य समाजों का संचालन हुआ।

लाला देवी चन्द जी द्वारा स्थापित दयानंद दलितोद्धार मंडल होश्यार पुर—इस मंडल ने भी इस रियासत में दलितों के उत्थान के लिए बहुत काम किया। मौलाना पं० सत्यदेव, महाशय बूटीराम, म० नाहर सिंह, म० शंकर दास तो इस रियासत में स्थायी प्रचारिक रहे। ला० मोहन लाल जी मीत्याल जम्मू ज़िला और श्री दीवान चन्द जी वकील मीर पुर में मंडल के प्रचार कार्य के मंत्री रहे। ला० देवराज जी आर्य वैदिक मिशनरी पं० नन्दलाल जी आदि तथा अन्य प्रचारक भी समय समय पर भ्रमण करते रहे रियासत की सभी आर्य समाजों का पूर्ण सहयोग भी उन्हें सदा प्राप्त होता रहा।

जम्मू में दालितोंद्धार सम्मेलन—ला० देवराज जी वैदिक मिशनरी और लेखक के सत्प्रयतन और आर्य समाज पुरानी मंडी तथा दयानन्द मार्ग आर्य समाज जम्मू के सहयोग से मंडल ने एक विशाल दलित उद्धार सम्मेलन किया। श्री गोपाल स्वामी आयगर ने जो इस समय रियासत में प्रधान मंत्री भी थे इस सम्मेलन का उद्घाटन किया। प्रान्तभर के आर्य समाजियों के अतिरिक्त दलित जातियों के सहस्रों लोगों ने इस में भाग लिया। यह समरोह दो दिन रहा। स्वागत समिति की ओर से विशाल सहभोज लगर का प्रबध था इस में मिलकर भोजन करते रहे। भोजन बनाने, बर्त्ताने आदि का सब कार्य दलित भाइयों के हवाले था श्री गोपाल स्वामी आयंगर ने आर्य समाज के इस कार्य की भूरि-भूरि सराहना की। आर्य समाजों के कार्य कर्त्ताओं और अधिकारियों में ला० द्याल चन्द जी, ला० दीना नाथ जी महाजन प्रिन्सिपल गिरधारी लाल जी ला० मानक चन्द जी, ला० अरूढ़ चन्द जी आदि ने विशेष योग दान दिया।

हरिजन सेवा संघ—महात्मा गांधी जी द्वारा स्थापित हरिजन सेवा संघ की पंजाब शाखा ने भी रियासत में हरिजन उद्धार का काम बड़े उत्साह से किया। रियासत में उस की शाखा के प्रधान ला० द्यालचन्द जी थे। इस लिए उस समय की दालित पाठशालाओं— अखनूर, छम्ब ढोक, नारायण आदि तथा वेद मंदिर में आर्य समाज द्वारा स्थापित अनाथालय के व्यय में संघ का सहयोग भी प्राप्त हो गया।

सन् १९४१ की हरिजन कानफ्रैंस सन् १९४१ में जन गणना के समय जम्मू और आस पास एक विशेष परिस्थिति पैदा हो गई नगरों और ग्रामों में मुस्लिम लीग का प्रचार जोरों पर था उधर काँग्रेस ने जन गणना के बहिष्कार का नारा लगा दिया। इस से प्रायः हिन्दू इस के महत्त्व के प्रति उदासीन हो गए। इस से लाभ उठा कर मुसलमान मौलवियों ने दलित भाइयों पर प्रभाव डालना आरम्भ कर दिया कि वे जन गणना में अपने आप को हिन्दू न लिखाएं आर्य समाज के कुछ प्रचारक यथा म० नाहर सिंह, शकर दास आदि उन के झाँसे में आ गए। इस से एक समस्या खड़ी हो गई

इस समस्या को निपटाने के लिए आर्य समाज ने रतियां और खैरो ग्रामों में दलितों के एक बड़े सम्मेलन का आयोजन किया भिक्षु सत्यपाल जी तथा ठाकुर अमर सिंह जी को बुलाया गया। मुल्ला मौलवयों के साथ सैंकड़ों मुसलमान भी इस अवसर पर आए बहस मुबाहिसे हुए। अन्त में निर्णय लिया गया कि सभी दलित भाई हिन्दू हैं और जन गणना में वे अपने आप को हिन्दू ही लिखवाएं। विरोधियों को मुँह की खानी पड़ी। विशाल सहभोज से यह समारोह समाप्त हो गया।

दलितोद्धार के लिए आर्य समाज का बलिदान— रियासत में दलित भाइयों को ऊपर उठाने और उनके सामाजिक कष्ट दूर करने के लिए आर्य समाजियों ने स्वयं कष्ट सहे। घर वालों और बिरादरी वालों का बहिष्कार सहन किया। अपने माता-पिता के घरों से निकाले गए, और प्राण तक भी निछावर किये हैं। तब जाकर यह दलित सुधार की लहर सफल हो पाई है।

१. ला० कर्म चन्द जी वकील को अपने ही पिता ने घर से निकाल दिया

२. ला० मोहन लाल मोत्याल को अपने घर में तीन माह तक चौके में भोजन न मिला और वह बाहर भोजन करते रहे।

३ श्री वानप्रस्थी हरिराम जी को बिरादरी वालों ने मृत घोषित कर के तिलांजली' भी दे दी थी। घर से निकाले गए।

४. ला दयाल चन्द और उन के साथियों का नगर के प्रतिष्ठित जनों ने इस लिए बायकाट किया कि उन के घर में एक मेघ नौकर था।

अखनूर के आर्यसमाजियों की दुकानों से सौदा खरीदना बन्द किया गया। कई दुकानदारों ने अपना काम बदल लिया। कहार, नाई धोबी आदि की सेवाओं को बन्द कर दिया गया। घर वाले स्वयं दरया से पानी लाते रहे। मोर पुर में आर्य समाजियों का सामाजिक बहिष्कार इतना कठिन था कि आर्य नवयवक स्वयं उन के घरों में जल पहुंचाते रहे। ला० बिशन दास वकील को रात के समय बरसात में अपना घर छोड़कर कठूआ से बाहर रात व्यतीत करनी पड़ी और जिला त्यागना पड़ा। ला० तेजराम वकील के सब मुकदमे खारज किए गए और आप को ६ मास तक वकालत का भी काम छोड़ देना पड़ा। ला० सांई दास को बिरादरी ने इस लिए बहिष्कृत कर दिया कि आप ने एक बसिष्ट लड़की का विवाह आपनी बिरादरी में करवाया था

इस प्रकार के सैंकड़ों उदाहरण दिए जा सकते हैं। दलितों को भी कम कष्ट नहीं सहन करने पड़े। यज्ञोपवीत धारण करने पर श्री गोपी चन्द और फिरंगी राम के शरीरों को गर्म लोहे से दागा गया। स्त्रियों तक को पीटा गया, पानी से प्यासा रखा गया, उन्हें ग्राम छोड़ कर दूसरे स्थान पर जा जा कर बसना पड़ा। अखनूर में आर्य समाज द्वारा निर्मित स्कूल का छत भी वजीर बजारत ने रौंक दिया। यह काफी समय तक रुका रहा।

केवल आर्य समाज में जाने और उसका सदस्य बनने के लिए जमानत देनी पड़ी। कुमार सभा के सदस्यों को पोलीस से नोटिस दिया गया। कि उन्हों ने यह सभा क्यों बनाई है। रामनगर में उन के जलसे को दफा १४४ लगाकर बन्द कर दिया गया।

इस प्रकार आर्य समाजियों और दलितों दोनों को हिन्दू समाज मुसलमानों, ईसाइयों जमीनदारों और सरकारी कमचारियों-सभी के आत्याचारों को सहना पड़ा है। अतः यहाँ उन्हें दोहराना उचित नहीं होगा।

पर सखती यहाँ तक ही न रही। कईयों को इस काम में प्राणों की आहूति भी देनी पड़ी। यथा

१. महाशय रामचन्द्र जी तहसील खजाँची को बुटहरा में दलित उद्धार के लिए सभा का आयोजन करने पर लंगेह राजपूतों तथा स्थानीय गूजरों ने जान से मार दिया। उन की यादगार में बुटहरा ग्राम में प्रतिवर्ष

वैसाखी पर 'वीर मेला' मनाया जाता है।

महाशय राम चन्द्र जी के साथ मार खाने वालों में —१ श्री अजीत सिंह सत्यार्थी, पं० भगत राम जी उपदेशक, ३. ला० अनन्त राम जी मन्त्री आर्य समाज दयानन्द मार्ग जम्मू, ४. ला० अनन्त राम जी वकील जम्मू (कोटली निवासी) ५. महाशय जगत राम जी और ६. महता सावन मल जी उपदेशक आदि को भी पीटा गया था।

आर्य समाज ने इन कष्टों को सहन कर के और प्राणों तक की आहूतियाँ देकर रियासत में ऐसा वातावरण पैदा कर दिया कि महाराज हरि सिंह जी आसानी से देव मंदिरों और साधारण कूपों को दलितों के लिए खोल सके। हिन्दू समाज ने इस सुधार का स्वागत किया। पं० देव राज जी अकेला व्यक्ति था जिस ने इस पर त्याग पत्र दिया था और जो तत्काल स्वीकार कर लिया गया था। आर्य समाज तथा अन्य हिन्दू समाज ने इस त्याग पत्र को कोई महत्व न दिया।

छटा अध्याय

आर्य समाज का शैक्षणिक कार्य अर्थात आर्य समाज की शिक्षा संस्थाओं का संक्षिप्त वर्णन

प्रस्तावना—विद्या का प्रचार और अविद्या का नाश करना चाहिये। यह आर्य समाज का एक नियम और उद्देश्य है। आर्य समाज ने अपने जन्म काल से ही इस की पूर्ति का भरसक प्रयत्न किया है

आर्य समाज के साथ पुस्तकालय का होना अनिवार्य समझा गया। महर्षि दयानन्द ने उपनियमों में पुस्तकाध्यक्ष का पद समाज के अन्य पदाधिकारियों के समान रखा यह बात अपने आप में अद्भुत है। किसी और समाज में इस

प्रकार का स्थाई और महत्वपूर्ण पद नहीं रखा गया। आर्य समाज के संगठन में 'स्टोर कीपर' का पद नहीं परन्तु पुस्तिकाध्यक्ष का है। यही प्रकट करता है कि आर्य समाज में विद्याप्रचार का ध्येय कितना महत्त्व पूर्ण है। परिणाम यह है कि प्रत्येक छोटे बड़े आर्य समाज कुमार सभा, युवक समाज, बाला सभा-सभी में एक पुस्तकालय अवश्य होता है। बहुत से आर्य समाजों में वाचनालय के प्रबन्ध भी है।

श्री महर्षि दयानन्द जी ने अपने जीवन काल में भी फरुखाबाद, मिर्जापुर, सोरों, काशी आदि स्थानों पर संस्कृत पाठशालाओं की स्थापना की। अपने स्वीकृति पत्र में अपनी उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा के लिए भी शिक्षा प्रचार, ग्रंथ प्रकाशन, और वेद प्रचार परम कर्त्तव्य ठहराया। अपने जीवन काल में ही ग्रन्थ प्रकाशनार्थ वैदिक यन्त्रालय की स्थापना की।

शिक्षा संस्थाओं का श्रीगणेश—स्वामी जी की मृत्यु पर लाहौर में प्रथम शोक सभा में ही उन की समृति में दयानन्द ऐंग्लो वैदिक विद्यालय डी०ए०वी स्कूल खोलने का प्रस्ताव स्वीकार किया गया। यह स्कूल महान कालिज बना। इस समय इस की संचालिका दयानन्द कालिज सोसाइटी भारत में सब से बड़ा प्रबुद्ध संस्था है कुछ वर्ष पश्चात् ला० रलाराम जी तथा श्री ठाकुर दत्त जी धवन के प्रयत्न से गुजरां वाला गुरुकुल की स्थापना हुई यहीं से कुछ बच्चों को लेकर महात्मा मुन्शीराम जी ने गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना हरिद्वार कनखल के सामने गंगा के पार जंगल में की थी। उसी समय के आसपास महात्मा मुन्शीराम जी और ला० देवराज जी ने कन्या महाविद्यालय जालन्धर आरम्भ किया।

इस प्रकार लड़कों के स्कूल कन्याओं की पाठशालाए और गुरुकुल प्राणाली पर शिक्षा का आरम्भ स्वामी जी की मृत्यु के उपरान्त शीघ्र ही आरम्भ हो गया।

जम्मू काश्मीर में शिक्षा संस्थाएं—जम्मू कश्मीर राज्य में आर्य समाजों की स्थापना के साथ साथ ही स्कूल कालिज, दलितोद्धार पाठशालाओं और गुरुकुलों के संचालन का क्रम भी चल पड़ा।

दलितोद्धार पाठशालाएं—आरम्भ में दालितों में शिक्षा प्रचारार्थ ग्रामों में प्राथमिक पाठशालाएं खोली गईं। यथा—अखनूर, क्षेत्र में छम्ब, ढाक, नारायणा, बुटहरा

जम्मू में—रिहाड़ी मुहल्ला कन्या पाठशाला,

मीर पुर-राजौरी में—राजोआ, चाही, बुहानी, मंगलादेवी, कांगड़ो आदि।

रणबीर सिंह पुरा क्षेत्र में—रणबीर सिंह पुरा, पुरोभान, गुलाब।

गढ़ आन्दाल में तथा कठूआ में इस प्रकार की पाठशाएं खोली गईं।

कन्या पाठशलाएं

आर्य कन्या विद्यालय पुरानी मंडी जम्मू— ला० दयाल चन्द और उन के सहयोगियों ने एक गराज दो रुपये मासिक किराया पर ले कर दलितों के बच्चों के लिए सब्जी मंडी के पास एक पाठशालां खोली।

प० रघुनन्दन जी प्रथम अध्यापक थे। इस कार्य के लिए संस्थापकों का सामाजिक बहिष्कार तक हुआ पर पाठशाला बढ़ कर मिडल तक चली गई और आर्य समाज के मंदिर में लगने लगी। श्रीमती विद्यावती जी इस की अवैतनिक मुख्याध्यापिका तथा संचालिका थीं।

सन् १९४० में हैदरा बाद सत्यग्रह की समाप्ति पर श्री हरिश्चन्द्र जी विद्यार्थी जम्मू में आए। ला० दयाल चन्द जी आदि के आग्रह पर उन्हों ने २५० रुपये मासिक का पद त्याग कर इस पाठशाला को ६०/ मासिक पर सम्हाल लिया। ध्येय यह था कि स्कूलों को वैदिक धर्म के प्रचार का साधन बनाया जा सकता है या नहीं। पाँच छः वर्ष तक इस पाठशाला की उन्नति में पूरे मनोयोग से लगाए। इस काल में हाई तक श्रेणियों हिन्दी की रत्न भूषण, प्रभाकार संस्कृत की प्राज्ञ, विशारद श्रेणियाँ, केवल अंग्रेजी की मेट्रिक, और एफ-ए. तक की पढ़ाई का प्रबन्ध हो गया।

इस काल में गतका तलवार, तीर चलाना, बाजा बजाना संगीत आदि की शिक्षा का भी प्रबन्ध हो गया कन्याओं की संख्या १२०० तक हो गई। कन्याओं में वैदिक धर्म का प्रचार इस गति से हुआ कि आर्य समाज का नाम चमका। विद्यालय की बाला समाज में सहस्त्रों की उपस्थिति होने लगी। कई कन्याओं ने अपना जीवन वैदिक धर्म के प्रचार के अर्पण किया। जम्मू राज्य में हिन्दी की प्रभाकर तक की पढ़ाई के प्रबन्ध का श्रेय सर्व प्रथम इसी पाठशाला को है। हवेली दरगाह सिंह, जिसमें अब पाटशाला है, इसी काल में सरकार से ले ली गई और इस में कई नए कमरे बनवाए गए।

आर्य समाज की दलबन्दी के कारण प्रबन्ध बदला तो पाठशाला का स्तर गिरा फिर यह मिडल तक रह गई। फिर ला० मुल्कराज जी रिटायर्ड इंसपेक्टर ऑफ स्कूल्स जम्मू और मास्टर चूनी लाल जी ने प्रबन्ध सम्हाला। अपने दस बारह वर्ष के अनथक प्रयत्न और निःस्वार्थ सेवा से उन्हों ने इसे पुनः हाई स्कूल तक पहुचाया और भवन का भी विस्तार किया

इस समय यह नगर की अच्छी पाठशालाओं में गिनी जाती है। कन्याओं की संख्य एक हजार तक है। धर्म शिक्षा का सुचारु प्रबन्ध है।

आर्य कन्या पाठशाला रिहाड़ी मुहल्ला जम्मू।

मुहल्ला रिहाड़ी में पहले केवल दलित जातियों की बस्ती थी। उनकी कन्याओं की शिक्षा के लिए आर्य समाज पुरानी मंडी ने इस की स्थापना की पहले यह मिडल तक थी यहाँ से पढ़कर कन्याए आर्य कन्या विद्यालय में चली जाती थीं। श्रीमती विद्यावती जी जो मेघ जाती की थी यहां मुख्याध्यापिका थी। अब यह पाठशाला समाप्त हो चुकी है।

आर्य कन्या पाठशाला कच्ची छावनी—

यह पाठशाला आर्य समाज दयानन्द मार्ग जम्मू के अधीन है। आज से ३०, ३२ वर्ष पूर्व इस की स्थापना आर्य समाज ने की। ला० गुरां दित्ता मल जी इस के मुख्याध्यापक और प्रबन्ध कर्त्ता थे। अपने जीवन के आन्तिम दिन तक आप इस के निर्माण और उत्कर्ष में लगे रहे। उन्हों ने इसे मिडल तक पहुंचाया। हिन्दी की रत्न, भूषण प्रभाकर तक की श्रेणियों का संचालन किया गया।

जब ला० ईश्वर दास जी अपने सरकारी रोडर के पद से निवृत हुए तो पाठशाला का संचालन इन के हाथ में आया लाला जी ने अपने जीवन का शेष भाग इस पाठशाला के अर्पण कर दिया है। इसका वर्त्तमान उन्नति तथा समृद्धि का श्रेय अधिकतर उन्हें ही है तबेला ठाकुर सिंह जिस में अब यह पाठशाला है महाराजा हरि सिंह जी की कृपा से पाठशाला के लिए मिला इस में ला० प्रेमनाथ चोपड़ा और दीवानों ने कमरों के दो ब्लाक बनवाए। अन्य कमरे भी कई दानियों ने बनवाए हैं।

इस समय यह नगर की प्रमुख पाठशालाओं में से एक है। अब यह हाई स्कूल है। हिन्दी की श्रेणियां भी चालू हैं। धर्म शिक्षा तथा संस्कृत शिक्षा का विशेष प्रबन्ध है।

संस्कृत विद्यापीठ ला० दयाल चन्द जी के दान से श्री प० दयाराम जी शास्त्री (जो पहले आर्य कन्या विद्यालय में संस्कृत अध्यापक थे) के संचालन में इसकी स्थापना की। पं० दयाराम जी को संस्कृत विद्या से अगाध प्रेम था। आपने प्राणपण से इस में कार्य किया। आर्य कन्या विद्यालय की प्रायः कन्याएं इस में प्रविष्ट हुई इस में प्राज्ञ विशारद, शास्त्री तक की परीक्षाओं का प्रबन्ध था कुछ कन्याओं ने शास्त्री की परीक्षा भी उत्तीर्ण की। रियासत की कन्या पाठशालाओं में संस्कृत की अध्यापिकाओं की पूर्त्ति इसी पीठ द्वारा हुई है।

कुछ समय पश्चात् प० दयाराम जी श्रीनगर चले गए जिससे वहाँ भी संस्कृत विद्यापीठ के संचालक किया जा सके उनकी मृत्यु के पश्चात् यह संस्था बन्द हो गई

हिन्दी विद्यापीठ राजा मंडी बाजार — इसी संस्कृत विद्यापीठ के नाम पर श्री शकुन्तला मेठ श्री सुशीला तुली और श्री हरिश्चन्द्र विद्यार्थी तथा ला० दीनानाथ आदि के सहयोग से इस विद्यापीठ का संचालन हुआ। श्रीमति विद्यावती जी सुपुत्री ला० दयाल चन्द का वरद हाथ इस पर रहा वह कुछ समय तक इस की प्रबन्ध कर्त्ता भी रही

अब यह विद्यापीठ कन्या हाई स्कूल के नाम पर से प्रसिद्ध है। दीवाननो

विद्यावती जी ने इस को भवन दे रखा है। अब यह संस्था स्वतन्त्र है आर्यसमाज के साथ इस का सम्बन्ध नहीं है।

डी-ए-वी-हाई स्कूल जम्मू डी-ए-वी हाई स्कूल की स्थापना का आरम्भक प्रयत्न चौधरी वेद दत ने किया। आर्य समाज पुरानी मडी के पदाधिकारिओं ला० दयाल चन्द जी, ला० दीनानाथ जी महाजन वकील दीवान अनन्त राम जी, श्री हरिश्चन्द्र जी विद्यार्थी आदि के सहयोग से इस की स्थापना की गई। चौदरी वेदव्रत प्रबन्ध कर्त्ता थे। प्रबन्ध कर्तृ सभा समाज से स्वतन्त्र थी परन्तु दीनानाथ महाजन प्रधान आर्य समाज ही इस के भी प्रधान थे तथा अन्य सदस्य भी आर्य समाज के ही सदस्य थे।

कुछ काल चल कर स्कूल शिथिल हो गया। दान में प्राप्त धन का भी ठीक हिसाब न था। अतः स्कूल में अनुशासन न रहा। न सरकारी स्वीकृतिन सहायता। प्रबन्ध वृत सभा भी उदासीन हो गई।

परिणाम स्वरूप चौधरी वेद व्रत ने अपना सम्बन्ध विच्छेद कर लिया। स्कूल नई कमेटी के हवाले कर दिया गया इस के प्रधान भी ला० दीना नाथ जी महाजन थे। सदस्यों में प्रो० दौलत राम आदि कुछ और प्रतिष्ठित आर्य पुरुष भी आ गए।

श्री हरिश्चन्द्र विद्यार्थी को पहले प्रबन्ध कर्त्ता और फिर स्कूल का प्रिंसिपल नियुक्त किया गया। उसके प्रयत्न से बाबा गुरुमुख सिंह जी अमृतसर वाले से २००० रुपए और आर्य प्रतिनिधि सभा लाहौर से श्री महाशय कृषण जी और प० भीम सेन जी तथा प० विश्वम्वर दास के द्वारा १००० रुपये सहायता मिली। अपनी जिम्मादारी पर २००० रुपया बैंक से ऋण लिया गया। इस प्रकार सारे ऋण चुकाए गए अनुशासन लागू किया गया विद्यालय ने उन्नति की। सरकारी स्वीकृति और आर्थिक सहायता मिल गई। स्कूल की आर्थिक स्थिति सन्तोष जनक हो गई

समाज की धड़े बाजी फिर रंग लाई। चौदरी वेदव्रत वापस आया। विशिष्ट धड़े से मिल कर झगड़ा खड़ा किया। इस से सरकारी सहायता का ६००० रुपया रुक गया। न्यायालय में झगड़ा चला जिस से चौधरी और

उसका दल हार गया, परन्तु इतने में परिस्थित बदल गई। १९४६ आगया। स्कूल को फिर पावों पर न खड़ा किया जा सका। विद्यालय बन्द हो गया। सामान (फर्नीचर) विज्ञान का सामान और पुस्तकालय बेचकर सारी राशी प्रबंद कर्त्ता दावान आनन्त राम के द्वारा प्रधान श्री दीना नाथ के पास जमा कराई गई। नया डी. ए. वी. हाई स्कूल—कुछ काल पश्चात नैशनल हाई स्कूल का स्थिति डावा डोल हो गई। ला० मुलकराज जी की प्रेरणा से कमेटी ने स्कूल आर्य समाज पुरानी मंडी जम्मू को दे दिया

इस समय यह स्कूल डी-ए-वी-हाई स्कूल के नाम से आर्य समाज पुरानी मंडी के अधीन चल रहा है इस की एक शाखा मिडल तक गांधी नगर में और दूसरी पाँचवी तक कोटली कलोनी में है।

आर्य शिक्षा केन्द्र स्कूल गांधीनगर— श्रीमती लक्ष्मी देवी तथा महता श्री निवास, ला० कृष्ण लाल आदि कई अन्य सज्जनों के सहयोग से और श्रीमती विमला कौल मुख्याध्यापिका गवर्नमैंट हाई स्कूल की सहायता से गांधी नगर में इस स्कूल की स्थापना की गई साठ रुपए मासिक किराये पर मकान लेकर यह आरम्भ किया गया। कुछ काल पश्चात इस के शिथिल होने पर इसे आर्य समाज पुरानी मंडी के हवाले कर दिया गया। इस का नाम शाखा डी-ए-वी मिडल स्कूल रखा गया अब यह इसी नाम से चल रहा है डा० अमीर चन्द जी स्वर्गवासी भी कुछ समय तक इसके प्रबधक रहे।

डी-ए-वी-स्कूल अखनूर – आर्य समाज अखनूर के संस्थापकों ने दलितों के बालकों की शिक्षा के लिए बाजार में किराये के मकान में एक प्राथमिक पाठशला खोली सनातनी हिन्दू मेघ आदि जातियों के बालकों की शिक्षा व्यवस्था को सहन न कर सके मास्टर को ग्राम के नम्बर दार से पिटवाया गया बच्चों को धमकाया जाता तथा गालियां दी जाती। आर्य समाजियों का सब प्रकार से बहिष्कार किया गया।

एक महाशय ने नगर के बाहर कुछ भूमि दान दी उस में प्रधान आर्य समाज ने स्कूल के लिए कुछ कमरे बनवाए। घर विरोधियों के झगड़े के कारण

यह इमारत रोक दी गई। आखिर महाराजा हरिसिंह जी की आज्ञा से इमारत पूरी की गई। स्कूल इस में ले जाया गया। आर्य समाज भी यहीं चलने लगा।

अब यह स्थान नगर के अन्दर आ गया है। स्कूल लोक प्रिय हो गया है सभी के बच्चे समानरूप से यहीं शिक्षा ग्रहण करते हैं। छुत छात का भूत भाग गया है।

आर्य कन्या पाठशाला ऊधमपुर—आज से ३१-३२ साल पूर्व ऋषि बोध उत्सव पर इस कन्या पाठशाला की स्थापना की गई थी। इस के संस्थापक थे ला. ढेरा मल जी वकील, स्व, ला. जगन्ननाथ जी वकील तथा इनके कुछ अन्य उत्साही सहयोगी। इसका उद्घाटन श्री हरिश्चन्द्र जी विद्यार्थी द्वारा कराया गया था। आर्य समाज के साथ कुछ और भूमि खरीद कर इसका सुन्दर भवन निर्मान किया गया है। अब हाई श्रेणी तक है। इस में ४०० कन्याएं शिक्षा ग्रहण करती हैं। विद्यालय की मुख्याध्यापिका श्रीमती राज दुलारी जी दृढ़ आर्य विचारों की देवी हैं। ला० बद्री नाथ, श्री वेद प्रकाश खन्ना, तथा अन्य आर्य सज्जनों की सहायता और सहयोग इसे मिल रहा है।

आर्य कन्या पाठशाला मीरपुर—मीरपुर की आर्य कन्या पाठशाला एक आदर्श संस्था थी। इस की मुख्याध्यापिका जी श्री माता सात। देवी जी (वानप्रस्था, ज्वाला पुर) महासती माता दीवान देवी जी, श्री दुर्गा देवी, इन्द्रा देवी अवेतनिक रूप से वर्षों तक सेवा करती रही तथा अन्य आर्य कार्या कत्ताओं ने कन्याओं के जीवन को ऊचा बनाने के लिए भरसक यत्न किया कन्याओं में वैदिक धर्म को दृढ़ मूल किया यह पाठशाला १९४७ में देश विभाजन और तत्पश्चात पाकिस्तानी आक्रमण से समाप्त हो गई। स्वा. महाश्य राम भोज कबोचा जी ने पाठशाला का सुन्दर भवन बनाने की अतिरिक्त ६०० रूपया नकद दिया। स्व. म० जगतराम जी आवैतनिक रूप से वर्षों तक सेवा करते रहें।

अनाथालयो की स्थापना—१. जम्मू में वेद मदिर के दो कमरों में ला० दयाल चन्द जी की प्रेरणा से आर्य समाज पुरानी मंडी जम्मू ने अनाथालय की स्थापना की। ला० नरसिंह दास जी इसके प्रवन्धक थे अनाथ बच्चों के

भरण पोषण और शिक्षा की समुचित व्यवस्था की गई।

कुछ काल: पश्चात् यह अनाथलय हरिजन सेवा संघ को सौंप दिया गया प्रबन्ध आदि में कोई अन्तर नहीं आया क्यों कि ला० दयाल चन्द जो इस संघ की जम्मू शाखा के भी प्रधान थे। कुछ वर्ष चलकर यह संस्था बन्द हो गई।

२ अनाथालय बसोहली—श्री प० गगाराम जी 'अनाथों के पिता के नाम से प्रसिद्ध थे और जिन्हों ने मुज़फ्फर गढ़, लाहौर रावी रोड पर भी अनाथालय खोले थे—ने बसोहली में अनाथालय की स्थापना की। कुछ समय अनाथों की सेवा शिक्षा कार्य के पश्चात् इस संस्था का भी अन्त हो गया।

पाठशाला मुट्ठी बरनाई—ला० बरकत राम जी और ला० दयाल चन्द की बहुत सी भूमि ग्राम मुट्ठी बरनाई में जम्मू अखनूर सड़क पर थी। अत: ला० दयाल चन्द ने इस ग्राम में बच्चों की शिक्षा के लिए एक पाठशाला का सचालन किया। पं० दयाराम शास्त्री यहां कई वर्ष तक अध्यापन कार्य करते रहे अन्य ग्राम पाठशालाओं की तरह ग्रामों में सरकारी स्कूल खुल जाने से इस की आवश्यकता न रहने पर यह बन्द हो गई

गुरु कुलों की स्थापना—१. रियासी नगर के पास कालिका देवी के मंदर में एक गुरुकुल की स्थापना की गई। इस के आचार्य श्री हरिराम जी वानप्रस्थी थे। यह 3½ वर्ष तक चला इसका स्थान बहुत सुन्दर और मनोहर था। पं० दयाराम शस्त्री और उनके अन्य सहयोगी अध्यापन कार्य करते रहे।

२. चकरोही ग्राम में ला० ढुढ़े शाह को ५० बीघे दान की गई भूमि पर भी गुरुकुल की स्थापना की कई पं० पूर्ण चन्द जी तथा पं परस राम जी यहाँ अध्यापन कार्य करते रहे। आस पास के ग्रामो में प्रचार कार्य भी किया जाता रहा। कुछ वर्ष चल कर यह सस्था भी समाप्त हो गई। भूमि पुन: दाता के ही अधिकार में आ गई।

महाराजा हरि सिंह कालिजिएट स्कूल नागबनी

आरम्भ—स्वर्गीय महाराजा हरिसिंह जी ने ४ मार्च १९६० को मृत्यु से पूर्व अपने स्वीकृति पत्र में अपनी सारी निजी सम्पत्ति की देख-भाल के लिए एक ट्रस्ट की स्थापना की। इस ट्रस्ट का उस सम्पत्ति को आय के प्रयोग अधिकार दयानन्द कालिज प्रबन्धक सोसायटी तथा ट्रस्ट को दिया गया और लिखा कि एक कृषि कालिज जम्मू में स्थापित करके रियासत के अनाथ बच्चों की निःशुल्क शिक्षा की व्यवस्था की जाए।

मृत्यु कर तथा अन्य सरकारी कर चुकता करने के पश्चात् सोसायटी को एक करोड़ इक्कीस लाख रुपया मिला। महाराजा के अपने घोड़ा पालन क्षेत्र नागबनी की २७० एकड़ भूमि पर एक कालजिएट स्कूल की स्थापना सन् १९६७ में की गई। इसे पब्लिक स्कूल के आदर्श पर चलाया गया मूल रूप से कृषि विज्ञान विषय के अध्यापन का प्रबन्ध भी किया गया। यह विद्यालय निरन्तर उन्नति कर रहा है। इस समय इसमें १०० के लगभग बालक हैं। छात्रावास की व्यवस्था है। कुछ छात्र प्रतिदिन जम्मू से जो नागबनी से ९ मील दूर है स्कूल की बस में आते जाते हैं। उचित समय पर यह एक कालिज बन जाएगा। रियासत भर में यह अपनी किस्म का एक ही विद्यालय है। भगवान करे दानी की शुभ भवना पूर्ण हो।

डी-ए-वी कालिज श्रीनगर (काश्मीर)

—सन् १९३०-४० के मध्य डी-ए-वी कालिज प्रबन्धक सभा ने अपना एक कालिज श्रीनगर में स्थापित किया। वहां की हिन्दू जनता की यह माँग थी। इस के प्रथम प्रिंसिपल पं० श्री राम जी थे। उनके अनन्तर प्रोफेसर बहादुर मल जी बने। कुछ वर्ष चल कर इसे कई कारणों से बन्द कर देना पड़ा।

डी-ए-वी हाई स्कूल मघरमल बाग श्रीनगर

बजीर बाग मुहल्ला में एक 'न्यूईरा' हाई स्कूल था यह किसी कारणवश शिथिल हो गया। सन् १९४० अक्तूबर बीस को यह स्कूल आर्य समाज को सौंप दिया गया और इसका नाम डी-ए-वी हाई स्कल रखा गया।

डा० जसवन्त सिंह, ला० भगत राम, ला० हरबंस लाल सेठी, पं० जीवन लाल, ला० बंसीधर नन्दा, आदि की प्रबन्ध समिति बना दी गई।
इस स्कूल ने तब से आशातीत उन्नति की है इस समय इसमें १००० से अधिक छात्र शिक्षा प्राप्त करते हैं इसे कालिज में बदलने का निश्चय किया जा चुका है।

डी-ए-वी हायर सैकिंडरी स्कूल, जवाहर नगर (श्री नगर)

-डी.ए-वी हाई स्कूल मग्घरमल बाग की शाखा रूप यह स्कूल आरम्भ हुआ। सन् १९६९ में सरकार ने इसे भूमि प्रधान कर दी। इस पर सात लाख रुपया व्यय करके एक विशाल भवन निर्माण किया गया। इसमें सब प्रकार का प्रबन्ध है। खेलों के मैदान, ऐन-सी सी प्रशिक्षण आदि की भी व्यवस्था है। शीघ्र ही इसे भी कालिज बनाने का विचार है।

इस के मुख्याध्यापक श्री गंज जी वजीर बाग आर्य समाज के मन्त्री भी हैं। यह एक योग्य प्रबन्धक और कुशल अनुभवी शिक्षक भी हैं स्कूल अध्यापक वर्ग में कई आर्य समाज के कार्यकर्त्ता भी हैं छात्र संख्या १८०० के लगभग है। दोनों स्कूलों की प्रबन्ध कर्त्री सभा एक ही है इस समय इस के सदस्य हैं.-

प्रधान—श्री अमोलक राम जी सेठी
सदस्य—श्री ओम प्रकाश सेठी, श्री ऐच-डी-सेठ, श्री जे-वी नन्दा, श्री ऐस-ऐल पंडित श्री तीर्थ राम जी, श्री सतीश चन्द्र जी, श्री गुरुदास सिंह जी, श्री र-के-गंज मुख्याध्यापक हैं।

श्रीमती देवकी देवी आर्य कन्या पाठशाला हजूरी बाग (श्रीनगर)

- श्रीमती देवकी देवी जी, श्री लज्जा देवी तथा उनकी कुछ सहयोगी देवियों ने पंजाबी मुहल्ले में सन् १९१० में कन्याओं को निजी रूप से शिक्षा देना आरम्भ कर दिया। शीघ्र ही यह संस्था प्राथमिक शाला बन गई।

एक वर्ष पश्चात् यह शाला आर्य समाज हजूरी बाग को सौंप दी गई। सन १९१० में यह माध्यमिक और १९४२ में उच्च शाला बना दी गई आज यह नगर के अच्छे कन्य विद्यालयों में से एक है। इस समय ५५० के लगभग कन्याए शिक्षा प्राप्त कर रहीं हैं। ऐन-सी-सी भी दो वर्ष से चाल है। धर्म शिक्षा का भी उचित प्रबन्ध है प० नेत्रपाल जी पुरोहित आर्य समाज संस्कृत और धर्म शिक्षा पढ़ाते हैं। प्रबन्ध कर्त्तृ सभा में है।

प्रधान – ला० बिहारी लाल जी बत्रा, प्रबन्धक ला० विक्रम कुमार जी चन्दोक, और सदस्य श्री योगेद्र कुमार जी मदन, श्री जयदेव जी, श्री श्याम लाल जी, श्रीमती रश्मी बाला जी, श्री कृष्ण लाल जी गुप्ता, कुमारी शशी मदन, श्री देव राज जी आनन्द और श्री राम लाल जी हैं। उस का मुख्याध्यापिका श्रीमती लक्ष्मी वर्मा जी हैं

डी-ए-वी हाई स्कूल महाराजगंज (श्रीनगर)

आर्य समाज महाराज गंज ने सम्बत् १८७१ में आर्य समाज मंदिर के लिए भूमि खरीदी। इस पर एक विशाल भवन बनाया गया। ला० दयाल चन्द जी, ला० केदार नाथ जी, ला० बाल मुकुन्द जी, ला० दूनी चन्द जी आदि के प्रयत्न से इस समाज मंदिर में ही डी-ए-वी हाई स्कूल की स्थापना का गई। यह स्कूल वर्षों तक फला-फूला और चला। कुछ विशेष कारणों से स्कूल बन्द कर दिया गया।

डी-ए-वी-हाई स्कूल रैनावाड़ी (श्रीनगर)

— यह संस्था श्रीनगर के चौटी के स्कूलों में है। रैणावाड़ी मिशन स्कूल की स्थापना की प्रति क्रिया रूप इस की स्थापना की गई थी। कुछ काल में मिशन स्कूल बन्द हो गया। इसका भवन आर्य समाज रैणावाड़ी ने खरीद लिया और उसी में मिडल श्रेणियों तक स्कूल संचालन किया गया।

सात बैसाख सम्बत् १९९५ को यह स्कूल अपने नये भवन में आगया। इस का शिलान्यास श्री दीवान जीवन लाल मदन द्वारा हुआ और इसे हाई स्कूल बना दिया गया। श्री दया किशन कौल का मकान और भूमि सस्ते दामों इस विद्यालय को मिल गई। इस समय पर यह एक विशाल संस्था है। शीघ्र ही इसे कालिज

बनाने की योजना है।

श्री नारायन जी दिया और श्री दया कृष्ण जी कौल आरम्भ से ही इस संस्था के निर्माण और संचालन में विशेश रुचि ले रहे हैं।

प्रथम प्रबन्धक सभा के प्रधान श्री अमरनाथ जी पूर्वी (इन्स्पेकटर जनरल कस्टम्स) और मत्री श्री दीना नाथ जी कौल थे।

इस समय प्रबन्ध कर्त्तृ समितिके तेरह सदस्य हैं। इन में प्रधान श्री गोपी नाथ जी भट्टू (भूत पूर्व प्रिन्सिपल गवर्नमेंट गांधी मैमोरियल कालज) उप प्रधान —श्री पृथ्वीनाथ जी तुष्प (डाइरैक्टर लाइब्रेरीज)

मंत्री—श्री जियालाल जी तामीरो।

उप मत्री श्री श्याम सुन्दर जी बंध,

लेखा पाल (Accounrent) श्री गोपी नाथ जी कोचरू।

और अन्य सदस्य हैं—श्री प्रेमनाथ भट्ट, श्री ओंकार नाथ चौधरी, श्री मदन लाल, खुसू (प्रधान आर्य समाज) श्री ओम कार नाथ शास्त्री (मंत्री आर्य समाज), श्री नन्द लाल वातल (सम्पादक खिदमत उर्दू) श्री चूनि लाल विष्णु श्री मोहन लाल काक, श्री त्रिलोकी नाथ भट्टू और श्री हरि कृष्ण रावल।

विद्या निकेतन स्कूल करणनगर (श्रीनगर)—आर्य समाज करण नगर (नागरिक समाज) के भवन में ही विद्या निकेतन स्कूल नाम की संस्था का सचालन पं० जानकी नाथ कौल जी करते हैं। यह आरम्भिक (K. G) संस्था है। प्रत्येकबच्चे से एक रुपया मासिक समाज मंदर निधि लेकर लगभग २५० रुपया मासिक समाज को दिया जाता है। इस से समाज के कई कमरे आदि बन चुके हैं।

यह स्कल समाज के अधीन नहीं है, परन्तु धर्म शिक्षा का पाठन होता है और आर्य समाज के अधिकारी ही इस का संचालन करते हैं।

आर्य कन्या विद्यालय कटलेश्वर मुहल्ला—पहले आर्य समाज करण नगर भान मुहल्ला में था। वहां एक वनिता विश्राम आश्रम खोला गया कुछ विधवाओं की कन्याओं को पढ़ाने का कार्य श्री दीना नाथ जी कौल ने

अपने हाथ में लिया। इन कन्याओं से बढ़ कर यह स्कूल अब हाई स्कूल हो गया है। यह विद्यालय आर्य समाज करण नगर के अधीन है। कन्याओं की पर्याप्त संख्या है।

संस्कृत विद्यापीठ—पहले ही बताया जा चुका है कि श्री लाला दयाल चन्द जी और उन की सुपुत्री श्री विद्यावती जी की सहायता से श्री प० दयाराम जी शास्त्री के अधीन जम्मू में संस्कृत विद्यापीठ का आरम्भ हुआ था।

प० परमानन्द जी रियासत के महालेखापाल (Accountant General) की इस में विशेष रुचि थी। आप ने प० दयाराम जी को श्रीनगर लाकर इस संस्था का संचालन व निर्माण किया। श्री प० दया राम जी की मृत्यु हो चुकी है, पर संस्था अब भी चल रही है। इस में शास्त्री तक की परीक्षाओं के लिए संस्कृत शिक्षा की व्यवस्था है।

इस प्रकार जम्मू काश्मीर राज्य में आर्य समाज का शिक्षा प्रचार में महत्त्वपूर्ण योगदान है। रियासत की शायद ही कोई और संस्था इसको समता कर सके।

विद्या का प्रचार आर्य समाज का ध्येय है और इसने दत्तचित्त हो कर इस राज्य में इस ध्येय की पूर्ति का भरसक यत्न किया है।

सातवाँ अध्याय

जम्मू काश्मीर राज्य में आर्य समाज के निर्माता

प्रस्तावना—रियासत में जिस साधन ने आर्य समाज के प्रचार और प्रभाव को सब से अधिक सशक्त और समर्थ बनाया है, वह है इसके कार्य कर्त्ताओं की बलिदान की भावना। निज स्वार्थ को परोपकार पर न्योछावर कर देने का निश्चय और

उसे क्रियारूप देना ही किसी संस्था या आन्दोलन या प्रवृत्ति को सफल बनाता है इस बात को ध्यान में रखते हुए आर्य समाज के निर्माता कार्य कर्त्ताओं का परिचय देने से सर्व प्रथम ऐसे बलिदानी हैं, जिन्हों ने इस कार्य में अपने प्राणों की भी आहुति दे दी। दूसरे स्थान पर वह सन्यासी और वानप्रस्थी महात्मा है, जिन्होंने अपने जीवन का विशेष भाग इसी काम के समर्पण कर दिया। इन के पश्चात् अन्य कार्य कर्त्ताओं का क्रम आता है। इसी क्रम से इस अध्याय में आर्य समाज को सशक्त बनाने वाले महानुभावों का परिचय दिया जा रहा है।

हुतात्मा वीर

जीराम चन्द्र महाशय—कठूआ जिला की हीरानगर तहसील श्री खोजशाह के आठ लड़कों और एक लड़की वाले परिवार में महाशय रामचन्द्र सब से बड़े थे आप का जन्म १९ अषाढ़ सम्वत् १५९३ में हुआ था। आप ने मिडल तक शिक्षा पाई और अपने पिता के स्थान पर तहसील खजांची के पद पर नियुक्त हो गए।

आरम्भ से ही धार्मिक प्रवृत्ति और समाचार पत्र पढ़ने के शौक ने आप पर आर्य समाज का रंग चढ़ा दिया और अछूतोद्धार के काम में दिलो जान से लग गए हीरा नगर से बसोहली बदली हुई तो वहाँ दो वर्ष आर्य समाज का खूब प्रचार किया। कठूआ में बदली हो गई तो विरोध के बावजूद दलितोद्धार और आर्य समाज का काम किया। वहाँ से साम्बा आए तो आर्य समाज की स्थापना और प्रचार में पूरा योग दिया

खद्दरधारी काँग्रेस भक्त देश सेवक जनता के दुःखों में सहायता करने को सदा तत्पर, वह "कौमी सेवक" काँग्रेस अधिवेशन में सम्मिलित होने के लिए सरकारी नौकरी तक त्यागने के लिए भी तैयार हो गया।

साम्बा से आपकी तब्दीली अखनूर हो गई। अखनूर में मेघों के लिए

पाठशाला खोलने पर समाज के सदस्यों का घोर विरोध हुआ। उन का पूर्ण बहिष्कार कर दिया गया। एक भगत रूपा और माई भोली ने कुछ भूमि दान दी तो वहाँ पाठशाला बनी। 'वेद मंदिर' का प्रवेश संस्कार सन् १९२२ में किया गया हिन्दू मुसलमानों का विरोध बढ़ा तो आप को जम्मू तबदील कर दिया गया। पर आपने अपना ग्राम प्रचार का कार्य पूरा करने के लिए चार मास का अवैतनिक अवकाश ले लिया।

बुटहरा ग्राम में पाठशाला खोलने का निमन्त्रण मिला तो आप ओ३ म् का झंडा उठाए, भजन गाते अन्य आर्य जनों के साथ ३१ दिसम्बर १९२७ को वहाँ पहुंचे। विरोधी राजपूतों और गूजरों ने आप को गालियाँ दी झंडा फाड़ दिया। हवन कुंड तोड़ दिया हर प्रकार से बाधा उपस्थिता की। निर्धारित कार्य क्रम न हो सका। पर आप कतई घबराये नहीं। चौदह जनवरी १९२४ का दिन पुनः नियत कर दिया। जम्मू से आपने दल के साथ फिर बुटहरा को चले विरोधियों ने दंगल के बहाने से लोगों को एकत्रित कर दिया था। भक्तू राजपूत के नेतृत्व में लगभग डेढ़ सौ व्यक्तियों ने आप के दल पर आक्रमण किया। आप को इतना पीटा कि आप बेहोश हो गए। हस्तपताल पहुँचाया गया। छः दिन बे होश रह कर २० जनवरी सन् १९२३ के वीर गति पाई।

आपकी पार्टी में महता सावन मल, ला० अनन्तराम, ला० दीनानाथ, पं० भगत राम, श्री अजीत सिंह सन्यार्थी, म० ओ ३ म् प्रकाश पर भी लाठियां बरसाई गई।

आक्रमण कारियों पर मुकदमा चलाया गया। भक्तू-लन्दू को मिला कर ४० व्यक्तियों का चालान हुआ। सब को दण्ड मिला। मुकदमा पं० बिहारी लाल जो D.A.M. के न्यायालय में था। ला० गगा राम व श्री चरणदास पुरी वकील स्याल कोट से पैरवी के लिए आते रहे।

वीर रामचन्द्र के बलिदान के प्रभाव से सारी रियासत में दलितोद्धार का काम वेग से होने लगा। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब लाहौर ने बुटहरा में भूमि लेकर वीर की स्मृति में पाठशाला खोली, मन्दिर और कूप बनवाया। वार्षिक वीर मेले का प्रबन्ध किया। जीवन पर्यन्त ला० अनन्त राम जी सभा

की ओर से इस स्मारक के प्रबन्धक रहे। अब यह काम आर्य समाज दयानन्द मार्ग जम्मू द्वारा किया जाता है। वार्षिक मेला हर बैसाखी को लगता है। परायमरी तक एक पाठशाला भी आर्य समाज के अधीन चल रही है।

२. हुतात्मा सोमन एसो बदन—लद्दाख जिले का क्षेत्रफल ९७००० वर्ग मील और जन संख्या ८८००० है। कभी यह सारी जन संख्या बौद्ध थी। पर इस समय इस में से ४६% मुसलमान हो चुके हैं समय दूर नहीं जब यह प्रदेश भी मुस्लिम बहुमत वाला क्षेत्र बन जाएगा।

इस परिस्थिति से प्रभावित और चिन्तित हो कर कुछ बौद्ध युवकों ने आर्य प्रादेशिक सभा लाहौर से प्रचारक भेजने की प्रार्थना की। इस पर प. राम चन्द्र अभय को १९४४, ४५ में वहाँ भेजा गया।

साथ ही श्री सोमन एतो बदन नामी लद्दाखी युवक को भी सभा ने आर्य धर्म का प्रशिक्षण दिया। ब्राह्मण महाविद्यालय लाहौर में अध्ययन के पश्चात् उसे इस जिला में स्थाई प्रचारक नियत किया गया।

स्थानीय व्यक्ति होने के कारण वह उस क्षेत्र में प्रचार में अधिक उपयोगी सिद्ध हुआ मुसलमानों को अपनी खेती सूखती नजर आई इसलिए १९४७ को गड़बड़ में उसे गोली का निशाना बना दिया गया इस प्रकार वीर हुतात्मा सोमन एतो बदन ने धर्म-मार्ग में वीर गति पाई।

महासती माता दीवान देवी—श्री मती दीवान देवी जी का जन्म तो आर्य कुल में हुआ था, परन्तु ब्याही गई थीं एक रूढ़ी वादी सनातनी घराने में। कुछ वर्ष पश्चात् पति परलोक सिधारे तो स्व जीवन जप-तप में व्यतीत करने लगीं। मनोबल बढ़ाने और चित्त शान्त करने के विचार से तीर्थ यात्रा की योजना बनाई। इस यात्रा में जगन्नाथ पुरी में मंदिरों पर वाम मार्गी अश्लील मूर्तियाँ देखकर मूर्त्ति पूजा से घोर घृणा हो गई आर्य समाज से प्रेम बढ़ गया। आर्य विद्वानों, महात्माओं के सम्पर्क और सत्संग, से समाज में निष्ठा दृढ़तर हो गई। दैनिक सन्ध्या अग्निहोत्र सत्संग, स्वाध्याय में समय लगाने लगी। सत्यार्थ प्रकाश आदि ग्रन्थों का स्वाध्याय किया। अपने कमरे में

गुरुकुल धाम झेलम के ब्रह्मचारियों से सुन्दर वेद मन्त्र लिखाए। आर्य समाज मीरपुर ने आपके धर्मिकसात्विक जीवन से प्रभावित हो कर आप को पुत्री पाठशाला में धर्म शिक्षा देने पर नियुक्त कर दिया। इस धर्म मूर्त्ति माता से जिन कन्याओं ने धर्म ज्ञान प्राप्त किया वे आज भी धर्म प्रेम से उनका स्मरण करती हैं।

माता जी ने गुरुकुल धाम झेलम की १७ वर्ष तक सेवा की। अपना सार वेतन तथा दान प्रतिमास गुरुकुल को भेंट करती रहीं। अन्न वस्त्रादि तथा दान संग्रह कर के सदा भेजती रहती थीं। गुरुकुल के पास भूमि दिलवाई। प्रथम युद्ध के पश्चात् निधन परिवारों की सहायता करता रहीं। सन् ९४७ में मीरपुर में २० सहस्र हिन्दू अत्याचारी मुसलमानों के घेरे में आ गए यह घेरा दो मास चालू रहा। युवकों ने नगर की रक्षा के लिए बड़ा प्रयत्न किया। कायर राव सिंह, वजीर वजारत सेना की टुकड़ी लेकर भाग आया, जनता को अत्याचारी मुसलमानों की दया पर छोड़ दिया।

इस घोर विपदा में भी माता जी ने जनता की सेवा में अपना तन, मन धन लगा दिया; नगर रक्षा में पूरा सहयोग दिया। इस विपत्ति काल में आपने अपने कुल के एक युवक बलदेव कृष्ण को इस बात पर वचन बद्ध किया कि यदि मुसलमान नगर पर अधिकार करलें और नारियों की धर्म रक्षा का और कोई उपाय न रहे तो अपनी तलवार से उनका गला काट दें। अन्त में वह समय आ गया जब नशस मुसलमान हिन्दुओं को कत्ल करते हुए आहाता कचहरी तक आ पहुंचे। उस समय माता जी ने बलदेव कृष्ण को अपना प्रण पूरा करने को कहा तब उस ने काँपते हाथों से माता जी और उनके साथ की आठ अन्य देवियों के गलों पर तलवार चला कर सब को वीर गति प्रदान की।

इस प्रकार यह महा सती माता दीवान देवी का यह नश्वर शरीर अन्त पा गया परन्तु उनका यश शरीर अमर हो गया। उनके साथ ही सहस्रों अन्य देवीयों ने भी अपने प्राणों की आहुति देकर अपने नारी धर्म की रक्षा की।

हुतात्मा बिष्णुदत्त जी—पं० विष्णु दत्त आर्य समाज कठुआ के मंत्री थे। आपने जन सेवा को अपना आदर्श बनाया। देश विभाजन के समय सन्

१९४७ में पाकिस्तानी या पाकिस्तान जाने वाले मुसलमान कठूआ सीमा पर हिन्दुओं को मारते, गाँव जलाते और इलाका में लूट मार करते थे। ऐसे भयानक समय में भी आप हिन्दू जनता की सेवा और रक्षा के लिए ग्रामों में जा जा कर अपने परम धर्म का पालन करते रहे।

इसी काम में संलग्न पंडित जी को मुसलमानो ने गोली मार कर मार दिया उनकी मृत्यु के दिन महाराजा हरि सिंह जी और दीवान मेहर चन्द जी महाजन कठूआ में पधारे। आप इतने प्रभावित हुए की उनके अन्त्येष्टि सस्कार का व्यय अपने पास से प्रदान किया और उनके बलिमान की मुक्त कठ से सराहना की।

राजोरी में देवियो का जौहर—जब राजोरी पर पाकिस्तानी आक्रमण हुआ तो वहां आहाता तहसील में एकत्रित लद्रभग ४००० देवियो ने प्रसन्नता पूर्वक अपने प्राणों की आहुति दी। उनमें विष बाँटा गया और तलवारों तथा कुल्हाड़ों से अपने ही पिताओं और भ्राताओं द्वारा हँसते हँसते अपने गले कटवा लिए। अब वहाँ उन को स्मृति में बलिदान भवन बना है। यहाँ प्रति दिन सत्सग लगता है। यह स्थान और घटना आने वाली पीढ़ियों ने के लिए प्रेरणा का स्रोत रहेगी।

सन्यासी तथा वानप्रस्थी—जिन वयक्तियों ने जीवन भर आर्य समाज का सेवा का काय किया और जीवन के अन्तिम भाग में सन्यास ग्रहण कर अपनी सारी शक्ति और समय आय समाज और वदिक धम के प्रचार के लिए समर्पित कर दिए उनके जीवन भी प्रेरणा का स्रोतत्र हैं। इन महानुभावों में १. श्री स्वामी सत्यानन्द जी, २ स्वामी प्रणवानन्द जी ३. स्वामी सबिता नन्द जी, ४. श्री ठाकुर सीता राम जी लगेह, ५. श्री चिरंजीत लाल जी ६. श्री सियाराम जी, तथा वन प्रस्थियों में १ श्री वान प्रस्थी हरिर म जी २. श्री धम भिक्षु जी, ३. श्री आय भिक्षु जी ४. श्री प० तुला राम जी के नाम उल्लेखनीय है।

१. श्री स्वामी सत्या नन्द जी—आप का जन्म बैसाख

सम्वत् १९५६ विक्रमी को घोर अकाल के वर्ष में मीर पुर से दस मील दूर सम्बाल ग्राम म हुआ था। आप का जन्म नाम राम देव था। आप सात भाई थे।

आरम्भ में अपने एक मौलवी से फारसी पढ़ी। चौबीस वष की आयु में गुरुकुल पोठोहार रावल पिंडी के उपदेशक विद्यालय में प्रविष्ट हुए। फिर २ वर्ष ब्रह्म महाविद्यलय लाहौर में पढ़े। कुछ काल वेदवेदाङ्ग विद्यलया देहली में प० मुलक राज जी व्याकरणचार्य से भी शिक्षा ग्रहण की भारत के प्रसिद्ध विद्वान आचार्य मुक्तिराम जी से आपने दर्शन शास्त्र पढ़े। सन् १९२१ में आप सेना में लेखक के रूप में भरती हुए काबूल के नादिर शाह के विरुद्ध युद्ध में भी सेवा कार्य किया।

गुरुकुल धाम जेहलम—सन १९३१ में श्री लालचन्द जी बाहरी द्वारा ३२ कनाल भूमि पर आचार्य मुक्ति समती की सहायता गुरुकुल जेहलम की स्थापना हुई आप इसके संस्थापक तथा आचार्य थे। श्री वानप्रस्थी हरिराम जी भी इस सस्था में कुछ समय कुलपति रहे वर्तमान लोक सभा सदस्य श्री शिव कुमार शास्त्री 6 वर्ष तक इस गुरुकुल के मुख्य अध्यापक रहे।

आर्य समाज के आन्दोलन में—सन् १९४० में आप ४० व्यक्तियों के दल के साथ हैदराबाद सत्याग्रह में गए और प्रभुद में सत्याग्रह किया। कारावाहा कालमे कुछ नान्देड परभन्नी व हैदराबाद के जेलों मे रहे

पंजाब हिन्दी आन्दोलन में आप श्री स्वामी आत्मानन्द जी के साथ काम करते रहे, जेल यात्रा की और सार्वदेशिक आय प्रतिनिध सभा व स्वामी अत्मा नन्द जी की आज्ञा से सत्याग्रह के केन्द्रीय शिवर चन्दीगड़ में निरन्तर ६ मास तक संचालक रहे और श्री स्वामी आत्मानन्द जी की आज्ञा से ही आपने आय प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रधान पद सम्हाला और तीन साल तक सभा का सुचारु रूप से सच लन किया।

उनकी आज्ञानुसार ही आपने उनकी मृत्यु के पश्चात् उन के वैदिक साधन आश्रम और आर्य नगर का उत्तर दायित्व संम्हाला और ग्यारह वर्ष तक इस का भली भान्ति सचालन करते रहे।

दयानन्दमठ जालंधर की स्थापना अपने व्यस्त जीवन में भी आप ने श्री वाणप्रस्थी हरि राम जी के सहयोग से जालन्धर के एक भाग (तकिया) में दयानन्द मठ की स्थापना की। इसका निर्माण वैदिक धर्म के प्रचार के केन्द्र के रूप में किया गया। इसमें विशाल सत्सग भवन, अतिथि शाला आदि बनाए हैं।

जीवन ध्येय आप ने अपने जीवन का अधिकतम भाग आर्य समाज की सेवा और वैदिक धर्म के प्रचार में लगाया है। आर्य समाज मीर पुर (वखक्षी नगर जम्मू) के निर्माण व वेद मन्दिर ऊधमपुर के निर्माण का श्रेय भी अधिकतर आप को ही हैं। जम्मू-कश्मीर राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा को आप का मार्ग दर्शन और सहयोग सदा मिलता रहा है।

इस वर्ष तो आप उस के प्रधान पद पर हैं और सभा की सारी गति विधी का केन्द्र है।

जम्मू – काश्मीर राज्य आर्य समाज शताब्दी सम्मेलन - आप के प्रयत्न और मार्ग दर्शन से ही आर्य समाज का प्रान्तीय शताब्दी सम्मेलन उत्साह से मनाया गया। यह सम्मेलन जम्मू नगर के हरिसिंह जनाना पार्क में २९, ३० नवम्बर और १ दिसम्बर सन् १९७४ को मनाया गया है।

राजनैतिक जीवन आर्य समाज के आन्दोलनों का संचालन, वैदिक धर्म प्रचार कार्य और पजाब आर्य प्रतिनिधि सभा के सचालन जैसा महत्त्व-पूर्ण कार्य करते हुए भी आप ने देश की राजनीति में सक्रिय सहयोग दिया है।

सन् १९४२ में जब महात्मा गांधी ने 'अंग्रेजों भारत छोड़ो' आन्दोलन चलाया तो आप भी उसमें भाग लेने लगे। उसी में आप ने एक वर्ष कारागृह वास किया।

जब आप जन संघ में सम्मिलित हुए तो उस समय पंजाब हरयाना हिमालय

प्रान्तीय जनसंघ के प्रधान रहे और अखिल भारतीय जनसंघ के उपप्रधान पद को भी सुशोभित किया।

अब—इस समय ७५ वर्ष की आयु में भी आप एक अनथक कार्य कर्ता की भान्ति आर्य समाज और वैदिक धर्म के प्रचार कार्य में सतत लगे रहते हैं।

सन्यास का निःस्पृह धर्म निर्वाह करते हुए सात्विक क्रियाशील जीवन से आप अपने सम्पर्क में आने वाली व्यक्तियों के लिए ज्योतिस्तम्भवत मार्ग दर्शक हैं।

हुतात्मा श्री स्वामी शान्ता नन्द जी —श्री स्वामी शान्तानन्द जी महाराज ने अपने जीवन के अन्तिम श्वास तक जम्मू-काश्मीर राज्य की सेवा की है। आप अपने नामानुकूल ही शान्त-मूर्त्ति तपस्वी और वीतराग थे।

श्री वानप्रस्थी हरिराम जी के साथ रियासी नगर के निकट नदी तट पर कुटिया में ही अपने कई वर्ष व्यतीत किए।

वहाँ से आप राजौरी चले गए। वहाँ नगर से दूर वन में कुटिया बना कर रहते रहे। सभी मिलने वालों को सद्धर्म का उपदेश करते थे। आप बड़े कुशल लक्ष्य भेदी थे। उड़ते पक्षी का बन्दूक से अचूक लक्ष्य बेधने में आप सिद्ध-हस्ता थे परन्तु जीवन को शान्त और सात्विक बना लेने पर आप ने आखेट सर्वथा त्याग दिया। आप ने गुरुकुल पोठोहार में भी कुछ समय व्यतीत किया।

सन् १९४७ में जब राजौरी नगर पर विपत्ति आई और यवन आक्रान्तीओं ने इसे घेर लिया तो आप नगर की रक्षा में भाग लेना अपना कर्त्तव्य समझा। सुरक्षित स्थान त्याग कर उस भयानक स्थान में पहुंच गए और नगर की रक्षा में सक्रिय भाग लिया।

देहत्याग—जब यवन नगर में प्रविष्ट हो गए और लूटमार करने लगे तो आपने अपनी समाधि लगा कर प्राण दशम द्वार में चढ़ा लिए। यवनों ने आपके नष्टप्राण शरीर को भी बन्दूकों की किरचों से छलनी कर दिया।

इस प्रकार इस कर्त्तव्य परायण, निर्भीक और वीतराग सन्यासी ने

वीर गति पाई।

श्री स्वामी प्रेम भिक्षु जी —काश्मीर के आर्य समाज के इतिहास में श्री लाला चिरजीत लाल जी चदोक का नाम आर्य समाज के संस्थापकों में अग्रगण्य है। आप का जन्म भेरा (पंजाब) में हुआ था आप व्यापार के निमित काश्मीर गए। वहाँ 'काश्मीर मटल मार्ट फर्म' स्थापित कर के पुष्कल धन अर्जन किया।

आप आर्य समाज के कार्यों में सदा सक्रिय रहे। आर्य समाज हजूरी बाग का भवन आप की कोठी के साथ ही है। इस के निर्माण में भी आपने पूर्ण योगदान दिया। आर्य समाज में आने वाले उपदेशकों, प्रचारकों का आतिथ्य आप सदा खुले दिल से करते रहे। देवकी देवी आर्य कन्या पाठशाला का आरम्भ आप की धर्म पत्नी श्री मती देवकी देवी जी तथा डा० हुलभूषण जी की पत्नी श्रीमती लज्जा वती के सम्मिलित प्रयास का परिणाम है।

समय आने पर आपने अपना व्यवसाय अपने उत्तराधिकारियों को सौंप कर श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी द्वारा वानप्रस्थ आश्रम में प्रवेश किया और आनन्द भिक्षु बन गए। कुछ वर्ष पश्चात सन्यास ग्रहण किया और प्रेम भिक्षु बन गए। गृहस्त का सुख त्याग कर आप गुरूदत्त भवन लाहौर में रहने लगे। हैदराबाद सत्याग्रह में वारंगल केंद्र का सचालन आप ने ही किया।

सन्यासी होकर भी आप वैदिक धर्म के प्रचार में संलग्न रहे। गायत्री महत्व आदि कुछ पुस्तकें भी आपने प्रकाशित कीं आप अन्त समय तक आर्य समाज की सेवा में लिप्त रहे।

श्री स्वामी सवितानन्द जी—आप का जन्म स्माइल पुर के पास बड़ोढ़ी ग्राम में सन् १९०४ में हुआ। आप का जन्म नाम प्रसिद्ध सिंह था। अपनी कुल प्रथा के अनुसार युवावस्था में आप जम्मू काश्मीर राज्य की सेना में अश्वारोही दल में सैनिक रूप में सम्मिलित हुए। थोड़ा सा उर्दू जानते थे, कुछ विशेष पढ़े लिखे न थे।

परिवर्तन—एक बार अवकाश पर घर आए तो उर्दू का सत्यार्थ प्रकाश (जो आप के भाइ लाए थे) पढ़ा। इस के पाठ से पूर्व सस्कार जाग्रत हो गए। ग्राम के कुछ युवकों को भी अपने विचार का बना कर वैदिक धर्म का प्रचार-प्रसार करने लगे।

ऐसी लगन लगी कि सन् 1950 में पं० लक्ष्मण दास जी अब स्वा० प्रणवानन्द जी से वानप्रस्थ आश्रम में प्रवेश किया। उस समय नाम न बदला गया। अतः श्री वानप्रस्थी हरिराम जी ने नाम करण संस्कार करके 'बनवासी' नाम रख दिया।

सन्यास आपने स्वामी सर्वानन्द जी अध्यक्ष दयानन्द मठ, दीना नगर द्वारा ग्रहण किया। तब आप का नाम सवितानन्द रखा गया।

आपने अपने ग्राम के पण्डित से संस्कृत पढ़कर पौणी ग्राम में तीन वर्ष एक बाग में रह कर स्वाध्याय किया और वेद पढ़े।

कुछ समय तक आप बक्षी नगर आर्य समाज में रह कर आर्य समाज मंदिर के विस्तार का कार्य करते रहे। आप सदा अपना व्यय आप ही करते हैं। किसी व्यक्ति या समाज पर कोई व्यय नहीं डालते।

आज कल ग्रामों में घूम कर आप वैदिक धर्म का प्रचार करते रहते हैं।

स्वामी सियाराम जी सन् १८७३ से १९२९ तक

आप का जन्म ज़िला बांदा में हुआ था। आपके पिता जी का नाम श्री अंशुमान और माता जी का नाम श्रीमती मोहिनी देवी था।

आप ने बांदा और आगरा में शिक्षा ग्रहण की और कपूरथला तथा गुरुकुल कांगड़ी में गणित और विज्ञान के प्राध्यापक के रूप में ११-१२ वर्ष कार्य किया। आप का जीवन सरल, सादा और तपस्वी था योगाभ्यास के लिये आप में बहुत लग्न थी अतः आप ने जंगल का रास्ता लिया और योगाभ्यास में लग गए।

आप के उपदेश क्रियात्मक होते थे। इन पर ये स्वयं आचरण करते थे। व्यक्तिगत रूप से आप ने कइयों का जीवन बदल दिया। इन मे से एक श्री

वानप्रस्थी हरिराम जी भी थे।

आप ने रियासी जम्मू और कटड़ा में भी कुछ काल एक गुफा में योगाभ्यास मे व्यतीत किया। सम्भवतः जम्मू प्रान्त में वार्तालाप और पत्र व्यवहार से आपके सदुपदेशों का जनता ने पूरा लाभ न उठाया। अलमोड़ा से कैलाश, मानसरोवर यात्रा के समय सन् १९२९ में आप का देहान्त होगया।

श्री सीताराम जी लंगेह—अखनूर निवासी श्री सीताराम जी लंगेह को धर्म प्रचार की लगन ने ही सन्यासी बना दिया। आप अब ग्राम-ग्राम घूम कर वैदिक धर्म का सदेश जनता तक वहुंचाते रहते हैं।

स्वामी नन्दलाल जी गुरु—किश्तवाड़ में आर्य समाज की स्थापना और उस के संचालन में आप का बड़ा हाथ था। इस प्रदेश में वैदिक धर्म के प्रचार और दलितोद्धार में आप सदा संक्रिय रहे।

आप यात्रा पर निकले तो आपने सन्यास ले लिया। धन-सम्पत्ति होते हुए भी आप दीन दशा में मरे। आप अपनी सम्पत्ति स्वीकृति पत्र से आर्य समाज को देना चाहते थे पर अन्त समय में इस विचार को कार्य रूप न दे सके।

जब यात्रा से लौटे तो ऐसी दशा थी कि न पास पैसा था न साधन। अतः जम्मू में वृद्ध आश्रम में प्रविष्ट हुए। यहाँ उनकी इसी वर्ष मृत्यु हो गई है।

बानप्रस्थ मंडल—रियासत में वानप्रस्थ आश्रम में जीवन व्यतीत करने वालों में श्री वानप्रस्थी हरिराम जी, पं० तुलाराम जी, श्री आर्य भिक्षु जी ला० राम दास जी तुली, और श्री प्यारे लाल जी हैं इनका संक्षिप्त परिचय नीचे दिया जाता है।

श्री वानप्रस्थी हरीराम जी—आप का जन्म सन् १८८०-८१ में हुआ। इस समय आप की आयु ९४ वर्ष है। इनके पिता साहूकारी का काम करते थे यह काम आप को पसन्द न था। इन का विवाह छोटी आयु में ही

हो गया था। पत्नी का देहान्त होने पर दूसरे विवाह से दो सप्ताह पूर्व आप घर त्याग कर वैष्णो देवी की गुफा में छुपे रहे। कुछ वर्ष पश्चात् सन १९२७ में आपने वानप्रस्थ ले लिया।

एक बार लाहौर गए/डा०, चिरंजीव लाल भारद्वाज ने एक उर्दू सत्यार्थ प्रकाश भेंट किया। इसे पढ़कर विचार बदल गए। तम्बाकू आदि व्यासनों को त्याग दिया ठाकुरों को नदी में प्रवाहित कर दिया और वैदक धर्म का प्रचार करने लगे।

रियासी आर्य समाज—रियासी में एक मुसलमान फकीर के स्थान को नीलामी में १५० रुपए में खरीद कर इसे पहले 'धर्म शाला-प्याऊ' का नाम दिया गया। बाद में इसे आर्य समाज का नाम दिया गया।

इस पर आप का बहिष्कार किया गया। घर वालों ने भी निकाल दिया इस पर आप भिक्षा माँग कर निर्वाह करते रहे परन्तु आर्य समाज का त्याग न किया।

स्वामी स्वतन्त्रा नन्द जी की अध्यक्षता में शुद्धि यज्ञ में आप ने सक्रिय भाग लिया श्री स्वामी सियाराम जी से संध्या हवन सीखा और जीवन का मार्ग दर्शन पाया ;

आप तीन वर्ष तक गुरुकुल जेहलम के कुलपति रहे। रियासी में आर्य समाज का स्थान वापस लेकर इस का संचालन करने में सहयोग दिया।

नदी तट पर राय बहादुर जोधामल जी द्वारा बनाई गई एक कुटिया में कई वर्ष तक रहे। पं० तुलसीराम जी, ला० अमर नाथ जी और स्वामी शान्तानन्द जी भी वहां कुटियाओं में रहते रहे।

वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर, दयानन्द मठ जालधर तथा विरजानन्द आश्रम गाजिया बाद में भी आप कुछ वर्ष रहे।

अब आप, आर्य समाज कोटली बस्ती, जम्मू में रहते हैं। सदुपदेशों और अपने सात्विक पवित्र जीवन से जनता को मार्ग दर्शन करते रहते हैं।

कई परिवारों पर आपके त्यागमय जीवन का विशेष प्रभाव पड़ा है।

कई सज्जनों को आप ने वानप्रस्थ की दीक्षा देकर वैदिक धर्मानुयायी बनाया है। आपके जीवन दीप से कई जीवन दीपों के प्रकाश पाया है।

श्री रामदास जी तुली (विज्ञान भिक्षु जी)—पहले सनातन धर्म सभा श्रीनगर के मंत्री होते हुए भी आप के विचार आर्य समाज के अनुकूल थे। आपने अपनी सन्तानों को आर्य समाजी संस्थाओं में शिक्षा दिलाई। परिवार आर्य समाजी बना। आप ने वानप्रस्थ ग्रहण करके विज्ञान भिक्षु नाम धारण किया। आप का वानप्रस्थ संस्कार श्री वानप्रस्थी हरिराम जी ने कराया। आप गृह त्याग कर रियासी में रहने लगे। रात को अंधेरे में आप को ऐसी चोट लगी की आप की टांग टूट गई। अतः शेष जीवन आपने प्रायः चारपाई पर वृद्धाश्रम जम्मू में या अपनी सन्तान के साथ अपने घर में ही व्यतीत किया। आप के घर वालों ने आप की पूरी सेवा की।

इस अवस्था में भी आप सदा सन्तुष्ट रहे। इसी वर्ष आपका देहान्त हो गया। वैदिक रीति से आप का दाह संस्कार किया गया।

श्री आर्य भिक्षु जी—आप का पूर्व नाम मोहनलाल नारंग था। आप अखनूर के पास एक ग्राम के निवासी थे। रियासत की सरकारी सेवा में होते हुए भी आप सदा आर्य समाज के सक्रिय सदस्य रहे। अवकाश प्राप्त कर लेने (सेवा निवृत होने) पर आप आर्य कन्या विद्यालय पुरानी मंडी जम्मू में लेखक का काम करते रहे।

पत्नी का देहान्त हो जाने और बच्चों के स्वतन्त्र रूप से कार्य में लग जाने पर आप ने वानप्रस्थ आश्रम में प्रवेश किया। संस्कार श्री वानप्रस्थी हरिराम जी ने करवाया।

आप अब उनके साथ ही कोटली बस्ती आर्य समाज के वानप्रस्थ आश्रम में निवास करते हैं। आप अपना सारा समय स्वाध्याय, गुरु सेवा और आर्य समाज के काम में व्यतीत करते हैं।

आप एक कर्मठ, निःस्पृह व्यक्ति हैं और आर्य समाज के कार्य में विशेष रूचि रखते हैं

श्री महाशय अरुड़ चन्द जी—ला० अरूड़ चन्द जी का जन्म ग्राम चकोड़ी ज़िला गुजरात पाकिस्तान में सन् १८७४ में हुआ था और मृत्यु ८२ वर्ष की आयु में जून १९५६ में जम्मू नगर में हुई। आप का जीवन सत्य पर आरूढ़ था। वे न झूठ बोलते, न घूस लेते और देते थे ओवर-सीयर बन कर समुन्दरी (मिटं घूमरी) में थे कि त्याग पत्र दे दिया क्यों कि घूस के बिना कार्य करना सम्भव न था। आप ने दो वर्ष आचार्य मुक्तिराम जी के साथ रह कर गुरुकुल पोठोहार में तप करते अधिष्टाता के रूप में सेवायें की।

मास्टर लक्षमण दास जी आर्य आप कमालिया निवासी थे आपने साम्बा में भट्ठे का काम लालामूसा और जम्मू में किया। आप दृढ़ आर्य समाजी विचारों के थे जहाँ भी रहे आर्य समाज के काय में सक्रिय रहे आप जम्म आर्य समाज के निर्भाताओं में थे। आप ने आर्य समाज भवन राय बहादुर ला० मक्खन लाल के साथ मिल कर बनवाया। आप कई वर्ष आर्य समाज के प्रधान भी रहे। पुत्रों के अपना कार्य सम्हाल लेने पर कार्य त्याग कर गुरुकुल रावल पं० मुक्तिराम जी के पास चले गए। लकवा हो जाने पर घर लौट आए। वर्षों चारपाई पर पड़े रहे। आप स्वाध्यायरत रहते और क्रोध न करते थे।

आर्य समाज के कार्य कर्त्ताओं का संक्षिप्त परिचय

मीर पुर क्षेत्र—रियासत में मीरपुर क्षेत्र ने कई ऐसे आर्य पुरुषों को जन्म दिया जिन्हों ने आर्य समाज का विस्तार करने में विशेष भाग लिया।

१. पंडित बुद्धदेव जी मीरपुरी—पं० बुद्ध देव जी का जन्म

मीर पुर में न हुआ था, परन्तु आप ने अपने जीवन का बहुत सा भाग इस प्रदेश में व्यतीत किया। अतः आप मीर पुरी के नाम से प्रसिद्ध हो गए।

आप विद्या के भंडार थे। आप को अनेक धर्म ग्रन्थ मौखिक स्मरण थे। अतः कथा, व्याख्यानों द्वारा प्रचार कार्य में आप विशेष प्रभाव उत्पन्न करते थे आपने जीवन भर आर्य समाज का सभा के उपदेशक रूप में और स्वतन्त्र रूप से भी प्रचार किया। अनेक शास्त्रार्थ किए।

हैदराबाद सत्याग्रह के दिनों में आप शोलापुर बाज़ार में प्रतिदिन रात को प्रचार करते रहे। कारावास बद्ध होने पर भी हैदराबाद जेल के अन्दर आप ने भाषाणों व्याख्यानों तथा कथा का क्रम चलता रखा। क्यों कि आप को रामायण, महाभारत आदि इतने स्मरण थे कि पुस्तकों की आवश्यकता ही न थी।

आर्य दर्शनों पर आप की पुस्तक प्रामाणिक मानी जाती है। आपने दर्शनों का अविरोध सिद्ध किया।

अन्तिम दिनों में आप देहली में बस गए एक दिन रेल से वापस आते हुए आप की अचानक मृत्यु हो गई।

२. आचार्य राम देव जी—आप का परिचय संन्यास मडल के वर्णन में आ चुका है। अतः यहाँ पुन. देना अनुपयुक्त जान कर नहीं दिया गया।

३. महाशय जगत राम जी – मीर पुर के ग्रामों में आप वैदिक धर्म तथा शिक्षा का प्रचार करते रहे। जब सन् १९४७ में मीर पुर पर पाकिस्तानी अधिकार हो गया तो आप को अली बेग के शिविर में ले जाया गया। यहीं आपकी निर्दयता से हत्या कर दी गई। और आर्य जाति के शहीदों की पंक्ति में खड़े हो गये।

आप के सुपुत्र महाशय चन्द्र प्रकाश जी मीर पुर के उजड़ जाने के पूर्व ही अफ्रीका चले गए। वहाँ भी आप ने वैदिक धर्म का प्रचार और आर्य

हमाज का कार्य किया। आप वर्षों तक आर्य प्रतिनिधी सभा पूर्वीय अफ्रीका व मंत्री रहे। अनेक आर्य समाजों का सचालन करके सभा की शक्ति बढ़ाई

महाशय जगत राम जी के भानजे श्री विद्यासागर जी भी पूर्वीय अफ्रीका चले गए। आप अफ्रीका के सब से बड़े आर्य समाज नैरोबि आर्य समाज के मंत्री और प्रधान पद पर भी रहे।

इसी प्रकार श्रीमती अमर देवी जी ने भी अफ्रीका आर्य समाज की सेवा की।

श्री महाशय क्षेम चन्द्र जी—जब मीरपुर में आर्य समाजियों का बहिष्कार किया गया तो आप रात के समय उन के घरों पानी भरत रहे। आप जहां भी रहे आर्य समाज की सेवा करते रहे। मीरपुर के पाकिस्तान के अधिकार में आ जाने पर आप बम्बई चले गए। अन्य सहयोगियों से मिल कर आप ने आर्य समाज चैम्बूर का स्थापना की और उस के प्रधान भी रहे।

एक वर्ष आर्य समाज मीरपुर बरुगीनगर प्रधान के रूप में सेवा करते रहे

श्री लाला जगन्नाथ जी वकील तथा श्री ला० ढेरा मल जी वकील

आज से पचास वर्ष पूर्व ऊधमपुर आगए थे। इस नगर में आप को आर्य समाज काम का वर्णन पूर्व हो चुका है।

सन् १९४७ में मीर पुर के कई आर्य परिवार यहाँ आ कर बस गए। इन लोगों ने सभी बाद में आने वालों की यथा शिक्त सहायता की

इस समय श्री विजय कुमार जी ऊधमपुर में आर्य समाज के प्रधान हैं। और ओम प्रकाश जी मन्त्री हैं। श्री वेद प्रकाश जी खन्ना (कोटली वाले) श्री वेद प्रकाश जी बजाज, श्री देवराज जी चौधरी, श्री दीना नाथ जी, श्री ओ३म् प्रकाश जी, श्री विश्व बन्धु जी, श्री सत्य व्रत जी, श्री देश बन्धु जी, श्री हजारी लाल जी, तथा श्रीमती विमला देवी जी, श्रीमती दुलारी देवी जी आदि सभी पुरुष-स्त्रियाँ आर्य समाज के संचालन में पूर्ण योग दान कर रहे हैं।

श्री देवी दास जी खडियाल के सुपुत्रों ने आर्य समाज को अमर बस्ती लाजपत नगर, नई देहली में स्थापना की। वे इस के संचालन में सराहनीय सहयोग दे रहे हैं इन्हों ने बक्शी नगर जम्मू में आर्य समाज की पुनः स्थापना में भी धनादि से सहायता की है।

जम्मू क्षेत्र

लाला दयाल चन्द जी—आप का जन्म स्थान जामकी जिला गजरां वाला था। जम्मू कश्मीर राज्य में आप उप लेखा पाल (Deputy Accountant General) रहे थे। अतः आप जम्मू में ही बस गए आपने सेवा मुक्त होने के बाद का शेष जीवन आर्य समाज के अर्पण किया आर्य समाज हजूरी बाग, आर्य समाज महाराज गंज, आर्य समाज मुहल्ला भानय, कर्ण नगर सब श्रीनगर में और आर्य समाज पुरानी मंडी जम्मू की स्थापना और सचालन में सक्रिय भाग लिया।

दलितों के लिए पाठशालाएं खोलने तथा उन के संचालन में और डी-ए-वी हाई स्कूल महाराज गंज श्रीनगर, जम्मू में अनाथालय: तथा श्री नगर में आयुर्वेदिक औषधालय मुहल्ला भान (कर्ण नगर) में स्थापित करने में आपने पूरी पूरी सहयता की। आप ने और आपकी पुत्री विद्यावती ने आर्य कन्या विद्यालय जम्मू आदि संस्थाओं की तन, मन, धन से सेवा की।

मृत्यु से पूर्व आपने वेद प्रचारार्थ अपनी भूमि दान कर के एक ट्रस्ट स्थापित किया। यह भूमि अब आर्य समाज पुराना मंडी के अधिकार में है।

ला० दयाल चन्द जी के जीवन में उन के सहयोगियों और सहायकों में ला० नरसिंह दास, दीवान अनन्तराम, श्री हरिश्चन्द्र विद्यार्थी, ला० दीनानाथ महाजन वकील, ला० गिरधारी लाल जी प्रोफेसर, प्रिंस ऑफ वेल्स कालिज जम्मू तथा एस. पी. कालिज श्रीनगर, श्री कृष्ण दास जी वैद्य और कई अन्य सज्जन थे।

लाला दीनानाथ जी महाजन वकील—आप का जन्म स्थान मीर पुर था। कार्य क्षेत्र राजौरी और जम्मू रहा। दोनों स्थानों पर आप

आर्य समाजों के प्रधान रूप में वर्षों तक कार्य करते रहे। मुख्य मंत्री गुलाम मुहम्मद के मंत्री मंडल में मंत्री माल पद पर रहते हुए आपने विस्थापितों को बसाने में पर्याप्त कार्य किया जो सराहनीय है आर्य समाज की संस्थाओं डी-ए-वी हाई स्कूल, जम्मू तथा आर्य कन्या विद्यालय, पुरानी मंडी, जम्मू की प्रबन्ध समितियों के प्रधान भी रहे। आप ने आर्य समाज बक्शी नगर जम्मू को आर्थिक सहायता भी की।

अब आप गाँधी नगर जम्मू में निवास करते हैं और अभी तक आर्य समाज की समस्याओं को सुलझाने में सदा उद्यत रहते हैं।

लाला अनन्तराम जी वकील, ला० दीवान चन्द जी वकील, और ला० दीनानाथ जी वर्मा वकील उक्त सभी सज्जन आयु भर आर्य समाज के कार्य में सहायता करते रहे।

ला० दीनानाथ जी वर्मा वर्षों आर्य समाज पुरानी मंडी के मंत्री रहे। ला० दीवान चन्द जी वकील के सुपुत्र ला० बिशन दास जी वकील कठूआ और रणवीर सिंह पुरा में आर्य समाज के प्रचार-प्रसार में सदा सक्रिय रहे।

दालतोद्धार में आप सदा आगे रहे। कठूआ से तो आप को जिला से निकाल दिया गया। आप ने सब कष्ट सहकर भी समाज के कार्य का त्याग न किया।

आप का सुपुत्र महेन्द्र नाथ जी अब भी समाज रणवीर सिंहपुरा का मंत्री है। ला० मेलाराम भाटिया, राय बहादुर ला० मक्खन लाल जी ऐक्ज़ीक्यूटिव इंजीनियर नहर, ला० माणिक चन्द जी गुजराल और उनके सुपुत्र ला० ब्रह्मदत्त जी गुजराल, ला० तुलसी राम जी धवन, मास्टर हुकमचन्द जी, तथा मास्टर रामदत्त जी वर्मा ने आर्य समाज दयानन्द मार्ग जम्मू के निर्माण और संचालन में पर्याप्त सहयोग प्रदान किया है। प्राध्यापक माणिक चन्द जी खोसला जो कि दयानन्द कालिज जालन्धर के प्रिन्सीपल रहे, प्राध्यापक दौलत राम जी अहूजा, ला० गुरां दित्ता मल जी तथा अन्य कई सज्जनों ने जम्मू में आर्य समाज के कार्य को आगे बढ़ाने में पूरा सहयोग दिया। ला० ईश्वरदास जी मलहोत्रा ने राजकीय न्यायालय की सेवा से निवृत्त हो कर

अपना सारा समय आर्य समाज के अर्पण किया। आर्य समाज दयानन्द मार्ग जम्मू और उसकी आर्य कन्या पाठशाला का कार्य और विकास बहुत कुछ आप की सेवा और निष्ठा का ही परिणाम है।

लाला प्रेमनाथ जी चोपड़ा कई बार आर्य समाज के प्रधान रहे। वे तन, मन, धन से सदा समाज सेवा में रत रहे। पुष्कल धन दान से विवेकानन्द पुस्तकालय, औषधालय, डिस्पैंसरी आदि अनेक संस्थाएं आप की सेवा और दानशीलता के प्रतीक रूप चल रही हैं। दोनों आर्य समाजों पुराना मंडी जम्मू और दयानंद मार्ग जम्मू की कन्या पाठशालाओं के भवनों में आपने कई कमरे बनवाए हैं।

श्री पं० अमर चन्द जी, श्री ला० काक राम जी तथा श्री महाशय दयाराम जी भी दयानन्द मार्ग आर्य समाज के काम में सदा योगदान करते रहे हैं। आप के सुपुत्र श्री जयदेव जी वर्मा समाज के प्रधान तथा मंत्री रहे हैं। इन्होंने अपनी माता की स्मृति में आर्य समाज में एक कमरा भी बनवाया। श्री महाशय दयाराम जी के दूसरे सुपुत्र श्री गोपाल जी आर्य मिशन वाले भी आर्य समाज और प्रतिनिधि सभा के संचालन में विशेष रुचि रखते हैं। आप सदा तन, मन, धन से इस काम में लगे रहते हैं।

आर्य समाजों का पुरोहित वर्ग भी वैदिक धर्म के प्रसार में सदा क्रियाशील रहा है। पं० लब्धराम जी शास्त्री, तथा श्री पं० जगदीश चन्द्र जी दर्शनाचार्य आयु भर इस कार्य में जुटे रहे। इस समय पं० योगेन्द्र कुमार जी शास्त्री, पं० देवेन्द्र जी और पं० हरिश्चन्द्र जी शास्त्री आर्य समाजों के पुरोहित के कार्य के साथ-साथ धर्म कथा की शिक्षा, परीक्षा प्रबन्ध तथा आर्य समाज के प्रचार में संलग्न हैं। पं० विद्याभानु शास्त्री जब से आए हैं तब से निरन्तर समाज सेवा में लगे है। आजकल आप जम्मू-कश्मीर राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री पद पर भी विराजमान हैं। आप लगभग छः मास से डी-ए-वी हाई स्कूल के प्रबंधक तथा अध्यापिक का कार्य भी बड़ी योग्यता और लगन से सम्पादित कर रहे है।

आर्य समाज के कर्मठ और निष्ठावान कार्य कर्त्ताओं में श्री ओ३म् प्रकाश खन्ना का विशेष स्थान है। आप जिस भी आर्य समाज में रहे, उसकी

रौनक को बढाया। उसे यज्ञों व्याख्यानों तथा प्रचार में सक्रिय बनाया। आज कल आर्य समाज कोटली बस्ती के निर्माण और सचालन में आप का योग दान सराहनीय है।

ला० रूप चन्द जी व उनके सुपुत्र श्री वेद प्रकाश जी भी आर्य समाज के कार्य में विशेष रूचि रखते है श्री ला० रूप लाल जी कुछ प्रशसनीय कार्य भी किये हैं।

आर्य समाज कठूआ में श्री भगत राम जी तथा उनके सुपुत्रों श्री तेज राम जी व राजेन्द्र नाथ जी का विशिष्ट सहयोग रहा है ठाकुर गोबिन्द सिंह घाटी (ग्राम वासी) आर्य समाज के स्तम्भ थे। दलितोद्धार, राजपूतों में कन्या हत्या निरोध की दशा में आप ने विशेष कार्य किया है। आयु भर बिरादरी द्वारा बहिष्कार का आपने डट कर सामना किया। परन्तु दलितों की सहायता का काम न छोड़ा। आप परम्परागत क्रान्तिकारी थे। आप के दादा ठाकुर टहल सिंह मुलतान में मूलराज के साथ थे। पठान कोट के प्रदेश में अंग्रेजों का विरोध करने पर ही उनकी जागीर जब्त की गई थी। ठाकुर गोबिन्द सिंह सैंतीसवी डोगरा से इस लिए निकाले गए कि आप जेहलम आर्य समाज मे सम्बन्ध रखते थे इसी भावना से आप को A S. P. C I. D) ऐसिस्टैंट सुपरिटैंडेंट पोलिस के पद मे बंगाल में त्याग पत्र देना पड़ा महाराजा हरिसिंह से भी पूर्व आप ने यह घोषित कर के कि आप की अस्थियाँ और राख गगा में न बहाकर ग्राम के दलितों के खेतों में डाली जावें एक अभूत पूर्व उदाहरण स्थापित किया था।

वकील लाला रूप लाल जी पुंछ में थे, अब कठूआ में आर्य समाज का कार्य करते रहे। आप अब कोटली बस्ती जम्मू में कार्य करते हैं।

भिम्बर आर्य समाज की स्थापना तथा सचालन में श्री जट्टू मल जी ने विशेष कार्य किया। आप का एक पुत्र श्री राज कुमार इस समय आर्य समाज कठूआ का प्रधान है और दूसरा पुत्र श्री सुदेश कुमार आर्य समाज दयानन्द मार्ग जम्मू का मंत्री है।

आर्य समाज राजौरी के निर्माण तथा संचालन मे सहयोग देने वालों का

वर्णन पूर्व किया जा चुका है। इन में लाला फकीर चन्द जी प्रार्थना पत्र लेखक का जीवन और कार्य विशेष महत्व-पूर्ण था।

लाला मोहन लाल जी मोत्याल आर्य समाज के रत्न हैं इन का जन्म राजौरी में हुआ था। बाल्य काल से ही आर्य समाज से सम्पर्क हो गया। आप सदा आर्य समाज के संगठन और प्रचार प्रसार में सहयोग देते रहे। जम्मू में दयानन्द सालवेशन मिशन के शाखा मंत्री रहे। बाल्मीकी समाधि के पुनरूद्धार के सम्बन्ध में ईसाइयों के साथ झगड़े में आर्य सभा के संचालन का श्रेय भी आप को है। इस समय भी आप कार्य शील है। आप की सेवाएं बहुमुखी हैं। कई संस्थाओं के साथ आप का सहयोग और सम्बन्ध है।

महाशय नाहर सिंह जी म० शंकर दास जी, म० जमना दास जी व श्री देवा दास जी आदि ने जाति सुधार कार्य और समाज सेवा में भरपूर योग दान दिया है। महाशय छज्जू राम जी युवावस्था से ही आर्य समाज के सेवा कार्य में व्यस्त हैं। एक समय आप राज्य की मन्त्री परिषद में भी रहे। मेघ जाती में सुधार कार्य के फल स्वरूप आर्य समाज को अनेक उत्साही कार्य कर्त्ता उपलब्ध हुए इन में मास्टर राम रक्खा जी विधान सभा के सदस्य (M. L. A.) रहे। आप कई वर्ष पुरानी मंडी आर्य समाज के प्रधान भी रहे। श्री जगत राम जी आर्यन किश्तवाड़ में आर्य समाज के सक्रिय कार्य कर्त्ता रहे। आप वर्षों तक विधान सभा के सदस्य रहे।

श्री दौलत राम जी, B. A. LL. B. B. T को लाला माणिक चन्द जी ने अपनी सन्तान की भान्ति शिक्षा में सहायता दी आप जहां भी रहे, आर्य समाज की सेवा करते रहे। इस समय भी आप कन्या पाठशाला कच्ची छावनी जम्मू में सहायक प्रबन्ध कर्त्ता और शिक्षक हैं।

इस प्रकार जम्मू प्रान्त में आर्य समाज की ज्योति और उसे निरन्तर प्रज्वलित रखने में अनेक सज्जनों और देवियों ने यथा शक्ति अवसर और साधन सहयोग दिया है और दे रहे हैं।

कश्मीर प्रान्त में वैदिक धर्म प्रचार के कार्य में सहयोग देने वालों का वर्णन यथा स्थान पूर्व आ गया है तो भी कुछ विशेष व्यक्तियों का स्मरण करना अनुपयुक्त न होगा।

लाला चिरंजीव लाल तथा उनका परिवार, श्री जयदेव जी तथा कुछ अन्य सदस्य आर्य समाज की सेवा में सदा सन्लग्न रहें हैं। डा० कुलभूषण जी तथा उन की पत्नी श्री मती लज्जावन्ती जी आजीवन समाज सेवा में निरत रहे। बाबा बलवन्त सिंह जी, श्री जीवन लाल जी मदन, उनके सुपुत्र श्री योगेन्द्र पाल जी, श्री बिहारी लाल जी बत्रा, स्व० दीवान बस्ती राम तथा अन्य कई पंजाबी सज्जन आर्य समाज के निर्माण और संचालन में सदा सक्रिय रहे हैं।

श्री प० नेत्रपाल जी पुरोहित आर्य समाज हजूरी बाग आर्य समाज के सभी कार्यों में अग्रसर हैं। शुद्धि कार्य, संगठन, प्रचार तथा आर्य समाज की अन्य सभी गति विधियों में आप का हाथ है।

पं० राम चन्द्र जी अभय का सारा जीवन ही आर्य समाज की सेवा में लगा रहा है। काश्मीरी पंडित समाज में सुधार कार्य, आर्य समाज का प्रचार तथा लद्दाख और पोगल परिस्तान में भी आपने आर्य समाज का कार्य किया है। लकवा से रोगी होते हुए भी आपकी लेखनी आर्य समाज के प्रचार में लगी रहती है।

प० दीना नाथ जी कौल ने आर्य समाज के प्रचार तथा शिक्षा कार्य में विशेष योग दिया हैं।

प० कश्यप बन्धु शास्त्री का कश्मीरी पंडितों की जागृति में विशेष योगदान रहा है इस समय श्री रवि कुमार गंजू, श्री ओंकार नाथ शास्त्री, श्री राम कृष्ण जी, (आशमू ग्राम), श्री जानकी जी विद्यार्थी, श्री ऐन ऐम हांडू मुख्याध्यापक मग्घर मल बाग डा- ए वी हाई स्कूल, श्रीनगर तथा उनके कई सहयोगी काश्मीरी पंडित समाज के नव निर्माण में लगे हैं।

श्री ओमप्रकाश सेठी, श्री अमोलक राम सेठी तथा उनके परिवार, श्री जे-बी नन्दा तथा उनका परिवार, श्री तीर्थ राम जी, श्री सतीश चन्द्र जी आदि का आर्य समाज व उसकी शिक्षा संस्थाओं को पूर्ण सहयोग प्राप्त है।

श्री अमर नाथ रायना Advocate General ऐडवोकेट जनरल और भूतपूर्व न्यायधीस जे-एन-भाट भी शिक्षा प्रबन्धक सभा के सदस्य हैं और सदा

मार्ग दर्शन करते रहते हैं।

आर्य समाजी परिवारों, कार्य कर्त्ताओं की संख्या इस समय भी उत्साहवर्धक है। आर्य समाज के बाहर हिन्दू समाज तथा अन्य समाजों पर भी आर्य समाज के संगठन, कार्य तत्परता तथा विचारों का पर्याप्त प्रभाव है और यह दिन दिन विस्तृत हो रहा है। अतः यह विश्वास के साथ कहा जा सकता है कि जम्मू काश्मीर रजय में आर्य समाज का भविष्य उज्जवल है।

महात्मा रघवीर चन्द जी—श्री रघुवीर चन्द जी तहसीलदार एक सौमय स्वभाव निष्टावान उदार चरित्र के व्यक्ति थे। आप भवन जिला जेहलम के रहने वाले थे और युवा अवस्था में रयास्त में जाके मुलाजम हुए स्व. महाराज प्रताप सिंह हर वर्ष गर्मियों में कश्मीर जाते समय इनको साथ रखा करते थे जब महता जी के नाम से प्रसिद्ध थे। स्व महाराज इनपर हृदय से विश्वास करते और प्यार से कहा करते यह उपदेशक तहसीलदार हैं। आप कई वर्ष निरन्तर आर्य समाज दयानन्द मार्ग के प्रधान रहे। महात्मा अरूड चन्द्र व महात्मा हरीराम जी वाण प्रस्थी इन के प्रिय मित्र थे रिटायर होने के पश्चश्त दीवाननी विद्यावती जी ने अपनी जागीर में तहसीलदार के रूप में सेवाएं लीं उनसे प्रेम पूर्व वर्ताव करते थे। उसके पश्चात रयास्त छोड़ कर दो वर्ष गुरुकुल पोटोहार में बताये और गुरुकुल धाम जेहलम रहे। जम्मू छोड़कर जब वह वहमोई राह बहादुर विक्रमा जीत सिंह मालक राजा काटन मिलज के बुलाने पर चले गये और विभाजन के बाद आव निवास स्थान बना लिया।

— — —

आँठवाँ अध्याय

आर्य प्रति निधि सभा जम्मू काश्मीर राज्य का संगठन और कार्य

प्रस्तावना - जम्मू - कश्मीर राज्य सन् १९४७ तक एक रियासत थी अत; यहाँ स्वतन्त्र आर्य प्रतिनिधि सभा बनाने का प्रश्न कभी उत्पन्न न हुआ था। आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब तथा आर्य प्रादेशिक सभा पंजाब सिंध, बलोचिस्तान, लाहौर ही इस राज्य को अपने क्षेत्र में सयभती थीं। अत: वही प्रचार तथा आर्य समाजों की स्थापना व संचालन वा प्रबन्ध करती थीं। रियासत में प्राय. आर्य समाजें इन्हीं दो में से किसी एक से सम्बन्धित थीं।

परन्तु समय बीतने के साथ सिथति बदली और कुछ ऐसे कारण उत्पन्न हों गए जिन से यह सभाएं उचित रूप से कार्य करने में असमर्थ हो गई। महाराजा हरिसिंह के समय में यहाँ 'रयासत निवासी' का नियम लागू था इस से राज्य के बाहर के व्यक्तिों के लिए राजकीय सेवा, भूमि क्रय करना आदि बन्द हो गया राज कर्मचारी जो पंजाब के थे प्राय वापस चले गए। इस से आर्य समाज के काम को धक्का लगा।

आर्य समाजों की लाखों रूपयों की सम्पत्ति की रक्षा का प्रश्न भी सामने आया। यह राज्य से बाहर की किसी सभा के नाम न हो सकती थी। अत: आवश्यकता प्रतीत हुई कि इस समस्या को सुलझाने के लिए राज्य की अपनी आर्य प्रतिनिधि सभा बने। सन १९४७ के देश विभाजन के साथ पंजाब की आर्य प्रतिनिधि सभाए लाहौर त्याग कर स्वयं वित्थापित हो गई आर्य समाज के कार्य में भी शिथिलता आगई। इस अवस्था में इस पर्वतीय भाग की सुधि

लेना उनके लिए सर्वथा असम्भव हो गया। इस राज्य में पंजाब से आने के दो ही मार्ग थे। रावलपिंडी, श्रीनगर और स्यालकोट जम्मू रेल व सड़क मार्ग विभाजन से दोनों मार्ग पाकिस्तान के क्षेत्र में आ गए। डाक तार का सम्बन्ध भी पाकिस्तान के अधीन हो गया अतः इस रियासत का सम्बन्ध इन प्रतिनिधि सभाओं से कट गया।

जब रियासत में राजा का राज्य समाप्त होकर प्रजा तन्त्र स्थापित हुआ तो भारतीय विधान की धारा ३७० के अधीन इस का सम्बन्ध भारत केन्द्र शासन से हुआ तो आर्य समाजों की स्थिति और भी अनिश्चित हो गई

इस पर पाकिस्तान के साथ युद्ध का क्रम चलता रहा सन् १९६५ और सन् १९७१ के युद्धों में इस ने भयानक रूप धारण कर लिया परिणाम स्वरूप आर्य समाजों की स्थिति सर्वथा संदिग्ध हो गई। ग्रामो को आर्य समाजें तो प्रायः निष्क्रिय (बन्द) हो गई। नगरों में भी कुछ मृत प्राय हो गईं और जो सक्रिय रहीं वे भी अपना पुराना वैभव भूलने लगीं।

आर्य समाजों के संगठन का प्रयत्न

आर्य सभा—आर्य समाज के शुभचिन्तकों के लिए यह स्थिति विशेष चिन्ता का कारण थी। इसे सुधारने के लिए कुछ सज्जनों ने एक सभा का संगठन किया और इसका नाम 'आर्य सभा' रखा। श्री मोहन लाल मोत्याल तथा उन के कई सहयोगियों ने रियासत की सभी आर्य समाजों को एक सूत्र में पिरोना और वैदिक धर्म का प्रचार कर के मृत और मृतप्राय आर्य समाजों का जीर्णोद्धार करना इस सभा का उद्देश्य निश्चित किया।

बहुत सी आर्य समाजों के पदाधिकारी इस संगठन के सदस्य थे, परन्तु कुछ प्रमुख आर्य समाजों के पदाधिकारी इस सभा को आर्य प्रतिनिधि सभा और प्रादेशिक सभा का प्रतिद्वन्द्वी समझने लगे। अतः यह बेल मंडे न चढ़ी।

आर्य प्रतिनिधि सभा का आरम्भ—समय के साथ जागृति

आई। कुछ नए कार्य कर्त्ता आए। कुछ संस्थाओं ने उन्नति की तो पुनः यह विचार प्रबल हुआ कि इस राज्य का पृथक आर्य समाज का संगठन बनाया जाए।

अब यह राज्य रियासत न रह कर भारत का एक प्रान्त बन गया था और आर्य समाज के उपनियमों में ४५ वाँ उपनियम है कि: प्रत्येक प्रान्त में एक मुख्य सभा होगी, जिसका नाम 'आर्य प्रतिनिधि सभा' होगा। सब आर्य समाजों की व्यवस्था उसी के अधीन तथा नियन्त्रण में होगी। यह सभा अपने नियमादि स्वयं बनाएगी।"

इस धारा के अनुसार तथा इस प्रान्त की विशेष परिस्थितियों को ध्यान में रख कर 'जम्मू-सरकार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा की स्थापना का विचार विकसित हुआ।

आर्य सम्मेलन—सर्व प्रथम इस कार्य के लिये श्री योगेन्द्र शास्त्री जी आगे आये इन्होंने सभी समाजों को एक सूत्र में बाँधने का निश्चय किया वे इस संगठन के संयोजक बने। श्रीनगर में सभा निर्माण का वातावरण बनाने में नेत्रपाल शास्त्री जी तथा श्री चन्द्र प्रकाश जी ने पूर्व सहयोग दिया।

सन् १९६७ में श्री योगेन्द्र शास्त्री जी ने आर्य समाज दयानन्द मार्ग जम्मू में इस कार्य के लिए एक आर्य सम्मेलन का आयोजन किया। इस में प्राय आर्य समाजों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इस सम्मेलन में सर्व सम्मति से निश्चय किया गया कि प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा का गठन किया जाए। इस के लिए प्रायः सभी आर्य समाजों ने विधिवत् अपने अपने प्रतिनिधि चुने।

आर्य प्रतिनिधि सभा का गठन—बस मार्च सन् १९६८ को आर्य समाजों द्वारा प्रतिनिधियों का एक अधिवेशन आर्य समाज दयानन्द मार्ग में हुआ। श्री पं० नेत्रपाल जी उसके अध्यक्ष थे। इस में सभा के पदाधिकारियों का निर्वाचन हुआ और निम्नलिखित पदाधिकारी चुने गए।

प्रधान.- श्री मुल्क राज जी गुप्ता

उप प्रधान:- ,, रूपलाल जी ऐडवोकेट

उपप्रधान	,, डा० जानकी नाथ जिज्ञासु,
मंत्री	,, योगेन्द्र कुमार जी शास्त्री, एम ए.
उप मन्त्री	,, सुरेश कुमार जी, एम. ए
उप मन्त्री	,, चन्द्र प्रकाश जी, बी. ए. ऐल. ऐल. बी
कोषाध्यक्ष	,, ओम प्रकाश जी,
पुस्तकाध्यक्ष	,, सुदेश कुमार जी,
पुस्तकाध्यक्ष	,, डा० मदन मोहन जी।

अन्तरंग सदस्य—श्री कृष्ण लाल जी श्री जय देव जी, प्रो० शम्भूनाथ डा० वेद कुमारी जी, पं० तीर्थराम जी, श्री विद्याभानु जी।

सभा के पास अर्थाभाव था। विधिवत् दशांश का आना समय का प्रश्न था। धन के बिना कार्य सम्पादन असम्भव था। अतः तत्काल धन-संग्रहार्थ प्रयत्न किया गया और निम्नलिखित दान प्राप्त हुआ।

	रुपये	पैसे
१. आर्य समाज दयानन्द मार्ग, जम्मू	१००१	००
२. ,, ,, पुरानी मंडी,	१००१	००
३. ,, ,, हजूरी बाग श्रीनगर	१००१	००
४. ,, ,, कोटली बस्ती, जम्मू	३००	००
५. ,, ,, मीरपुर बस्ती जम्मू	१०१	००
६. ,, ,, रणवीर सिंह पुरा	२००	००
७. ,, ,, कठुआ	२००	००
८. श्री मुल्क राज जी गुप्ता	२००	००
९. आर्य समाज रैणावाड़ी श्रीनगर	२००	००
सर्व योग	४२०४	००

प्रचार कार्य—सभा के शुभ संगठन से आर्यों में उत्साह बढ़ा। प्रचार कार्य हाथ में लिया गया। श्री पं० विद्याभानु जी ने अपना ग्रीष्मावकाश का

समय सभा को दिया। सभा मन्त्री जी तथा कुछ अन्य सज्जनों ने बड़ी लगन से प्रचार कार्य किया। श्री पं० दयानन्द जी ऐम. ए. उपदेशक और श्री विद्याभूषण तथा बोधराज की भजन मण्डली नियुक्त हुई।

काश्मीर प्रान्त– श्रीनगर में आर्य समाजों के उत्सव निरन्तर एक मास तक होते रहे। श्री पोरोन्द्र कुमार जी शास्त्री तथा श्री विद्याभानु शास्त्री जी ने वहां के लिए अपना ग्रीष्माअवकाश प्रचार में लगाया इन में अन्य विद्वानों के अतिरिक्त श्री डा० मदन मोहन जी श्री श्याम सुन्दर दास जी वैद्य श्री डा० जानकी नाथ जी जिज्ञासु, तथा श्री चन्द्र प्रकाश जी तथा श्री नेत्र पाल जी शास्त्री ने सभी प्रकार से सहयोग दिया।

जम्मू प्रान्त में– ऊधमपुर, राजौरी, पुंछ, राम नगर, नौशहरा साम्बा, अखनूर, रणवीर सिंह पुरा, कठूआ आदि नगरों और उपनगरों में और बरेड़ी, काँगड़ी, भजनवां, दींडे केलाँ, रंगपुर, चौहला आदि ग्रामों में भी प्रचार किया गया और इस से कुछ जन-जागृति उत्पन्न हुई

पंजीकरण - सभा को स्थायी वैधानिक रूप देने के लिए इसका विधिवत् पजीकरण (Registration) करवाया गया जिस से आर्य समाजों की सम्पत्ति इसके नाम करके उसे सुरक्षित किया जा सके।

सभा के वार्षिक अधिवेशन—सभा का वार्षिक अधिवेशन २१, २२, और २३ अप्रैल सन् १९७२ को मनाया गया। इस में पहले दिन एक विशाल शोभा यात्रा निकाली गई। इसमें आर्य समाजों तथा आर्य समाज की संस्थाओं ने भाग ले कर इस की शोभा तथा प्रभाव को बढ़ाया श्री राम गोपाल शाल वाले मन्त्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधी सभा दिल्ली ने सभा का विधिवत उद्घाटन किया।

सभा का विधान

उद्देशय विधान के नियम और उपनियम

सन् १९६७ में सभा के नियम और उपनियम विधिवत् साधारण सभा ने स्वीकार किए। इस प्रकार इसके वार्षिक अधिवेशन नियमित रूप से होते रहे।

पदाधिकारी वर्ग—प्रथम तीन वर्ष तो सभा के पदाधिकारियों में कोई विशेष परिवर्त्तन न हुआ। प्रधान और मन्त्री विधिवत् सर्व सम्मति से निर्वाचित हो कर वहीं बने रहे।

सन् १९७१-७२ के चुनावों में श्री मोहन लाल जी मोतेयाल को प्रधान चुना गया। मन्त्री पूववत् श्री योगेन्द्र कुमार जी शास्त्री ही रहें। सभा में तीन वैतनिक न प्रचारक भी बने रहे।

सन १९७२-७ के निर्वाचन में प्रधान पद श्रीमती विद्यावती जी को दिया गया और मंत्री पद श्री चन्द्र प्रकाश जी ने सम्हाला।

आगामी चुनावों में सब सम्मति से श्री स्वामी सत्यानन्द जी प्रधान श्री विद्याभानु जी मन्त्री तथा श्री चन्द्र प्रकाश जी कोषाध्यक्ष निर्वाचित हुए।

सभा का कार्य—जम्मू विश्व विद्यालय की पत्रिका ने एक काश्मीरी पडिता देवी द्वारा लिखे लेख कि 'वेदों में' गो माँस खाने का विधान हैं और कि प्राचीन आर्य लोग गोमांस भक्षक थे' प्रकाशित हुआ।

१. सभा मन्त्री ने इस पर रोष प्रकट किया। लेखिका को शस्त्रार्थ की चनौती दी। विश्व विद्यालय के कुलपति, उप कुलपति तथा अन्य अधिकारियों को बताया कि इस लेख स हिन्दू जनता को कितना कष्ट हुआ हैं और इस के विरुद्ध जनता में कितना क्षोभ हैं।

इस पर यह लेख पत्रिका से काट दिया गया और भविष्य में इस प्रकार के दोष पूर्ण लेख प्रकाशित न करने का आश्वासन प्राप्त किया गया।

२. इसी प्रकार इसी विश्व विद्यालय द्वारा लिखित इतिहास की एक पुस्तक में जो विश्व विद्यालय में पढ़ाई जाती है श्री स्वामी दयानन्द जी महाराज के सम्बन्ध में कुछ निराधार आरोप लगाए थे। इस पर आर्य समाजों

ने विरोध प्रस्ताव पारित किए। सभा ने सारा कांड अपने हाथ में लिया अन्त में लेखक ने अपने दुष्कृत्य के लिए क्षमा याचना की और जो पुस्तकें प्रकाशक के पास थीं उन में से यह लेख निकाल दिया गया।

३, श्री मती प्रधाना विद्यावती जी और श्री योगेन्द्र कुमार शास्त्री की प्रेरणा से श्री मती - माता दयावन्ती जी ने अपना निजी मकान सभा को प्रदान करने का स्वीकार पत्र लिख दिया। यह मकान जम्मू में है।

४. उपदेशक प्रचारक भजनीक—आर्य समाजों में जीवन संचार करने तथा प्रचार के लिए सभा के पास अधिक वैतनिक प्रचारकों का होना आवश्यक है, जिस मे प्रचार कार्य सारा वर्ष चल सके। इस के लिए पर्याप्त धन होना अनिवार्य है। जैसे जैसे यह साधन उपलब्ध होता रहा सभा वैतनिक प्रचारकों की व्यवस्था करती रही।

निम्नलिखित व्यक्तियों ने सवेतन सेवा की:-

१. श्री बलबीर जी शास्त्री, २. श्री ऋषि पाल जी. ३. श्री बोध राज ज श्री दयानन्द जी ऐम. ए ५ श्री राजेन्द्र कुमार जी।

आवश्यकता-नुसार कुछ अन्य उपदेशकों तथा भजनीकों को भी प्रचारार्थ बाहर से बुलाया जाता रहा। श्री महाशय आशा नन्द जी, श्री पं० वेगराज जी आदि का योगदान भी लिया गया।

इनके अतिरिक्त कुछ अवैतनिक प्रचारक, उपदेशक भी इस कार्य में यथा सम्भव सहयोग देते रहे यथा

१. श्री योगेन्द्र कुमार जी शास्त्री ऐम-ए. २ श्री प० हरिश्चन्द्र जी शास्त्री श्री प० नेत्रपाल जी, ४. श्री पं विद्याभानु जी, ५. श्री पं० देवेन्द्र जी शास्त्री, श्री स्वामी सत्यानन्द जी महाराज, ७. श्री स्वामी सुकर्मानन्द जी महाराज, ८ श्री मती डा० वेद कुमार जी, १० श्री डा० राम प्रताप जी, ११. श्री लम्बोदर जी गिग्गू. १२. श्री वानप्रस्थी हरीराम जी, १३. श्री डा० जनक कुमारी जी, १४. श्री हरिश्चन्द्र जी विद्यार्थी।

वेद प्रचार विभाग की स्थापना—सभा का प्रमुख कार्य वेद प्रचार हैं इस पर अधिक ध्यान देने के लिए एक पृथक विभाग की स्थापना की गई। इसका अध्यक्ष श्री नेत्र पाल जी शास्त्री को नियत किया गया।

धर्म शिक्षा की परिक्षाएं- पाठशालाओं तथा विद्यालों में विद्यार्थियों को वैदिक धर्म का आरम्भिक ज्ञान देने तथा उन में धर्म संबंधी रुचि जागृत करने के लिए सभा ने धार्मिक परीक्षाओं का आयोजन किया। योजना-नुसार पुस्तकें नियत की गईं। वार्षिक परीक्षाओं के पश्चात् सफल विद्यार्थितियों को प्रमाण पत्र तथा पारितोषिक देने की व्यवस्था की गई।

इस में श्री ला० ईश्वर दास व श्री पं० हरिश्चन्द्र जी बड़ी तत्परता से कार्य कर रहे हैं। इस कार्य को वह बड़ी योग्यता और पूर्ण व्यवस्था से सम्पादित कर रहे हैं। प्रति वर्ष सहस्त्रों बालक-बालिकाएं परीक्षाएं देते हैं।

प्रचार विस्तार और उत्सव—आर्य समाजों के वार्षिकोत्सव सप्ताहों तथा अन्य यज्ञों-पर्वों का आयोजन तथा आर्य समाजों में समय-समय पर प्रचार और साप्ताहिक व दैनिक सत्संगों में उपदेशों तथा विशेष सम्मेलन आदि कार्य क्रमों से वेद प्रचार कार्य का बिस्तार करने में भी सभा ने यथा शक्ति और यथा साधन प्रयत्न किया है।

१. श्री नगर की सभी आर्य समाजों के वार्षिकोत्सव तथा वेद सप्ताहों का आयोजन स्नातकों अधिकारियों विद्वानों तथा अन्य समाजों के उपदेशकों की सहायता से प्रतिवर्ष धूम-धाम से मनाए जाते रहे हैं।

२. जम्मू नगर की सभी आर्य समाजों में भी वेद सप्ताह तथा वर्ष दिवसों पर समारोहों का आयोजन होता है। सभा के कर्त्ता और उपदेशक भी इन में भाग लेते रहे हैं।

३ उपनगरों तथा ग्रामों को आर्य समाजों में विशेष प्रचार की भी व्यावस्था की जाती रही है। यथा—आर्य समाज कठूआ, साम्बा, हीरानगर, रणवीर सिंह पुरा, ढोडे कलाँ, चिकरोही, बिषनाह, चौहाला आदि।

अखनूर, नौशहारा, सुन्दरबनी, काँगड़ी भजनवां, राजौरी, पुंछ, ऊधमपुर, रामनगर रामबन, तथा अन्य कई ग्रामों में भी सभा के उपदेशक समय-समय पर प्रचार कार्य करते रहे हैं।

भद्रवाह, रियासी, डोडा, किश्तवाड़ आदि स्थानों पर भी प्रचार किया गया।

प्रान्तीय आर्य महा सम्मेलन २१, २२ २३ अप्रेल सन १९७२ में सभा ने एक आर्य सम्मेलन का आयोजन किया एक विशाल शोभा यात्रा निकाली गई इस में आर्य संस्थाओं के बालक-बालिकाओं, आर्य समाजों के सदस्यों और भजन मडलियों ने भाग लिया।